दूरदृष्टि • नैतिक मूल्य • बुलन्द आवाज़

₹ 35

दी कोर

वर्ष 1 ▪ अंक 1 (प्रवेशांक) ▪ अप्रैल, 2016 ▪ विक्रम संवत् 2073

वर्ष प्रतिपदा

सृष्टि के प्रथम प्रभात का पर्व

द्यौः पृथिवीपवनाम्बुवह्निगगनं सर्वत्र शान्तिर्भवेत् ।
युद्धोन्मादविहीन विश्वरचनां कुर्वन्तु वैज्ञानिकाः ॥
ऋद्धिर्वर्षतु रोगभीतिरहिता नन्दन्तु लोकाः सदा ।
नव्याऽयं वितनोतु जीवनसुखं संवत्सरो वैक्रमः ॥

नक्षत्रलोक, पृथिवी, जल, वायु, अग्नि एवं गगन सर्वत्र शान्ति व्याप्त हो; वैज्ञानिक युद्धोन्मादरहित विश्व की रचना करें, सदा ऋद्धि की वर्षा हो, प्राणी रोग एवं भय से रहित होकर आनन्दित हों; यह नया विक्रम संवत् जीवन में सुख का संचार करे।

चैत्र शुक्ल (वर्ष) प्रतिपदा, शुक्रवार, सौम्य संवत्सर,

कल्पाब्द 197२949118, सृष्टि संवत् 1955885116,
युधिष्ठिर संवत् 5154, कलियुगाब्द 5118,
विक्रम संवत् २073, शालिवाहन संवत् 1938
(इस वर्ष 08 अप्रैल, २016 ई.)

की हार्दिक शुभकामनाएँ !

अभिषेक भटनागर

दी कोर

दूरदृष्टि ▪ नैतिक मूल्य ▪ बुलन्द आवाज़

वर्ष 1, अंक 1 (प्रवेशांक), अप्रैल 2016, विक्रम संवत् 2073

पत्र-व्यवहार का पता :

दी कोर, सी-15, फ्लैटेड फैक्ट्री कॉम्प्लेक्स, रानी झाँसी रोड, झण्डेवाला माता मन्दिर के पास, झण्डेवालान, नयी दिल्ली-110 055

दूरभाष : 9899256433, 9654669293

ई-मेल : editor.thecore@gmail.com

मुद्रक, प्रकाशक और स्वामी प्रमोद कौशिक, सी-15, एफ.एफ. कॉम्प्लेक्स, देशबंधु गुप्त मार्ग, झण्डेवालान, नयी दिल्ली-110 055 से प्रकाशित एवं एम.के. प्रिंटर्स, 5516/5, न्यू चन्द्रवाल, जवाहर नगर, नयी दिल्ली-110 007 से मुद्रित। संपादक : प्रमोद कौशिक।

अपने अमुल्य सुझाव देने हेतु : editor.thecore@gmail.com

भारत : एक आत्ममंथन

भारत विश्व का सर्वप्राचीन राष्ट्र है। इस राष्ट्र की अपनी एक विशिष्ट संस्कृति है जो सम्पूर्ण विश्व के कल्याण की बात करती है। **सा प्रथमा सँस्कृतिर्विश्ववारा** (शुक्लयजुर्वेद, 7.14) अर्थात् सारे विश्व द्वारा सर्वप्रथम ग्रहण की गई यही सर्वोत्कृष्ट (भारतीय) संस्कृति है। जिस प्रकार इस देश ने कभी किसी मत-सम्प्रदाय का दमन किए बिना उनको अपने गर्भ में पलने-विकसित होने दिया, बिना किसी भाषा की गरिमा घटाए सबको विकसित होने का अवसर दिया, विविधता में भी एकता दर्शानेवाली एक अद्भुत सामाजिक संस्कृति विकसित की, उसी प्रकार आज संसार के विभिन्न मत-मतांतरों, नस्लों-जातियों, विचारणाओं, भाषाओंवाले सभी राष्ट्रों के मध्य एक सोऽहम् क्रान्ति यह राष्ट्र संपन्न करने में सक्षम है। गुस्से व तनाव से भरे विश्वमानव को शान्ति का संदेश देने की सामर्थ्य भारतीय संस्कृति में है, जो सहिष्णु है, उदार है, मानवतावादी है तथा पूर्णतः आध्यात्मिक है।

तथापि आज देश के तथाकथित बुद्धिजीवी वर्ग की दृष्टि में भारतीय संस्कृति असहिष्णु है। 'वन्दे मातरम्' और 'भारतमाता की जय'- जैसे उद्घोषों को साम्प्रदायिकता की कसौटी पर कसा जा रहा है। गोमाता, गीतामाता और गंगामाता को पहले से ही साम्प्रदायिक माना जा चुका है। विगत हज़ार वर्षों के पारतंत्र्य काल में इस देश का तेजोभंग करने का प्रयास कम नहीं हुआ है। इस्लामी शासनकाल में यहाँ के ज्ञान-भण्डार को जलाकर नष्ट किया गया तो यूरोपीय शासनकाल में यहाँ से बड़ी मात्रा में संस्कृत-ग्रंथ यूरोप ले जाए गये। इसके साथ ही पाश्चात्य विद्वानों की एक बड़ी शृंखला ने अपनी पुस्तकों में भारतीय जनसमाज के बारे में भ्रान्तियाँ पैदा कर दीं। यहाँ की संस्कृति को हीन से हीनतर दिखाकर भारतीय मानस को कुण्ठित करने का भरसक प्रयत्न किया गया। भारतीय संस्कृति के वैशिष्ट्य पर पर्दा डाला गया और ऐसा प्रयत्न किया गया कि जिससे चिन्तन-परम्परा, संस्कृति, ज्ञान-विज्ञान, क्रीड़ा आदि के क्षेत्र में अतीत में संसार को भारत ने जो कुछ विशिष्ट अवदान दिया था, वह उजागर न हो सके। स्वातंत्र्योत्तर भारत में भी दीर्घकाल तक यही प्रयत्न हुआ है।

वर्तमान बाज़ारवाद के दुष्प्रभावों से आज हर कोई प्रभावित है। इसी का परिणाम है कि आज अपनी सामाजिक व्यवस्था को विदेश में तैयार ढाँचे में ढालने की भरसक क़ोशिश की जा रही है। शिक्षा-पद्धति, जीवनशैली, वेश-भूषा, खेल-कूद, आचार-विचार, राजनीतिक-सामाजिक-आर्थिक– सभी क्षेत्रों में हम पाश्चात्य शैली को आत्मसात करके अभिभूत हुए जा रहे हैं और जाने-अनजाने 'राष्ट्रीय स्व' की अवहेलना कर रहे हैं।

अस्तु! हिंदी की मासिक पत्रिका **'दी कोर'** का प्रवेशांक आपके हाथों में है। 'दी कोर' अर्थात् क्रोड़ यानि भारत के हृदय का स्पन्दन, भारत-भारतीयता की गूँज। इसमें पन्ने-पन्ने पर होगा भारत का हर वह वैशिष्ट्य, जो भारत के क्रोड़ में कहीं दबा है या जिसे अतीत में योजनाबद्ध ढंग से दबा दिया गया है। 'दी कोर' में होगी सभी आयु वर्ग के लोगों के लिए हर वह सामग्री, जो भारत-भारतीयता को स्पर्श करेगी। 'दी कोर' में होंगे देश के यशस्वी महापुरुष, देश का गौरवशाली अतीत, देश की परम्परा, देश के त्योहार, देश का जायका, देश का परिधान, देश का खेल, यहाँ तक कि देश में कहीं कुछ अनूठा, कहीं कुछ भव्य, कहीं कुछ सार्थक– सब कुछ देश के रंग से सराबोर।

आज देश में अनेक भाषाओं में हज़ारों पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं। हिंदी में मासिक पत्रिकाओं का मार्ग सरल नहीं है। एक गम्भीर पत्रिका को सुचारु ढंग से चलाना निश्चय ही एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। बाज़ारवाद में जीवन-मूल्य मूल्यहीन होकर रह गए हैं। फिर भी हमने यह कठिन कार्य हाथ में लिया है। आपका सहयोग अपेक्षित है।

'दी कोर' का प्रवेशांक आपको कैसा लगा, हमें अवश्य लिखें। हिंदू नववर्ष, विक्रम संवत् 2073 की शुभकामनाओं के साथ...

इस अंक में...

कलिः शयानो भवति संजिहानस्तु द्वापरः उत्तिष्ठँस्त्रेता।
भवति कृतं संपद्यते चरंश् चरैवेति चरैवेति ॥
—ऐतरेयब्राह्मण, 7.15

जो व्यक्ति सोया हुआ है, वह कलियुग में है; जो जम्हाई ले रहा है, वह द्वापर में है; जो उठकर खड़ा हो गया है, वह त्रेता में है; और जो वेग से चल पड़ा है, वह सत्ययुग में है। इसलिए चलते रहो, चलते रहो।

'दी कोर' का आगामी अंक
फ़ोकस ऑन एजुकेशन
कोचिंग और अकादमिक प्रतिद्वंद्विता के ज़बरदस्त माहौल में यह सर्वेक्षण नितांत प्रासंगिक है कि सर्वश्रेष्ठ शिक्षण और आर्श्वजनक प्लेसमेंट-रिकार्ड की दृष्टि से कौन-से कोचिंग संस्थान और विश्वविद्यालय अव्वल रहने की दौड़ में शामिल हैं। आगे रहने की इस स्पर्धा में फैकल्टी की उत्कृष्टता, छात्रों की प्रतिबद्धता और इंटर्नशिप की लोकप्रियता मुख्य मुद्दे रहे हैं। इसमें रेटिंग के भारी उलट-फेर में टॉपर्स का मूल्यांकन भी महत्त्वपूर्ण मुद्दा है। हमारे वैचारिक पटल पर यह बिंदु भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है कि अंतरविषयक विश्वविद्यालयों के चयन की दृष्टि से नये अनुसंधान की अगुवाई कौन कर सकते हैं तथा आख़िर वे कौन-से कोचिंग केन्द्र और निजी विश्वविद्यालय हैं जो छात्रों को प्रतिद्वंद्विता के मंच पर बेहतर तैयार कर सकते हैं। 'दी कोर' के मई 2016 अंक की आवरण-कथा बदलते परिवेश में शिक्षा पर केन्द्रित होगी।

—सम्पादक

सृष्टि के प्रथम प्रभात का पर्व

वर्ष प्रतिपदा

डॉ. नलिन बिहारी
(बिहार सरकार से अवकाशप्राप्त
वरिष्ठ पदाधिकारी एवं
कालगणना के विद्वान् हैं)

हिन्दू नववर्ष का प्रारम्भ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा तिथि से ही होता है। इसलिए इसे 'संवत्सर प्रतिपदा' या 'वर्ष प्रतिपदा' कहते हैं। वर्ष प्रतिपदा! एक ही तत्त्व अपने विकास की ओर पद-पद गमन करता है, अतः प्रतिपद!

ज्ञात हो कि हिन्दू नववर्ष विक्रम संवत् 2073 का प्रारम्भ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, सौम्य संवत्सर, शुक्रवार, तदनुसार आंग्ल दिनांक 08 अप्रैल, 2016 से हो रहा है।
उक्त तिथि से भारतीय कालगणना के अनुसार वर्तमान में :–

- कल्पाब्द 1,97,29,49,118
- सृष्टि संवत् 1,95,58,85,118
- युधिष्ठिर संवत् 5,154
- कलि संवत् 5,118
- विक्रम संवत् 2073
- शालिवाहन संवत् 1938

प्रारम्भ हो रहा है।

वेदों एवं पुराणों में कालगणना का उल्लेख

सृष्ट्युत्पत्ति के संबंध में स्पष्ट उल्लेख अपने आर्ष वाङ्मय में है। यथा–

'चैत्रे मासि जगद् ब्रह्मा ससर्ज प्रथमेऽहनि।
शुक्लपक्षे समग्रं तत्तदा सूर्योदये सति॥
पर्वतयामास तदा कालस्य गणनामपि।
ग्रहान्नागान ऋतुन्मासान्
वत्सरानवत्सराधिपान॥'
(कालमाधव, ब्रह्मपुराण)

अर्थात् चैत्र शुक्ल पक्ष के प्रथम दिन सूर्योदय के समय सभी ग्रह अश्विनी नक्षत्र तथा मेष राशि के आदि में थे। उसी समय ब्रह्माजी ने सृष्टि की रचना की तथा सभी ग्रहों ने उसी समय से अपनी-अपनी कक्षा में भ्रमण करना आरम्भ कर दिया।

विश्व के कार्यारम्भ के साथ ऋतु, मास, वर्ष, अयन आदि का भी प्रारम्भ हो गया। सृष्टि का प्रारम्भ सूर्योदय से ही हुआ, अतः भारत में सूर्योदय से ही दिन का प्रारम्भ माना जाता है।

वेद में भी प्रथम कल्प के प्रारम्भ अर्थात् पृथिवी पर सृष्टि आरम्भ काल के सन्दर्भ में संकेत मिलता है कि अहोरात्र जिसका पार्श्व स्थान है तथा नक्षत्रों से जिसकी पहचान होती है, ऐसी सृष्टि का मुख अश्विनी नक्षत्र है। यजुर्वेद (31.22) के अनुसार वर्तमान कालगणना के आरम्भ में पृथिवी की कक्षा और विषुवमण्डल का सम्पात अर्थात् वसन्त सम्पात (भूमध्य रेखा पर सूर्य का 90 डिग्री का कोण बनाना) अश्विनी नक्षत्र के आरम्भ में था। कालगणना के प्रारम्भ के इस ऐतिहासिक तथ्य को सुरक्षित रखने के लिए भारतीय मनीषियों ने अश्विनी नक्षत्र को ही कालगणना का आधार बनाया।

शक मुनि की गणना के अनुसार एक दिन-रात में 3,28,05,00,000 परमाणु काल होते हैं तथा एक दिन-रात में 8,64,000 सेकेंड होते हैं। इसका अर्थ

सूक्ष्मतम माप यानी परमाणु काल= 1 सेकेंड का 37968.75वाँ हिस्सा।

अतः भारतीय कालगणना की सूक्ष्मतम इकाई परमाणु काल है तथा महानतम इकाई ब्रह्मायु, जो इस ब्रह्माण्ड की आयु मानी गयी। इसका माप 31 नील 10 खरब, चालीस अरब वर्ष (31,10,40,00,00,00,000) है। यह आकाशगंगा की आयु का काल है जो कि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की आयु का भी काल है।

हिंदू कालगणना-पद्धति में सृष्टि की आयु मापने के लिए काल को चतुर्युगों में विभाजित किया गया है– 1. सत्ययुग, 2. त्रेतायुग, 3. द्वापरयुग तथा 4. कलियुग।

जब सभी ग्रह अपने भोग एवमं शर को छोड़कर एक जगह आते हैं, तब युग का आरंभ होता है। इस क्रिया में 4 लाख 32 हजार वर्ष लगते हैं। ऐसे एक युग को कलियुग कहा गया। कलियुग से दुगुना द्वापर, तिगुना त्रेता और चौगुना सत्ययुग होता है। इन चार युगों का एक महायुग तथा 71 महायुगों का एक मन्वन्तर होता है जिसका मान 30,67,20,000 वर्ष होता है।

एक कल्प में सूर्य 14 बार आकाशगंगा की परिक्रमा करता है। इसलिए एक कल्प में 14 मन्वन्तर कहे गये हैं। ऐसे 14 मन्वन्तरों के 4,29,40,80,000 और 15 संधिकाल के 2,59,20,000 वर्ष मिलाने पर 4 अरब 32 करोड़ वर्ष होते हैं। इसे ही एक 'कल्प' कहा जाता है जो ब्रह्मा का एक दिन है। जितना बड़ा दिन उतनी बड़ी रात। अतः 8 अरब 64 करोड़ वर्ष का एक अहोरात्र। ऐसे 360 अहोरात्रों का एक ब्राह्मवर्ष होता है। ब्रह्माजी की पूर्णायु सौ वर्ष है। इस प्रकार ब्रह्माजी की सम्पूर्ण आयु 31 नील, 10 खरब, 40 अरब वर्ष है। यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की आयु है। इसे 'पर' कहा गया है। इस आयु का आधा 50 ब्राह्मवर्ष, जो भोग हो चुका है, को 'प्रथम परार्द्ध' तथा अन्तिम 50 ब्राह्मवर्षों को 'द्वितीय परार्द्ध' के नाम से जाना जाता है। तदनुसार वर्तमान समय में ब्रह्मा के द्वितीय परार्द्ध का प्रथम दिन, जिसे 'श्वेतवाराह कल्प' कहते हैं, चल रहा है। इस श्वेतवाराह कल्प के 14 मन्वन्तरों में से 7वाँ वैवस्वत मन्वंतर और उसके 71 चतुर्युगों में से 28वें कलियुग का 5118वाँ वर्ष चल रहा है।

मन्वन्तर-मान– आधुनिक अनुमान के अनुसार सूर्य 25 से 27 करोड़ वर्ष में आकाशगंगा (परमेष्ठीमण्डल) के केन्द्र का एक चक्कर पूरा करता है। परन्तु भारतीय कालगणना के अनुसार इसमें लगभग 30 करोड़ वर्ष लगते हैं। परिभ्रमण के इस काल को एक 'मन्वन्तर' कहा जाता है। यह मन्वन्तर-काल 71 महायुग काल+एक सत्ययुग काल के समकक्ष है।

भारतीय कालगणना का आधार खगोलीय

वैदिक ऋषियों ने अपने अनुसंधान के क्रम में वर्तमान सृष्टि को पञ्चमण्डल क्रमवाली पाया। ये मंडल हैं– 1. चन्द्रमण्डल, 2. पृथिवीमण्डल, 3. सूर्यमण्डल, 4. परमेष्ठीमण्डल (आकाशगंगा) और 5. स्वायम्भुवमण्डल।

उक्त मण्डल क्रमशः उत्तरोत्तरमण्डल के गिर्द मण्डलाकार वृत्त में परिक्रमा कर रहे हैं। जैसे चन्द्रमण्डल पृथिवीमण्डल के गिर्द, पृथिवीमण्डल सूर्यमण्डल के, सूर्यमण्डल परमेष्ठीमण्डल (आकाशगंगा) के एवं परमेष्ठीमण्डल (आकाशगंगा) स्वायम्भुव

वर्तमान समय में ब्रह्मा के द्वितीय परार्द्ध का प्रथम दिन, जिसे 'श्वेतवाराह कल्प' कहते हैं, चल रहा है। इस श्वेतवाराह कल्प के 14 मन्वन्तरों में से 7वां वैवस्वत मन्वंतर और उसके 71 चतुर्युगों में से 28वें कलियुग का 5118वां वर्ष चल रहा है।
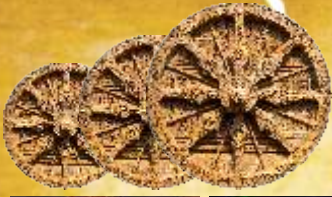
भारतीय नववर्ष प्रतिपदा
इतिहास के पन्नों में...
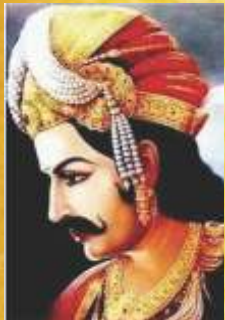
- 15,55,13,33,29,49,118 वर्ष पूर्व : ब्रह्माजी द्वारा पृथिवी आदि महाभूतों तथा अन्य तत्त्वों की उत्पत्ति, ब्रह्माजी द्वारा प्रथम दस मानस-पुत्रों (ऋषियों)– नारद, भृगु, वसिष्ठ, प्रचेता, पुलह, क्रतु, पुलस्त्य, अत्रि, अंगिरस (अंगिरा) और मरीचि) का सृजन; देवताओं, दानवों, ऋषियों, दैत्यों, यक्ष, राक्षस, पिशाच, गन्धर्व, अप्सरा, असुर, मनुष्य, पितर, सर्प एवं नागों के विविध गणों की सृष्टि एवं उनके स्थान का निर्धारण । अपने शरीर को दो भागों में विभक्तकर स्वायम्भुव मनु एवं शतरूपा का निर्माण। इन्हीं प्रथम पुरुष और प्रथम स्त्री की सन्तानों से संसार के समस्त जनों की उत्पत्ति हुई। मनु की सन्तान होने के कारण ही वे 'मानव' या 'मनुष्य' कहलाये। स्वायम्भुव मनु को आदि भी कहा जाता है, जिसका अर्थ होता है प्रारम्भ । सभी भाषाओं में मनुष्यवाची शब्द मैन, मनुज, मानव, आदम, आदमी आदि सभी शब्द 'मनु' शब्द से प्रभावित हैं। ऋषियों द्वारा पृथिवी पर जाकर वेद और पुराणों का पठन-पाठन प्रारम्भ और पृथिवी पर मानव-सभ्यता का प्रारम्भ*
- राजा उपरिचर द्वारा इन्द्र से प्राप्त भगवद्ध्वज का प्रथम आरोपण, ध्वजारोहण की प्रथा प्रारम्भ (महाभारत)
- 12,05,33,118 वर्ष पूर्व : भगवान् विष्णु का मत्स्यावतार*
- 3.4565 करोड़ वर्ष पूर्व : वैवस्वत मन्वन्तर के 20वें व्यास महर्षि गौतम का जन्म*
- 1,81,49,077 वर्ष पूर्व : भगवान् श्रीराम द्वारा बाली का वध*
- 1,81,49,076 वर्ष पूर्व : अयोध्या में भगवान् श्रीराम का राज्याभिषेक*
- 3138 ई.पू. : महाभारत-युद्ध के पश्चात् धर्मराज युधिष्ठिर का राज्याभिषेक, 'युधिष्ठिर संवत्' का प्रारम्भ
- 57 ई.पू. : उज्जयिनी में विक्रमादित्य का राज्याभिषेक, 'विक्रम संवत्' का प्रारम्भ
- 78 ई. : शालिवाहन द्वारा 'शालिवाहन संवत्' का प्रारम्भ
- वि.सं. 377 : 'वल्लभी संवत्' का प्रारम्भ
- वि.सं. 386 : कांची कामकोटि मठ के 15वें शंकराचार्य गंगाधर प्रथम का अगस्त्य पर्वत पर निधन
- वि.सं. 438 : द्वारका शारदा मठ के 19वें शंकराचार्य विद्यातीर्थ का स्वर्गारोहण
- वि.सं. 634 : कांची कामकोटि मठ के सत्ताइसवें शंकराचार्य चिद्विलास का कांची में स्वर्गारोहण
- वि.सं. 663 : सम्राट् हर्षवर्धन का राज्याभिषेक, 'हर्ष संवत्' का प्रारम्भ
- वि.सं. 1064 : संत झूलेलाल का नसरपुर (सिंध) में जन्म, 'चेटीचण्ड-महोत्सव'
- वि.सं. 1616 : द्वारका शारदा मठ के 54वें शंकराचार्य महादेवाश्रम द्वितीय का स्वर्गारोहण
- वि.सं. 1717 : शिवाजी द्वारा पन्हालगढ़ पर अधिकार
- वि.सं. 1932 : स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा बम्बई में 'आर्य समाज' की स्थापना
- वि.सं. 1946 : राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार का नागपुर में जन्म
- वि.सं. 1984 : डॉ. भगवानदास द्वारा काशी में भारतमाता मन्दिर का शिलान्यास

* परम्परागत और पुराणों पर आधारित

मण्डल (समग्र ब्रह्म) का परिभ्रमण कर रहे हैं। यह परिभ्रमण-क्रम ही कालखण्डों का जनक है। वस्तुतः सूर्यमण्डल द्वारा परमेष्ठी मण्डल का परिभ्रमण ही जगत्क्रम, पृथिवी की ध्रुवता एवं दिशाक्रम के परिवर्तन का कारण है। परमेष्ठीमण्डल (आकाशगंगा) स्वायम्भुव मण्डल की परिक्रमा कर रहा है। अर्थात् आकाशगंगा अपने से ऊपरवाली आकाशगंगा का चक्कर लगा रही है। इस काल को कल्प कहा गया।

पौराणिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक महत्त्व

सृष्टि के रचयिता ब्रह्माजी ने चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को ही सृष्टि की रचना की थी। तब से लेकर आज तक की गणना हम कर सकते हैं, क्योंकि हमारे पंचांग अत्यन्त सटीक ढंग से बनाए गए हैं, कहीं एक पल की भी गड़बडी नहीं है। वर्ष प्रतिपदा से सृष्टि आरम्भ होने से वर्ष का प्रारम्भ इसी दिन से माना गया है और इस दिन अनेक ऐतिहासिक घटनाएं घटित हुई हैं।

सृष्टि के रचयिता ब्रह्माजी ने चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को ही सृष्टि की रचना की थी। संसार के परित्राणार्थ आज ही के दिन भगवान् विष्णु द्वारा मत्स्यावतार लेने के कारण यह दिन सम्पूर्ण विश्व के इतिहास से सम्बन्धित है। चैत्र नवरात्र का प्रथम दिन तथा प्रभु रामचन्द्र जी का राज्याभिषेक दिवस होने के कारण यह हिंदुओं के लिए पवित्रतम तिथि है। धर्मराज युधिष्ठिर एवं सम्राट् हर्षवर्धन का राज्याभिषेक दिवस, विक्रम संवत्, शालिवाहन संवत्, वल्लभी संवत् एवं हर्ष संवत् का शुभारम्भ दिवस, सिंध की महान् विभूति भगवान् झूलेलाल जी का जन्मदिवस, महर्षि दयानन्द द्वारा आर्य समाज की स्थापना-दिवस की यही तिथि है। हिंदू राष्ट्र के महान् नायक एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार का जन्म भी वर्ष प्रतिपदा (विक्रम संवत् 1946, तदनुसार 01 अप्रैल, 1889) के शुभ दिन ही हुआ था।

> वर्ष प्रतिपदा उत्सव पूरे भारत वर्ष में भिन्न नामों से बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। ईरानियों एवं कश्मीरियों में 'नौरोज़' (नया रोज), महाराष्ट्र में 'गुड़ि पड़वा', आंध्रप्रदेश में 'युगादि', सिंध प्रदेश में भगवान् झूलेलाल जी की जयन्ती के नाम से, झारखण्ड में 'सरहुल' पर्व तथा बंगाल में 'पयला बेशाख' के नाम से यह पर्व बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है।

भारतीय संवत्

अपने देश में अनेक संवत् प्रचलित हैं। इनमें से अधिकांश संवत् वर्ष प्रतिपदा को प्रचलित किए गये, यथा– 1. कल्प संवत्, 2. सृष्टि संवत्, 3. वामन संवत्, 4. श्रीराम संवत्, 5.

श्रीकृष्ण संवत्, 6. युधिष्ठिर संवत्, 7. कलि संवत्, 8. बौद्ध संवत्, 8. वीर निर्वाण संवत्, 10. शंकराचार्य संवत्, 11. विक्रम संवत्, 12. शालिवाहन संवत्, 13. हर्ष संवत् आदि अनेक संवत् प्रचलित हैं।

शकारि विक्रमादित्य और विक्रम संवत्

अपने देश भारतवर्ष और नेपाल में सर्वाधिक प्रचलित विक्रम संवत् के प्रवर्तक थे महाराज विक्रमादित्य, जो शक आक्रमणकारियों को भारत से बाहर खदेड़कर सम्पूर्ण भारतवर्ष को राजनैतिक दृष्टि से एकसूत्र में बाँधने में सफल हुए थे। विक्रमादित्य केवल मालवा के ही नहीं, अपितु आसेतुहिमाचल सम्पूर्ण भारतवर्ष के सम्राट् थे। उज्जयिनी उनकी राजधानी थी। शकों को पदाक्रांत करने के उपलक्ष्य में तथा इस महान् ऐतिहासिक विजय की स्मृति को चिरस्थायी बनाने हेतु विक्रमादित्य ने ईसा से 57 वर्ष पूर्व चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन 'कृत संवत्' का प्रवर्तन किया। यही संवत् कालान्तर में मालवगण संवत्' कहलाया और उसके भी बाद कृतज्ञ भारतीयों ने इसे 'विक्रम-संवत्' कहना प्रारम्भ कर दिया।

किन्तु वर्तमान में अपने देश में सरकारी कामकाज को छोड़कर शेष सभी धार्मिक कार्यों के लिए विक्रम संवत् का प्रचलन है। हमारे पंचांग विक्रम संवत् को ही आधार मानकर बनाए गए हैं। यह हमारी संस्कृति एवं जीवन में इतना रच-बस गया है कि हमारे सभी धार्मिक पर्व-त्योहार, सभी धार्मिक अनुष्ठान, विवाह आदि सभी शुभ कार्य विक्रम संवत् पर आधारित पंचांग के अनुसार ही प्रचलन में हैं।
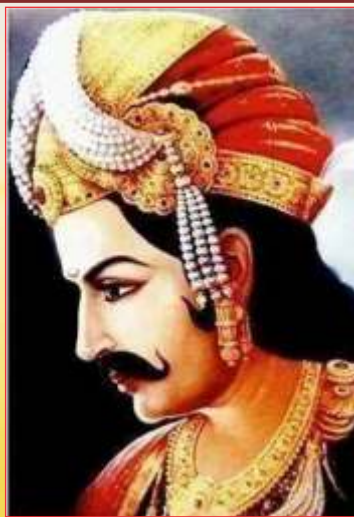
> विक्रम संवत् किसी संकुचित विचारधारा या पंथाश्रित नहीं है। हम इसको पंथनिरपेक्ष रूप में देखते हैं। यह संवत् किसी देवी, देवता या राजा के जन्म पर आधारित नहीं, ईसवी या हिज़री की तरह किसी जाति अथवा संप्रदाय-विशेष का नहीं है। यह विक्रम संवत् भारत के पराक्रम का संवत् है।

वर्ष प्रतिपदा उत्सव पूरे भारतवर्ष में भिन्न नामों से बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। ईरानियों एवं कश्मीरियों में '**नौरोज़**' (नया रोज), महाराष्ट्र में '**गुड़ि पड़वा**', आंध्रप्रदेश में '**युगादि**', सिंध प्रदेश में भगवान् झूलेलाल जी की जयन्ती के नाम से, झारखण्ड में '**सरहुल**' पर्व तथा बंगाल में '**पयला बेशाख**' के नाम से यह पर्व बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है।

सौर एवं चान्द्र वर्ष

जब पृथिवी सूर्य का एक पूरा चक्कर लगा लेती है, तब एक सौर वर्ष होता है। इस परिभ्रमण-काल में पृथिवी को 365 दिन, 6 घंटे, 9 मिनट और 98 सेकेंड लगते हैं।

जब चंद्रमा पृथिवी के 354.367068 दिनों में 12 चक्कर लगा लेता है, तब उसे चान्द्र वर्ष कहते हैं।

सावन-गणना

सौर वर्ष एवं चान्द्र वर्ष में सामंजस्य बना रहे, इस हेतु सावन गणना की उत्पत्ति हुई है। इसमें ऐसा सामंजस्य बैठ जाता है कि तिथि-वृद्धि, तिथि-सम, क्षय, मासादि कोई व्यवधान नहीं कर पाते। अतः मलमास या अधिकमास, क्षय

Julius Caesar

Gregory XIII

1582	OCTOBER					1582
SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
	1	2	3	4	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30
31						

सन् 1582 में पोप ग्रेगोरी-13 ने खगोलविद् क्रिस्टोफर क्लावियस की मदद से जूलियन कैलेण्डर में बहुत सुधार किया। इस नये कैलेंडर को 'ग्रेगोरियन कैलेण्डर' कहा गया। इस कैलेंडर में प्रत्येक 4 वर्षों के बाद एक अधि वर्ष (लीप ईयर) होता है जिसमें फरवरी मास 29 दिनों का हो जाता है। सन् 1752 में ब्रिटेन ने इस कैलेण्डर को अपना लिया। इसका परिणाम यह हुआ कि 3 सितम्बर 14 सितम्बर में बदल गया। इसीलिए कहा जाता है कि ब्रिटेन के इतिहास में 3 सितंबर 1752 से 13 सितंबर 1752 तक कुछ भी घटित नही हुआ। इससे कुछ लोगों को भ्रम हुआ कि इससे उनका जीवनकाल 11 दिन कम हो गया और वे अपने जीवन के 11 दिन वापस देने की मांग को लेकर सड़कों पर उतर आये।

मास की व्यवस्था की गई है। सूर्य ग्रहण सदा अमावस्या को ही होगा और चन्द्र ग्रहण सदा पूर्णिमा को।

सौर मास एवं चान्द्र मास

एक सूर्य संक्रान्ति से दूसरे सूर्य संक्रान्ति तक के काल को सौर मास कहते हैं। शुक्ल प्रतिपदा से कृष्ण अमावस्या तक 30 तिथियों का एक चान्द्र मास होता है।

तिथि

सूर्य से चन्द्रमा की प्रत्येक 12 अंश की दूरी को एक तिथि कहते हैं। सूर्योदय से तिथि का प्रारम्भ माना जाता है।

मास का नाम

पूर्णिमा को चन्द्रमा जिस नक्षत्र पर होते हैं, उसी नक्षत्र के नाम पर आधारित उस मास का नाम होता है। जैसे चित्रा नक्षत्र पर पूर्णिमा को चन्द्र की उपस्थिति के कारण 'चैत्र' नाम पड़ा। सम्पूर्ण विश्व में सप्ताह के सात दिनों के नाम एक समान हैं, यथा– रवि, सोम, मंगल आदि। इसका श्रेय भारतीय गणितज्ञों को ही जाता है।

कलियुग

जिस दिन, जिस समय भगवान् श्रीकृष्ण गोलोक सिधारे, उसी दिन, उसी समय वर्तमान 28वें कलियुग का आरम्भ हुआ। वह तिथि थी - माघ शुक्ल पूर्णिमा, बहुधान्य संवत्सर, युधिष्ठिर संवत् 37, तदनुसार 18 फरवरी, 3102 ई.पू., शुक्रवार, दोपहर 2 बजकर 27 मिनट 30 सेकेंड। उस समय सभी ग्रह एक ही राशि में थे। इस प्रकार वर्तमान में कलियुग का [3102+2016=] 5118वां वर्ष चल रहा है।

पाश्चात्य कालगणना

पाश्चात्य कालगणना का कोई वैज्ञानिक आधार न होने के कारण इनका कैलेण्डर सदैव बदलता रहा है। आज के ईसवी सन् का मूल **रोमन कैलेण्डर** है। प्रारम्भ में इसमें 10 माह का वर्ष होता था जो मार्च से दिसम्बर तक चलता था और वर्ष में कुल 304 दिन होते थे।

बाद में रोम के दूसरे राजा ने वर्ष में दो अतिरिक्त माह Ianuarius and Februarius जोड़कर कुल 355 दिनों का वर्ष निर्धारित किया।

जूलियन कैलेण्डर– ईसा से 100 वर्ष पूर्व जन्मे जूलियस सीज़र ने 45 ई.पू. में रोमन कैलेंडर में सुधार करके वर्ष को 365.25 दिन (जबकि असल में यह 365.24219 दिनों का होता है) करने का आदेश दिया। पहला मास जनवरी तथा अन्तिम मास का नाम दिसम्बर था। जुलाई मास 31 दिन, फरवरी माह 29 दिन तथा अन्य मास क्रम से 29, 30 दिन कर दिया गया। पहले वर्षारम्भ 25 मार्च से होता था, पर इस आदेश के बाद वर्षारम्भ 1 जनवरी से माना गया। इस कैलेण्डर का नाम 'जूलियन कैलेंडर' रखा गया।

एक जनवरी को नये साल का ज़श्न मनाने का सिलसिला सदियों तक जारी रहा, लेकिन मध्यकाल में इसमें थोड़ा विराम लगा। साल के दिनों की पूरी तरह सटीक गणना न होने के कारण 15वीं शती के मध्य तक आते-आते साल में 10 दिनों का अंतर आ गया। रोमन चर्च ने फिर से इसमें हस्तक्षेप किया और पोप ग्रेगोरी-13 ने नया कैलेण्डर तैयार किया।

एक जनवरी को आख़िर कौन-सी ऐसी भौगोलिक या ऐतिहासिक घटना घटी थी जो हमारे समाज को प्रेरणा दे सके। प्रकृति में कोई परिवर्तन

नहीं। वही कड़ाके की ठंड।

हिंदू-कालगणना पूर्णतः वैज्ञानिक

इसके विपरीत हिंदू-नववर्ष का प्रारम्भ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से ही माना जाता है और इसी दिन से ग्रहों, वारों, मासों और संवत्सरों का प्रारंभ गणितीय और खगोलशास्त्रीय संगणना के अनुसार माना जाता है। आज भी जनमानस से जुड़ी हुई यही शास्त्रसम्मत कालगणना व्यावहारिकता की कसौटी पर खरी उतरी है।

प्रकृति द्वारा नववर्ष का स्वागत

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से प्रकृति नया रूप धारण कर लेती है। प्रतीत होता है कि इस दिन प्रकृति नवपल्लव धारण कर नवसंरचना के लिए ऊर्जस्वित होती है। मानव, पशु-पक्षी, यहां तक कि जड़-चेतन प्रति भी प्रमाद और आलस्य को त्याग सचेतन हो जाती है। वसंतोत्सव का भी यही आधार है। रातें छोटी और दिन बड़े होने लगते हैं। बर्फ पिघलने लगती है। वृक्षों पर नयी-नयी कोंपलें आ जाती हैं। सरसों के फल, आम्रमञ्जरी, कमलदल के प्रस्फुटन, मधुप पुष्प सुगंधि, कोयल की कूक से प्रकृति अपनी प्रसन्नता प्रकट करती मानो हिंदू नववर्ष का अभिनन्दन कर रही है।

भारतीय स्वाभिमान का संवत्

विक्रम संवत् किसी संकुचित विचारधारा या पंथाश्रित नहीं है। हम इसको पंथनिरपेक्ष रूप में देखते हैं। यह संवत् किसी देवी, देवता या राजा के जन्म पर आधारित नहीं, ईसवी या हिज़्री की तरह किसी जाति अथवा संप्रदाय-विशेष का नहीं है। यह विक्रम संवत् भारत के पराक्रम का संवत् है। आज से 2073 वर्ष पूर्व महाराज विक्रमादित्य ने विदेशी आक्रांता शकों से भारत-भू का रक्षण किया और वर्ष प्रतिपदा के दिन से संवत् का प्रवर्तन किया था।

लेकिन दुर्भाग्य है कि स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात् अपने राष्ट्र के स्वनामधन्य नेताओं ने अपने अति प्राचीन राष्ट्र के लिए, ईसवी सन् से भी 78 वर्ष अर्वाचीन कैलेण्डर (शक संवत्) को ही राष्ट्रीय कैलेण्डर के रूप में मान्यता दी। राष्ट्रीय गौरव का विचार सामने न रहने पर ऐसा ही होता है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पूर्व सरसंघचालक प्रो. राजेन्द्र सिंह के शब्दों में, **'अपनी प्राचीनता और प्राचीन काल के वैभव का जब हमें स्मरण नहीं रहता, तभी ऐसी छोटी-छोटी भूलें होती हैं।'**

भारत का इतिहास सृष्टि-रचना से ही प्रारम्भ हो जाता है जिसकी अन्तिम कड़ी है कलियुग संवत्। यदि इस कलिसंवत् को मान्यता दी जाती, तो लगभग 5,000 वर्षों का इतिहास जीवंत हो जाता जिसे आज मिथक कहा जाता है। विक्रम संवत् के स्थान पर ईसवी सन् को स्वीकारने के कारण भारतीय इतिहास के 57 वर्ष धुंधलके में चले गये जिसे ईसा पूर्व की दूरबीन से देखा जाता है। हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि संवत्सर केवल कालगणना का ही आधार नहीं होता, वरन् वह इतिहास की रक्षा का सबसे प्रमुख आधार भी है।

वस्तुतः कालगणना प्रत्येक समाज की सभ्यता और संस्कृति की संवाहिका होती है; क्योंकि समाज की सभ्यता और संस्कृति की गौरवयुक्त एवं गौरवहीन घटनाएं किसी काल से ही संबंधित होती हैं। जिसका संवत् जितना पुराना होगा, उसकी सभ्यता और संस्कृति निःसन्देह उतनी ही पुरातन होगी। ■

महीनों के नामों में अद्भुत साम्य

रोमन का 'केलेन्द' (Calend, Kalend) शब्द सम्भवतः संस्कृत के 'कालांश' शब्द से व्युत्पन्न हुआ है। दोनों में अर्थ-साम्य एव उद्देश्य-साम्य अद्भुत है। जनवरी, मार्च, अप्रैल, मई और जून माह का नाम देवी-देवता के नाम पर तथा जुलाई और अगस्त रोमन सम्राटों के नाम पर रखा गया।

दिसम्बर दसवां मास था, इसकी व्युत्पत्ति संस्कृत के 'दशम' (लैटिन : Deca) से है। इसी प्रकार नवम्बर मास का नामकरण संस्कृत के 'नवम' शब्द से है। अक्टूबर आठवां मास था तथा इसकी व्युत्पत्ति संस्कृत के 'अष्ट' शब्द से है। सेप्टेम्बर का अर्थ है सातवां मास तथा यह संस्कृत के 'सप्तम' शब्द से बना है। छठा मास 'हेक्सेम्बर' (Hexamber) जिसकी व्युत्पत्ति संस्कृत के 'षष्ठ' (लैटिन : Hex) से है। पांचवें मास को 'पेंटेम्बर' कहा जाता था जिसका नामकरण संस्कृत के 'पंच' शब्द से स्पष्ट ही है। जूलियस सीज़र का जन्म इसी मास में हुआ था इसलिए उसने पेंटेम्बर का नाम बदलकर 'जुलाई' कर दिया। ऑगस्टस का जन्म छठे मास में हुआ था इसलिए उसने हैक्सेम्बर का नाम 'अगस्ट' कर दिया। उस समय तक अगस्ट मास में 30 दिन हुआ करते थे। ऑगस्टस ने अपने नाम के गौरव की रक्षा के लिए अगस्ट में भी 31 दिन कर दिए तथा अन्तिम मास फरवरी से एक दिन उधार लेकर अगस्त में बढ़ा दिया।

डॉ. हर्षवर्धन सिंह तोमर
(अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना में क्षेत्रीय संगठन-सचिव एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य हैं)

आधुनिक भारत में लोकशक्ति के उद्गाता

डॉ. हेडगेवार

अनादि काल से ही भारतभू रत्नगर्भा रही है और मानवरत्न-प्रसविनी भारत मां की पुनीत कुक्षि से न जाने कितनी विभूतियों ने जन्म लिया है, न जाने कितने कर्मवीरों और तपस्वियों के जीवन की धारा इसी पावन भूमि में प्रवाहित हुई है। क्या प्राचीन क्या अर्वाचीन, सदैव यहां के कर्मयोगियों ने आकुल विश्व को शान्ति प्रदान की है तथा अपने आदर्श व्यक्तित्व, प्रतिभा, कर्मनिष्ठा, त्याग और सेवा से हिंदू समाज का संगठन करते हुए राष्ट्रोत्थान का कार्य किया है। इन कर्मयोगी मनीषियों के जीवन का यह सातत्य है कि उन्होंने स्वयं के जीवन में अपनी उपलब्धियों का जो प्रासाद निर्मित किया, उसकी पृष्ठभूमि उनके गुणात्मक कर्मों पर आधारित थी। उन्होंने जिन सांस्कृतिक मूल्यों को आत्मसात् करते हुए उनका क्रियान्वयन स्वयं या उससे कहीं अधिक समाज-जीवन में किया। उनके गुणों की यह क्रियात्मक उपलब्धियों के अनुरूप ही इतिहास उन्हें महापुरुषों की श्रेणी में परिगणित करता है। इन लोकनायकों के व्यक्तित्व व कृतित्व पर तत्कालीन वायुमण्डल का प्रभाव भी दृष्टिगोचर होता है। अपने समकालीन वातावरण में ये महापुरुष सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक विशृंखलन से उपजे विषादयुक्त नकारात्मक परिदृश्य में अपनी मूल सांस्कृतिक विरासत से ऊर्जा प्राप्त करके समाज एवं राष्ट्र के पुनर्निर्माण अथवा समाज-जागरण का युगान्तकारी मार्ग प्रशस्त करते हैं। भारतीय इतिहास में प्राचीन काल से लेकर वर्तमान तक ऐसे अनेक दृष्टांत देखने या सुनने को मिलते हैं, जिनमें लोकनायकों ने अपनी मूल अस्तित्वप्राप्त धार्मिक मान्यताओं और परम्पराओं के आधार पर भारतवर्ष में लोकजागरण का अभिनव प्रयोग किया है। चाहे वे वैदिक ऋषि अगस्त्य हों या युगप्रवर्तक श्रीराम, श्रीकृष्ण हों या कालान्तर के मनीषी गौतम बुद्ध, भगवान् महावीर, आद्य शंकराचार्य, स्वामी दयानन्द सरस्वती, विवेकानन्द, डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार, महात्मा गाँधी आदि अन्य–सभी ने अपनी धार्मिक, दार्शनिक तात्त्विक मीमांसा को ही नवोत्थान का

उत्सव हमारे लिए खुशी का अवसर कैसे हो सकता है' – अपने सहपाठियों और विद्यालय-परिवार के समक्ष एक भावी युगद्रष्टा देशभक्त होने का परिचय दे दिया था। इसके अनन्तर चाहे वह सीताबर्डी (महाराष्ट्र) दुर्ग पर लहराते यूनियन जैक को हटाने की योजना हो या अनुशीलन समिति के सदस्य के नाते उग्र राष्ट्रवादी गतिविधियों में भागीदारी हो या कांग्रेस के सक्रिय पदाधिकारी के रूप में कारावास की यातना हो– ये सब उनकी महान् देशभक्त की छवि को चरितार्थ करने के पर्याप्त प्रमाण हैं। ब्रिटिश शासन की तत्कालीन खुफिया रिपोर्ट क्रान्तिकारी गतिविधियों में उनकी संलिप्तता को दर्शाती है। महात्मा गांधी द्वारा चलाये गए असहयोग आन्दोलन में उन्होंने बढ़-चढ़कर भाग लिया व जेल-यात्रा भी की । 1921 ई. में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध लोगों को भड़काने पर उन पर राजद्रोह का मुक़दमा चलाया गया। बचाव पक्ष में दिये गए उनके वक्तव्य को जज ने उनके मूल भाषण से भी ख़तरनाक बताया।

आधार बनाकर राष्ट्रोत्थान का कार्य किया है। भारतीय संस्कृति के ऐसे तत्त्ववेत्ता मनीषियों में से **डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार** (1889-1940) भी आधुनिक भारत के प्रमुख लोकनायक रहे हैं। उन्होंने '**राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ**' के रूप में एक अभिनव कार्य-पद्धति द्वारा ब्रिटिश साम्राज्य व इस्लामिक दुराग्रहों के मध्य हिंदू समाज व राष्ट्रोत्थान का मार्ग प्रशस्त किया।

प्रसंगवश यह उल्लेखनीय है कि 19वीं-20वीं शताब्दी को भारतवर्ष के नवोन्मेष का काल कहा जाता है। इस कालावधि में अगणित मनीषी भारत के नवोत्थान के लिए प्रयासरत थे। संयोगवश या किसी दैवीय योजना के परिणामस्वरूप 1857 ई. के प्रथम स्वाधीनता संग्राम के पश्चात् इसी नवोत्थान के प्रयासों को सतत रूप में प्रारम्भ रखने के लिए भारतभूमि पर स्वामी विवेकानन्द, बालगंगाधर टिळक, महात्मा गाँधी, पं. मदनमोहन मालवीय, लाला लाजपतराय, डॉ. हेडगेवार ने अल्प समयान्तराल के साथ जन्म लिया। इन सभी जननायकों की कार्य-पद्धति की यह विशेषता रही कि इन्होंने भारतीय स्वाधीनता के विषय को प्राचीन हिंदू-व्यवस्थाओं के सन्दर्भ में देखने की चेष्टा की। इनके प्रयास स्तुत्य हैं। इन मनीषियों में डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार एक ऐसे युगद्रष्टा मनीषी थे जिन्होंने अपने चिन्तन-दर्शन से न केवल तत्कालीन वातावरण को प्रभावित किया, वरन् अपनी दीर्घगामी कार्य-योजना से वर्तमान भारत के पुनर्निर्माण का भी मार्ग प्रशस्त किया। 20वीं शताब्दी के प्रारम्भ में भारतीय नवोन्मेष की प्रक्रिया धीमी पड़ने लगी थी, अर्थात् नवोत्थान व राष्ट्रीय आंदोलन की यह धारा राजनीतिक व सामाजिक परिवर्तनों के चलते अपने मूल उद्देश्य से भटक रही थी। ऐसे समय में डॉ. हेडगेवार ने न सिर्फ़ स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया, अपितु अपने दर्शन-चिन्तन से भविष्य में होने वाली राष्ट्रीय क्षति के समाधान के रूप में एक वृहद् कार्य-योजना को अंगीकार किया। वह एक ऐसे मीमांसक थे जिन्होंने भारतीय स्वाधीनता के साथ-साथ भारत की परतन्त्रता के कारणों का सूक्ष्म विश्लेषण किया। वस्तुतः वह आधुनिक भारत के पूर्ववर्ती पुनर्जागरण के अग्रिम चरण के उत्प्रेरक थे।

बीसवीं शती के प्रारम्भ से वर्तमान तक लाखों तरुणों में देशभक्ति, राष्ट्रप्रेम तथा ध्येयवाद का जागरण करने वाले युगप्रवर्तक डॉ. हेडगेवार एक जन्मजात देशभक्त एवं क्रान्तिकारी एवं राष्ट्रीय आन्दोलन के पुरोधा थे। नागपुर के एक सामान्य से अधिक निर्धन परिवार में जन्मे इस लोकनायक ने अपनी बाल्यावस्था में ही अपने राष्ट्रभक्त होने का उद्घोष कर दिया था। यह संक्षेप इतना कहना ही पर्याप्त होगा कि मात्र आठ वर्ष की आयु में ही महारानी विक्टोरिया के साम्राज्य की 60वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में वितरित मिष्ठान्न को यह कहकर कि 'परकीय शासक के राज्याभिषेक

सन् 1915 से 1925 तक की कालावधि में डॉ. हेडगेवार ने अपने गम्भीर चिन्तन तथा अनेक संस्थाओं के अनुभवों से यह चिन्तन किया कि श्रेष्ठ धर्म-संस्कृति, परम्परा, आर्थिक सम्पन्नता तथा योग्य सैनिक गुणों के होने के बाद भी राष्ट्र की इस दुर्दशा का मूल कारण आपसी फूट तथा हिंदू समाज में संगठन का अभाव है। अतः उन्होंने तभी से हिंदू-लोकजागरण व संगठन को अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया। वस्तुतः वह हिंदू समाज के जागरण व संगठन के माध्यम से भारत की स्वाधीनता के लक्ष्य को प्राप्त करना चाहते थे। इसके लिए आवश्यक था कि हिंदू चारित्रिक और शारीरिक रूप से सक्षम बनें। और अपने असली स्वरूप में हिंदू-लोकशक्ति का जागरण हो। यहां उन परिस्थितियों का उल्लेख करना भी समीचीन जान पड़ता है कि जिसके फलस्वरूप **राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ**-जैसी राष्ट्रीय योजना अस्तित्व में आयी। 1906 ई. में मुस्लिम लीग की स्थापना के बाद भारत में मुस्लिम अराजकता का व्यापक विस्तार हुआ। मुस्लिम नेता स्वयं को भारत का भाग्यविधाता समझने और खुलकर द्विराष्ट्र के सिद्धान्त का समर्थन करने लगे थे। 1906 से 1925 तक की कालावधि में भारतभूमि का ऐसा कोई भाग शेष नहीं बचा कि जिसमें मुस्लिमों की

कीर्तिर्यस्य स जीवति

अराजकतापूर्ण नीतियों के चलते हिंदुओं पर पाशविक अत्याचार न हुए हों। हिंदू अपनी संस्कृति, संपत्ति से पृथक् कर दिये गये। यह सब दुराग्रह व दुश्चक्र अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की तुष्टिकरण की नीति के चलते हो रहा था। इन हिंदू-विरोधी घटनाओं के आधार पर डॉ. हेडगेवार ने भारत के भविष्य का वर्तमान में परिदृश्य निर्मित कर लिया था। उन्हें मुस्लिमों की बढ़ती अराजकता और कांग्रेस की मुस्लिमपरस्ती हिंदू समाज व राष्ट्र के लिए घातक प्रतीत हो रही थी। इसलिए उन्होंने हिंदुत्व को राष्ट्र की जीवनदायिनी शक्ति का आधार बनाते हुए उस शक्ति का जागरण व संगठन भारत की स्वतन्त्रता के लिए किया।

वस्तुतः संघ-स्थापना की पृष्ठभूमि में डॉ. हेडगेवार का जागतिक लक्ष्य संगठित हिंदू-लोकशक्ति के माध्यम से भारत की भावी स्वाधीनता को प्राप्त करना था। इस लोकशक्ति के संगठनात्मक स्वरूप और उसकी आवश्यकता की परिकल्पना और रूपरेखा उन्होंने अपने कारावास की समयावधि (1920 से 1922) के मध्य ही निर्मित कर ली थी। उनका मानना था कि देश की स्वाधीनता के लिए एक ऐसे अभेद्य संगठन की रचना की जानी चाहिए जो अब तक के क्रान्तिकारी आन्दोलनों की दुर्बलताओं से मुक्त हो और जो आवश्यकता होने पर ब्रिटिश शासन को धराशायी कर सके। स्वाधीनता-प्राप्ति की तीव्र आकांक्षा उनके मन-मस्तिष्क को झकझोर रही थी। संघ की स्थापना के पश्चात् उसकी प्रथम प्रतिज्ञा कि **'मैं राष्ट्र की स्वतन्त्रता के लिये ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का घटक बना हूं'**– संघ-स्थापना के उद्देश्य को उद्घाटित करती है। 1940 ई. के संघ शिक्षा वर्ग में दिये गए डॉ. हेडगेवार के अन्तिम भाषण कि 'हमने यह कभी नहीं कहा कि हम दो दिन दो या दो माह में स्वराज्य प्राप्त कर लेगें। परन्तु साथ-साथ हम यह भी नहीं चाहते कि हम पीढ़ियों और सदियों तक कार्य करते रहें और उसका फल कुछ भी न हो। हमारा प्रयास यह है कि हमारे जीते जी हम अपने उद्देश्य को पूर्ण होता देखें।'
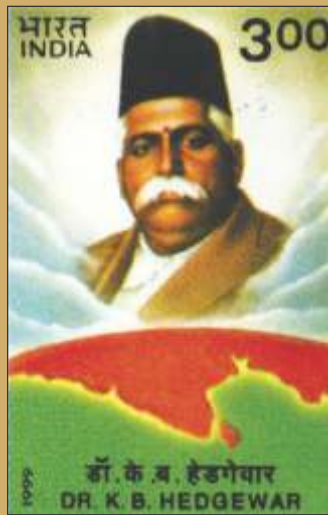
भारत INDIA 3.00
डॉ. के.ब. हेडगेवार
DR. K. B. HEDGEWAR

सन् 1915 से 1925 तक की कालावधि में डॉ. हेडगेवार ने अपने गम्भीर चिन्तन तथा अनेक संस्थाओं के अनुभवों से यह चिन्तन किया कि श्रेष्ठ धर्म–संस्कृति, परम्परा, आर्थिक सम्पन्नता तथा योग्य सैनिक गुणों के होने के बाद भी राष्ट्र की इस दुर्दशा का मूल कारण आपसी फूट तथा हिंदू समाज में संगठन का अभाव है। अतः उन्होंने तभी से हिंदू–लोकजागरण व संगठन को अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया।

संघ की स्थापना का विचार कोई नया कार्य नहीं था। डॉ. हेडगेवार ने स्वयं कहा था कि संघ का कार्य व विचार कोई नया अनुसंधान नहीं है। वस्तुतः लोकशक्ति के द्वारा समाज का जागरण, तदनुरूप समाज-संगठन के माध्यम से एक शक्तिसंपन्न सशक्त राष्ट्र का निर्माण ही डॉ. हेडगेवार जी का मूलोद्देश्य था। वह इस तथ्य से भलीभांति अवगत थे कि अनादिकाल से ही इस देश की सनातन संस्कृति व परम्परा हिंदू जीवन-पद्धति की संवाहिका रही है अर्थात् 'हिंदुत्व' ही इस राष्ट्र का शिरोधार्य परिचय है। इसलिये उन्होंने समाजोत्थान व उसके माध्यम से राष्ट्रोत्थान की संकल्पना को चरितार्थ करने के लिए हिंदू समाज के जागरण व संगठन को महत्त्व दिया। इस कार्य को अपना सर्वस्व मानते हुए अपने व्यक्तिगत हितों व आकांक्षाओं को तिलाञ्जलि देकर समाज व राष्ट्र की असीम पीड़ा को समाप्त कर राष्ट्र-पुनर्निर्माण को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया। वह तत्त्ववेत्ता थे। संघ की स्थापना से पूर्व उन्होंने राष्ट्र व राष्ट्र-भक्ति को सही सन्दर्भों में व्याख्यायित करने की चेष्टा की और यही व्याख्या उनके सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की अभिव्यक्ति है जिसके आधार पर आज संघ का स्वरूप विश्वव्यापी हो सका। डॉ. हेडगेवार का मानना था कि जिस भूमि पर एक विशिष्ट जाति व विशिष्ट परम्परा के अनुगामी, एक विचारधारावाले तथा समान इतिहासवाले व्यक्ति एकत्र रहते हैं, उसी भूमि को 'राष्ट्र' कहा जाता है। ऐसे स्वजातीय लोगों के हित संबंध एक जैसे होते हैं और उनमें एक प्रकार से एकत्व की भावना विद्यमान रहती है और सही भावना उनकी प्रगति का कारण बन जाती है। भिन्न-भिन्न संस्कृति के मानने वाले, भिन्न विचारधारावाले, भिन्न इतिहास, परस्पर शत्रुता, परस्पर विरोधी हित संबंध रखने वाले, भक्ष्य और भक्षक के नाते रहने वाले तथा भिन्न-भिन्न हेतुओं से प्रेरित होकर एकत्र हुए लोग राष्ट्र की सृष्टि नहीं कर सकते और ऐसे लोगों के समूह को राष्ट्र नहीं कहा जा सकता। वास्तविक अर्थ में डॉ. हेडगेवार एक धर्म, एक तत्त्व, एक परम्परा से संगठित हुई लोकशक्ति को ही राष्ट्र के लिए अपरिहार्य मानते थे। उन्होंने राष्ट्र-भक्ति के अलाप को भी व्यर्थ मानते हुए इसको सही अर्थों में पारिभाषित करने का उद्यम किया। उनका मत था कि देशभक्त जन्मते हैं, बनाए नहीं जाते और उसका बोध तो मां की गोद से होने लगता है। संक्षेप में यही कहना युक्तिसंगत होगा कि उन्होंने राष्ट्रभक्ति की दससूत्रीय कसौटियों का प्रतिपादन किया। उन्होंने संघ-स्थापना के उद्देश्य को सामने

पथ-संचलन का एक दृश्य

रखते हुये स्पष्ट किया कि 'स्वप्रेरणा से एवं स्वयंस्फूर्ति से राष्ट्र-सेवा का बीड़ा उठानेवाले व्यक्तियों का केवल राष्ट्रकार्यार्थ निर्मित संघ ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ है। प्रत्येक राष्ट्र में उस राष्ट्र के व्यक्ति अपने देश की सेवा करने के लिए ऐसे ही संघ का निर्माण करते हैं। यही हमारा प्रियतम हिंदू राष्ट्र है अर्थात् हिंदुस्थान हमारा कार्यक्षेत्र रहने के नाते उसी के रक्षणार्थ हमने इस देश में संघ स्थापित किया है तथा इसी संघ के आधार पर हमने राष्ट्र की सर्वांगीण उन्नति का निश्चय किया है। इस राष्ट्र-यज्ञ की पूर्णता के लिए डॉ. हेडगेवार ने व्यक्ति-निर्माण की पद्धति पर बल दिया जो शाखारूपी अद्वितीय कार्य-योजना के रूप में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की कार्यपद्धति का मूलाधार बनी।

बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (विजय दशमी, 1925) की स्थापना भारत के भावी सांस्कृतिक जीवन की युगगामी घटना है। नवोन्मेष की यह सांस्कृतिक धारा उसी प्राचीन प्रवाह, जो वेदकाल से सतत रूप से भारतभू पर प्रवाहित हो रही थी, का अनुसरण किया। यद्यपि उस कालखण्ड में ऐसे भी दुराग्रही आलोचक थे जिन्होंने डॉ. हेडगेवार के इन प्राचीन-अर्वाचीन प्रयोगों का उपहास उड़ाया। लेकिन डॉ. हेडगेवार ध्येय-पथ के पथिक थे और उनका अंतःकरण राष्ट्रोत्थान व हिंदू समाज के संगठन, तदनुरूप नवोत्थान के भावों से ओत-प्रोत था। इस भावात्मक अभिव्यक्ति का एकमात्र लक्ष्य था व्यक्ति-निर्माण करते हुए हिंदू समाज का संगठन व भारत की स्वाधीनता की प्राप्ति। इस महामनीषी ने व्यक्ति-निर्माण पर बल देते हुए हिंदू समाज का ध्यान उस विखण्डन की ओर आकृष्ट किया जिसके फलस्वरूप विश्व की इस पुरासंस्कृति व जाति ने हज़ार वर्षों तक परतन्त्रता, पाशविक अत्याचारों को झेला। यही वैचारिक अधिष्ठान उनके राष्ट्रजनित दैवीय कार्य की अलौकिक विशेषता है।

निष्कर्षतः यह कहना ही विषयानुरूप होगा कि डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना के कुछ ही वर्षों में सम्पूर्ण भारत को अपनी वैचारिकी व कार्य-योजना से परिचित करा दिया। डॉ. हेडगेवार ने ब्रह्मलीन होने से पूर्व संघकार्य का बीज सम्पूर्ण भारत में बिखेर दिया था। संघ शिक्षा वर्ग में पूरे देश से आए हुए स्वयंसेवकों के समक्ष अपनी अंतिम भावाभिव्यक्ति में उन्हें यह संतोष था कि '**आज मैं अपने सामने हिंदू राष्ट्र की छोटी-सी प्रतिमा देख रहा हूं।**' जैसा कि प्रमुख विचारक डॉ. देवेन्द्र स्वरूप ने कहा है, 'डॉक्टरजी द्वारा प्रदत्त अखिल भारतीय दृष्टि का ही परिणाम था कि उनकी मृत्यु के बाद भी संघ तेजी के साथ पूरे भारत में फैलता चला गया और देश के कोने-कोने में उसकी शाखाएं विद्यमान हैं।'

निश्चित ही आज संघ सम्पूर्ण भारत में अपने विभिन्न प्रकल्पों व अवदानों के माध्यम से राष्ट्रोत्थान के कार्यों को पूर्ण करने में लगा है। वस्तुतः संघ-स्थापना से वर्तमान भारत को जो भी नवचेतना प्राप्त हुई है, उसका विश्लेषण राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के बिना पूर्ण नहीं हो सकता । संघ के सामने भगवान् श्रीराम का आदर्श चरित्र है। जिस प्रकार भगवान् श्रीराम ने लोकशक्ति के जागरण व संगठन के द्वारा आसुरी शक्ति का विनाश किया, उसी प्रकार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ लोकशक्ति के जागरण व संगठन के द्वारा समाज-परिवर्तन का जो कार्य विगत 90 वर्षों से कर रहा है, वह भारत के सुखद भवितव्य का परिचायक है। ■

सेवा परमो धर्म :

नारायण सेवा संस्थान

सेवा की उड़ान

विजय माथुर
(स्वतंत्र पत्रकार हैं)

कोई आधी शती पूर्व प्रख्यात फ़िल्मकार श्री व्ही. शांताराम को एक बीमारी के कारण चार महीने तक आंखों पर पट्टी बांधे रहना पड़ा। अंधकार के दिनों में उन्होंने अपनी चेतना में एक रंगीन भड़कीली फ़िल्म की कल्पना कर ली और बीमारी को ठेंगा दिखा दिया। उपचार के बाद उन्होंने 'नवरंग' फ़िल्म का निर्माण किया, जिसका नायक एक कवि होता है, जो अपनी प्रेरणा के पीछे ही पागल रहता है। अंत में ही समझ पाता है कि कल्पना में देखी प्रेयसी कोई ओर नहीं बल्कि उसकी अपनी पत्नी ही है। अंधकार में अपने इस सद्विचार ने व्ही. शांताराम को लोकप्रियता के शिखर पर ही नहीं पहुंचाया बल्कि फ़िल्म-जगत् में अविश्वसनीय कथा पर फ़िल्म रचने का मिथक गढ़ने का श्रेय भी दिया। कालांतर में इन्हीं शांताराम ने कैदियों को सुधारने की थीम पर फ़िल्म 'दो आंखें, बारह हाथ' का निर्माण किया। यह एक नया 'विचार' था, जिसने प्रयोगवादी फ़िल्मों में नवाचार की आधारशिला रखी और शांताराम को अतुलनीय रचनाकार के रूप में स्थापित कर दिया। कहावत है कि प्रत्येक सद्विचार अनायास ही उत्पन्न नहीं होता। उसके मूर्त रूप लेने के लिए कुदरत परिस्थितियां गढ़ती है। **डॉ. कैलास अग्रवाल 'मानव'** के जीवन में भी ऐसा वक्त आया जब समय ने करवट ली और ईश्वर-प्रदत्त प्रेरणा से उन्होंने स्वास्थ्य-सेवा के क्षेत्र में पीड़ित मानवता के प्रति समर्पित

नारायण सेवा संस्थान को आकार दिया। अत्याधुनिक परिचर्या से समृद्ध यह संस्थान पिछले तीन दशकों के अथक प्रयासों के बाद एन.जी.ओ. के क्षेत्र में मानक बन चुका है ।

पीड़ित मानवता की निःस्वार्थ सेवा के क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज का रूपक बने इस संस्थान में पोलियो, सेरेबल पॉल्सी तथा गम्भीर अस्थि-रोगों के कारण अपंग या अपाहिज हो चुके लोगों का उपचार किया जाता है। स्वास्थ्य-सेवा अमूमन विशाल और जटिल होती है और उसमें जल्दी बदलाव सम्भव नहीं होता। लेकिन नये विचार, नया नज़रिया, नये संकल्पों के साथ आर्थिक रूप से विपन्न और पारिवारिक संचेतना गंवा चुके बेसहारा लोगों की सेवा इस संस्थान का मूलमंत्र है। वाकई यह संस्थान स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में एक नया और अनूठा अध्याय लिख रहा है। नैराश्य की स्थितियों में डूबते लोगों को उबारने के लिए यह संस्थान संवेदना का ऐसा जहाज बन गया है जो मनुष्य को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाता है। कवि शैलेन्द्र के गीत की ये पंक्तियां इस संस्थान पर बखूबी लागू होती हैं : **'चलते-चलते थक गया मैं और सांझ भी ढलने लगी तब राह खुद मुझे बाहों में लेकर चलने लगी।'** इस संस्थान की बुनियाद में संवेदना के शब्द इस भावना के साथ ऊलीचे गए हैं कि, 'यह धर्मार्थ संस्थान अस्पताल से संबद्धता के साथ मानसिक रूप से विकलांग तथा शारीरिक रूप से अपंग बच्चों के उपचार के लिए विभिन्न धर्मप्राण संस्थाओं और व्यक्तियों का आर्थिक सहयोग अर्जित कर चुका है और यह प्रक्रिया अभी भी सतत रूप से जारी है।' निर्बल को सबल बनाने से अभिमंत्रित यह संस्थान पूरी तरह पीड़ित मानवता की सेवा की संस्कृति में रचा-बसा है । संस्थान के सूत्रों का कहना है कि, 'आर्थिक सहयोग में अभिवृद्धि के सार्थक प्रयासों के साथ ही हम बेहतर-से-बेहतर सेवा उपलब्ध करवाते हैं तथा शारीरिक और मानसिक विकारों की चुनौती झेल रहे लोगों को उपचार के लिए गुणवत्तापूर्ण सेवाएं उपलब्ध करवाते हैं। बुद्धिजीवियों का इस मामले में एकमत है कि यह संस्थान मानव-सेवा का अप्रतिम केन्द्र बन रहा है।

ग़रीब, ज़रूरतमंद और शारीरिक रूप से विकारग्रस्त लोगों को संवाद और बोलचाल के योग्य बनाने के साथ उन्हें इस बात का व्यावसायिक प्रशिक्षण भी दिया जाता है कि वे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनकर जीवन-निर्वाह कर सकें। उपचार के लिए सभी सेवाएँ उन्हें मुफ़्त उपलब्ध करवाई जाती हैं। स्वस्थ होने के पश्चात् उनके पुनर्वास की भी व्यवस्था है। उन्हें प्रशिक्षण के लिए विशेषज्ञों तथा वालंटियर्स की सेवाएं ली जाती हैं। स्पष्ट है कि विकलांग, लाचार और बेबश लोगों के पुनर्वास की दिशा में धर्मार्थ संस्थाओं का आर्थिक सहयोग कितनी बड़ी भूमिका का निर्वाह कर रहा है। सूत्र बताते हैं कि शारीरिक और मानसिक रूप से विकारग्रस्त बच्चों के अंधेरे जीवन में उजाला भरने के लिए संस्थान द्वारा किस स्थिति तक सार्थक और श्रमसाध्य प्रयास किए जाते हैं। यह सहयोग सीधे-सीधे मन की अतल गहराइयों को स्पर्श करता है। सहज ही प्रश्न उठता है कि जब आप किसी निर्बल, लाचार और और अपाहिज के लिए अपने सामर्थ्य के अनुसार सहयोग करते हैं तो आपको कितना सुकून मिलता है।

पीड़ित मानवता की सेवा महज़ पराये दुःख से द्रवित होने की औपचारिकतामात्र नहीं है। बल्कि वह इससे परे जाकर आत्मा का अंश बनती है और विचार-प्रक्रिया का केन्द्र बन जाती है। नारायण सेवा संस्थान इसी विचार-प्रक्रिया का उद्गम है, जिसका बीजारोपण अनायास ही घटित एक घटना से हुआ।

बात मई 1976 की है। उस रोज़ डॉक्टर कैलास अग्रवाल 'मानव' किसी कार्यवश सिरोही जा रहे थे। जब वे पिंडवाड़ा के निकट पहुंचे तो उन्होंने एक यात्री-बस को दुर्घटनाग्रस्त देखा जिसे ट्रक ने टक्कर मार दी थी। दुर्घटना काफ़ी ज़बरदस्त थी। दुर्घटना-स्थल पर घायलों की चीख-पुकार से कोहराम मचा हुआ था। ख़ौफनाक घटना से स्तब्ध डॉक्टर मानव एक पल भी गंवाए बिना घायलों की मदद के लिए दुर्घटनास्थल पर पहुंच गए

सेवा परमो धर्म :

तथा स्थानीय लोगों की मदद से उन्हें सिरोही के जिला अस्पताल में पहुंचाया ।इसके बाद भी वे नियमित रूप से घायलों की ख़ैर-ख़बर लेने के लिए अस्पताल जाते रहे। एक दिन कुछ आवश्यक कार्य में व्यस्त होने के कारण उनकी दिनचर्या में विघ्न आ गया और वे अस्पताल न जा सके। अगले दिन बड़े तड़के उन्होंने किसी को अपने दरवाजे पर दस्तक देते सुना ।उन्होंने तत्काल दरवाजा खोला तो देखा कि दरवाजे पर एक दुबला-पतला कमज़ोर व्यक्ति अपनी दस-बारह साल की बच्ची के साथ खड़ा है। उनकी आंखों से झर-झर आंसू बह रहे थे। डॉक्टर मानव ने उन्हें देखते ही पहचान लिया। दोनों घायलों में से एक थे, जिन्हें उन्होंने अस्पताल में दाखिल कराया था। आश्चर्यचकित डॉक्टर मानव ने उसे इतनी सुबह आने का कारण पूछा। वह शख़्स बड़ी आजिजी के साथ बोला, 'बाबूजी ! कल आप हमें देखने अस्पताल नहीं आए ? तभी से मेरी बेटी रो-रोकर बेहाल है कि आप हमें देखने क्यों नहीं आये। लड़की आपसे मिलने की ज़िद पकड़े हुए थी, इसलिए मुझे इसे लेकर यहां आना पड़ा ।दोनों पिता-पुत्री डॉक्टर मानव के लिए पूरी तरह अपरिचित थे। डॉक्टर पिछले दस दिनों से नियमित रूप से अस्पताल जा रहे थे तो प्रत्येक मरीज़ से स्नेह और प्यार-दुलार के साथ उनका हाल-चाल पूछ रहे थे। डॉक्टर मानव यह जानकर हैरान रह गए कि मात्र दस दिन में अस्पताल में भर्ती घायल उनसे अपनेपन का इतना प्रगाढ़ रिश्ता बना बैठे थे कि उनकी एक दिन की अनुपस्थिति से बिछोह की वेदना से बिलख उठे! उनका अपार स्नेह देखकर डॉक्टर मानव इतने द्रवित हुए कि उनकी आंखें छलक उठीं। इसके बाद डॉक्टर मानव ने घायलों की सार-संभाल के लिए अस्पताल जाने की दिनचर्या में एक दिन की भी चूक नहीं की। घायलों के अपरिमित स्नेह ने डॉक्टर मानव का जीवन ही बदल दिया। हालांकि घायल मरीज़ कुछ दिनों बाद भले-चंगे होकर अपने-अपने घर चले गये, लेकिन वे डॉक्टर मानव को मानव-कल्याण की एक नयी दिशा दे गये। अब नियमित रूप से अस्पताल जाना, वहां उपचार के लिए भर्ती मरीज़ों से आत्मीयता से पूछताछ करना उनकी दिनचर्या में शामिल हो गया। कुछ दिनों बाद उनका स्थानान्तरण उदयपुर हो गया। लेकिन उनकी दिनचर्या में कोई अन्तर नहीं आया। डॉक्टर मानव प्रतिदिन सरकारी अस्पताल जाते, वहां भर्ती मरीज़ों की ख़ैर-ख़बर लेते, यहां तक कि ज़रूरतमंदों के लिए दवाइयाँ आदि उपलब्ध कराना, उन्होंने अपनी दिनचर्या में शामिल कर लिया।

उनकी दिनचर्या निर्विघ्न रूप से चल रही थी कि तभी उनके जीवन में अचानक ऐसा मोड़ आया जिसने उनके जीवन की धारा ही बदल दी। एक दिन जब वह रोज़मर्रा की तरह अस्पताल पहुंचे, उस समय किचन स्टॉफ मरीज़ों को खाना सर्व कर रहा था, तभी डॉक्टर मानव की नज़र एक बूढ़े व्यक्ति पर पड़ी, जिसके पास तीन रोटियां थीं। एक रोटी खाने के साथ वह दो रोटियां तकिये के नीचे छिपाने की कोशिश कर रहा था। उसकी हरकत से चकित डॉक्टर मानव की उत्सुकता जाग उठी कि आख़िर वह ऐसा क्यों कर रहा था। उसका नाम किश्नाजी भील था, डॉक्टर मानव तत्काल उसके पास पहुंचे। उन्होंने पूछा, 'बा,

साब' क्या बात है? क्या तुम्हें ठीक से भूख नहीं लगती? आखिर क्यों तुम चपातियों को तकिये के नीचे छिपा रहे हो? डॉक्टर मानव का सवाल सुनकर बूढ़े व्यक्ति की आंखें डबडबा आयीं। उसने हिचकते हुए कहा, 'बाबूजी, मै तो अभी भी भूखा हूं। लेकिन मेरी देखभाल करनेवाले मेरे भाई और बेटे ने सुबह से कुछ नहीं खाया। उनके पास खाने को कुछ भी नहीं है। इलाज़ के लिए बड़ी मुश्किल से उधारी लेकर जो पैसा जुटाया था, वह मेरी दवाइयों में खर्च हो गये। अगर मैं तीनों रोटियां खा लेता तो मेरा बेटा और भाई भूखे रह जाते ।इसलिए मैंने रोटी उनके लिए छिपाकर रख ली । यह कहते हुए बूढ़ा फूट-फूटकर रोने लगा। अपनी कमज़ोरी के कारण बूढ़ा व्यक्ति इससे ज़्यादा कुछ नहीं कह सका। लेकिन इस घटना ने डॉक्टर मानव को बुरी तरह मर्माहत कर दिया। अगले दिन दशहरा था। उन्होंने पूरा वाकया अपने एक मित्र को बताया। दोनों ने मिलकर तय किया कि वे किश्नाजी-जैसे लोगों की हरसंभव मदद करेंगे। तब उन्होंने आस-पास के लोगों से इस मामले में सहयोग मांगा। डॉक्टर मानव अपने मित्र के साथ उनसे प्राप्त किया गया भोजन नियमित रूप से अस्पताल में भर्ती रोगियों के ग़रीब परिजनों और तीमारदारों में बांटने लगे।

इसके साथ ही पीड़ित मानवता की सेवा के क्षेत्र में एक नये इतिहास ने करवट ली। यह 23 अक्टूबर, 1985 की बात है, ग़रीब और ज़रूरतमंद लोगों के लिए भोजन जुटाने के अभियान को व्यवस्थागत रूप देकर उन्होंने इस सेवा प्रकल्प को 'नारायण सेवा' का नाम दिया। डॉक्टर मानव की पत्नी श्रीमती कमला देवी अग्रवाल भी धार्मिक संस्कारों से ओत-प्रोत थीं, पति का संकल्प देखकर वह भी उनके साथ खड़ी हो गयीं। मरीज़ों के ग़रीब परिजनों के लिए भोजन जुटाने में डॉक्टर मानव की पुत्री कल्पना (अब श्रीमती कल्पना गोयल) भी उनके साथ इस पुनीत कार्य में जुट गई। पीड़ित मानवता की सेवा के क्षेत्र में डॉक्टर मानव परिवार का यह संकल्प आज 'नारायण सेवा संस्थान' के रूप में विराट् वृक्ष का रूप ले चुका है।

नारायण सेवा संस्थान भारत के परम्परागत सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति पूरी तरह समर्पित है। विभिन्न अवसरों पर आयोजित

निर्बल को सबल बनाने से अभिमंत्रित यह संस्थान पूरी तरह पीड़ित मानवता की सेवा की संस्कृति में रचा-बसा है। संस्थान के सूत्रों का कहना है कि, 'आर्थिक सहयोग में अभिवृद्धि के सार्थक प्रयासों के साथ ही हम बेहतर-से-बेहतर सेवा उपलब्ध करवाते हैं तथा शारीरिक और मानसिक विकारों की चुनौती झेल रहे लोगों को उपचार के लिए गुणवत्तापूर्ण सेवाएं उपलब्ध करवाते हैं।

होनेवाले कार्यक्रमों में सामाजिक दायित्वों, धार्मिक सरोकारों तथा नैतिक मूल्यों के प्रति गहरा आग्रह स्पष्ट परिलक्षित होता है । संस्थान भारतीय संस्कृति के सभी आधारभूत सूत्रों का पूरी तरह अनुगमन करता है, जिनमें सरलता, सदाशयता, ईमानदारी और करुणाभाव को मानवीय गुणों की दृष्टि से अपरिहार्य बताया गया है। संस्थान में समय-समय पर विद्वज्जनों को आमंत्रित कर रामायण, भागवत आदि धार्मिक ग्रन्थों के व्याख्यान आयोजित किए जाते हैं, ताकि लोग जीवन-मूल्यों की सार्थकता को भली-भांति समझ सकें और उन्हें अपने जीवन में उतारने की पहल करें। विद्वानों के व्याख्यान ग़रीबी की मार सहते लोगों के प्रति उनमें आर्द्रभाव जगाते हैं। व्यावहारिक जीवन में संवेदना और करुणा की महत्ता समझाते हैं । उन्हें इस बात के लिए प्रेरित करते हैं कि ऐसे सत्कार्य करें ताकि समाज में जीवन-मूल्य यथावत् कायम रह सकें। इन सभी आयोजनों के परिप्रेक्ष्य में संस्थान का उद्देश्य लोगों में पीड़ित मानवता के प्रति ज़्यादा-से-ज़्यादा करुणा भाव जागृत करना है। संस्थान का उद्देश्य दयालु और समृद्ध लोगों को इस बात के लिए भी प्रेरित करना है कि वे ज़रूरतमंद, अपाहिज और ग़रीबों के लिए संचालित सेवाभावी गतिविधियों में भागीदार बन सकें। यहां कुछ ऐसी लोगों का उल्लेख करना प्रासंगिक होगा जो शारीरिक ओर मानसिक अपंगता के कारण जीवन हार चुके थे, लेकिन संस्थान में आने के बाद उनके अंधेरे जीवन में रोशनी का संचार हुआ।

जीवन में कभी-कभी स्थितियां अत्यंत दुःखद मोड़ ले लती हैं जब परिवार में पहली संतान उत्पन्न होने को लेकर उल्लास और उत्साह उस वक्त उफनते झाग की तरह बैठ जाता है जब पता चलता है कि संतान पोलियोग्रस्त है। इस मामले में एक सुरेन्द्र मोहन (परिवर्तित नाम) की आपबीती तो मन को बुरी तरह सालती है। वह कहते हैं कि जब मैं दो साल का था, तभी अचानक परिजनों को पता चला कि मुझे पोलियो है। इतनी सांघातिक ख़बर ने मेरे पिता को तो लगभग पागल ही कर दिया। उपचार के लिए मेरे पिता मुझे दिल्ली, मुम्बई,अहमदाबाद, सूरत आदि शहरों में ले गए, लेकिन सभी प्रयास निरर्थक रहे। इन्हीं दिनों मेरे चाचा ने नारायण सेवा संस्थान के बारे में सुना तो वह मुझे उदयपुर ले गए जहां पहली अक्टूबर, 1997 को मेरा ऑपरेशन हुआ। वहां हमसे इसका कोई शुल्क नहीं लिया गया। सुरेन्द्र बताते हैं कि मैं चार माह तक नारायण सेवा संस्थान में रहा। लेकिन मुझे सभी सुविधाएँ निःशुल्क उपलब्ध करवाई गयीं। संस्थान की मदद यहीं तक सीमित नहीं रही, बल्कि मुझे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने का अवसर भी दिया गया। संस्थान में मुझे रिसेप्शन रूम का प्रभारी बना दिया गया।

यहां एक अन्य व्यक्ति का ज़िक्र करना भी समीचीन होगा।यह व्यक्ति पैदाइशी तौर पर ही अपंग था। उसने अपनी स्कूली और कॉलेज़ी शिक्षा नियमित रूप से कक्षाओं में उपस्थिति दर्ज़ कराते हुए पूरी की। अपने छात्र-जीवन में उसने विभिन्न स्पर्द्धाओं में भाग लेते हुए कई पुरस्कार भी जीते।इनमें निबंध-लेखन से लेकर डांस-प्रतियोगिताएँ भी शामिल थीं। उसने 78 प्रतिशत अंक अर्जित करते हुए

सेवा परमो धर्म :

नारायण
सेवा संस्थान
उदयपुर

नारायण सेवा संस्थान में ग़रीब, ज़रूरतमंद और शारीरिक रूप से विकारग्रस्त लोगों को संवाद और बोलचाल के योग्य बनाने के साथ उन्हें इस बात का व्यावसायिक प्रशिक्षण भी दिया जाता है कि वे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनकर जीवन-निर्वाह कर सकें। उपचार के लिए सभी सेवाएँ उन्हें मुफ़्त उपलब्ध करवाई जाती हैं। स्वस्थ होने के पश्चात् उनके पुनर्वास की भी व्यवस्था है। उन्हें प्रशिक्षण के लिए विशेषज्ञों तथा वालंटियर्स की सेवाएं ली जाती हैं।

कंप्यूटर में डिप्लोमा किया। चकित करनेवाली बात है कि उसके पांव नहीं थे, किन्तु उसने 600 के लगभग डांस प्रोग्राम दिये। यह चमत्कार नारायण सेवा संस्थान के सहयोग से ही सम्भव हो सका, जिसकी छत्रछाया में वह अपने अपंग-जीवन की शुरुआत में ही चला गया। युवक का कहना है कि अब मैं भी अपाहिज लोगों को नया जीवन जीने के लिए प्रोत्साहित करता हूं। फिलहाल संस्थान के रिसेप्शन-रूम में आनेवाले मेहमानों के स्वागत-सत्कार के साथ अपाहिज लोगों को नये सिरे से जीवन जीने के लिए प्रोत्साहित करता हूं।

दिनांक 02 फरवरी, 1972 को पैदा हुआ शीशराम एक साधारण परिवार से था। उसके पिता किसान थे। पैदाइश के चार साल बाद ही उस पर जैसे पहाड़ टूट पड़ा। विटामिन की कमी के कारण उसकी आंखों की रोशनी चली गयी। आर्थिक रूप से विपन्नता के कारण शीशराम का इलाज़ सम्भव नहीं था। नतीज़तन तेरह साल की उम्र तक तो वह पढ़ाई से वंचित रहा। शीशराम का एक भाई अहमदाबाद में रहता था। उसने शीशराम को अहमदाबाद के नवरंगपुरा-स्थित अंसाला ब्लाइंड स्कूल में दाख़िल करा दिया। एक साल तक यहां पढ़ाई करने के बाद उसने वस्त्रापुर स्थित ब्लाइंड ट्रिपल स्कूल में फिज़ियोथेरेपी का कोर्स भी किया। लेकिन अंधता जीवन में बाधा बनी रही। आख़िर वह उदयपुर- स्थित नारायण सेवा संस्थान में पहुंचा जहां उसे एक नयी ज़िन्दगी शुरू करने का अवसर मिला। कालांतर में शीशराम ने एक नेत्रहीन लड़की से विवाह कर लिया। अब वह संस्थान में ही फिज़ियोथेरेपिस्ट के रूप में काम कर रहा है। शीशराम का कहना है कि, 'मैं अपाहिजों को ईश्वर की आंखों से देखता हूं। मैं ईश्वर को धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने मुझे अपाहिज लोगों की सेवा का अवसर दिया।'

उदयपुर-स्थित हिरणमगरी निवासी 35-वर्षीय मांगीलाल कहते हैं,'अब मेरी ज़िंदगी पूरी तरह खुशहाल है।' अपनी पोलियोग्रस्त ज़िन्दगी को याद करते हुए उनकी आंखें भर आती हैं। मांगीलाल बताते हैं कि जब मैं मुश्किल से एक साल का था, मुझ पर पोलियो का अटैक हुआ और मैं पूरी तरह लाचार हो गया। हर कोई फिक्रमंद था कि मेरा भविष्य क्या होगा ? क्या मैं जीवनभर के लिए लोगों पर बोझ बन जाऊंगा ? लेकिन मैं नारायण सेवा संस्थान का शुक्रिया अदा करता हूँ कि जिसने मेरी ज़िन्दगी को गर्त में जाने से बचा लिया और मुझे लोगों की सेवा का अवसर दिया। विगत पाँच सालों में मेरे द्वारा बनाए गए कैलिपर्स से अपंग लोग अपने पांवों पर चलने लगे हैं। मैं और मेरा परिवार पूरी तरह खुशहाल हैं। ऐसे ही ग़रीब माता-पिता की संतान एक युवक का कहना है कि शारीरिक रूप से मैं पूरी तरह अपाहिज हो गया था, मेरी ज़िन्दगी में पूरी तरह अंधेरा छा गया था। पिता की असमय मृत्यु हो जाने से पूरा परिवार संकट में था। हमारा पेट भरने के लिए मेरी मां लोगों के खेतों में काम करके पैसे जुटाती थी। आख़िरकार कुछ करने की मंशा से मैंने आठ साल की उम्र में ही घर छोड़ दिया और उदयपुर आ गया। रास्ते में मुझे नारायण सेवा संस्थान का बोर्ड नज़र आया। यहां मेरा निःशुल्क ऑपरेशन किया गया। स्वस्थ होने के बाद मैं संस्थान के संस्थापक डॉक्टर मानव से मिला। मैंने उनसे कहा, 'मैं इस संस्थान में रहकर सेवा करना चाहता हूं।' उनके आदेश से मुझे बालगृह में रखा गया। मुझे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने के लिए संस्थान ने हरसम्भव प्रयास किया। मुझे अपने बूते खड़ा होना था। इसलिए पूरा दिल लगाकर काम किया। आज मैं संस्थान में टेक्नीशियन के पद पर काम कर रहा हूं और संस्थान के अस्पताल में अपंग व्यक्तियों के ऑपरेशन के बाद उनके पांवों में प्लास्टर लगाने का काम करता हूं। इस सेवा ने मुझे आर्थिक रूप से भी आत्मनिर्भर बना दिया है।

'नारायण सेवा संस्थान की स्थापना सेवा के इतिहास में एक ऐसी निःस्वार्थ दुर्लभ घटना है, जो विकलांगों को निःशुल्क स्वास्थ्य-लाभ के साथ उन्हें रोज़ग़ार उपलब्ध करवाकर आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने का अवसर भी देती है। संस्थापक डॉक्टर कैलास अग्रवाल 'मानव' के बारे में संस्थान से स्वास्थ्य लाभ कर खुशहाल जीवन जीनेवालों का कहना है कि, 'उन्हें देखकर लगता है कि, 'आप एक देवपुरुष की उत्कृष्टता का नज़दीक से दर्शन कर पा रहे हैं। दिलचस्प बात है कि डॉक्टर मानव ने स्वास्थ्य-सेवा के स्वतंत्र बाज़ार की असीमित ताकतों के बीच सेवा का एक ऐसा प्रकल्प स्थापित किया है, जो हमारी भारतीय संस्कृति और नैतिक मूल्यों के प्रति श्रद्धाभाव जगाता है। निर्बल को सबल बनाने का यह तंत्र लोगों में विश्वास जगाता है कि धूप-छाँव के किसी भी दौर में उन्हें अपना संतुलन नहीं गंवाना है। भारत के सांस्कृतिक इतिहास में महान् आत्माओं का आविर्भाव इसी तरह होता रहा है। ■

साक्षात्कार : डॉक्टर कैलास चंद अग्रवाल

करुणा के स्रोत ने मानव को बनाया 'महामानव'
सेवा का अंकुर फूटा तो विराट् वटवृक्ष बना

भारत के दो ही राष्ट्रीय आदर्श हैं : त्याग और सेवा। इन दोनों को घनीभूत कर दीजिए तो जिस देहधारी का अवतरण होगा, वह डॉक्टर कैलास चंद अग्रवाल के सदृश ही होगा। डॉ. अग्रवाल की शख़्सियत में प्रेम और करुणा की मानवीय भावनाएँ मौज़ मारती नज़र आती है। 'मानव' उपनाम से अलंकृत डॉ. अग्रवाल पीड़ित मानवता की सेवा में जुटे ऐसे महाकाय 'महामानव' हैं जिनका व्यक्तित्व प्रत्येक परिस्थितियों में प्रासंगिक और कल्याणकारी बना रहा है। आज के आधुनिक समाज में डॉ. 'मानव' व्यवहार और कर्तव्यपरायणता की दृष्टि से सर्वथा आदर्श चरित्र कहे जा सकते हैं। काव्य की भाषा में कहा जाता है कि, 'कविता निकली करुणा के स्रोत से।' संभवतः डॉ. 'मानव' का जन्म भी ऐसे ही स्रोत से हुआ होगा। उनके व्यक्तित्व में प्रतिपल संतप्त मानवता के लिए संवेदना की प्रतिध्वनि सुनाई देती है। रेतीले राजस्थान के उदयपुर में 'नारायण सेवा' के लिए समर्पित 'नारायण सेवा संस्थान' डॉ. मानव की इस संवेदनशील परिकल्पना का ही प्रतिरूपण है। 'पद्मश्री' से अलंकृत डॉ. मानव संस्थान के प्रबंध-न्यासी हैं। यहाँ प्रस्तुत है डॉ. 'मानव' से बातचीत के अंश —संपादक

अपनी पारिवारिक पृष्ठभूमि, बाल्यकाल और कॅरियर की शुरूआत आदि के बारे में बताइये। आपके जीवन-दर्शन पर किसका असर ज़्यादा रहा ?

मेरा जन्म व्यवसायी परिवार में हुआ, पिताजी जाने-माने कारोबारी थे। माँ अत्यंत धर्मपरायण थीं। घर में संत-समागम, कथा-प्रवचन आदि नित्य की बातें थीं। परिवार में विद्वज्जनों का आना-जाना था, इसलिए बचपन से ही मेरा रुझान अध्यात्म की तरफ़ रहा। तत्कालीन देशकाल में स्वीकृत मूल्य, संस्कार, संस्कृति और परम्पराओं ने मेरा काफ़ी ज्ञानार्जन किया। धर्मग्रंथों को पढ़ने-सुनने की भी जिज्ञासा रहती थी। इसलिए मानसिक विकास भी वैसा ही हुआ। एक अंतर्प्रेरणा सदैव मन में रहती थी कि लोगों का दुःख बाँटना चाहिये। सब कुछ माँ की सीख थी, यही वजह रही कि सत्कर्मों और दीन-दुःखियों की सेवा के प्रति मन में सदैव आग्रह बना रहा। संस्कार ही ऐसे मिले कि मन में किसी भी बात को लेकर दुराग्रह नहीं, विनम्रता का भाव रहा । प्रारम्भिक शिक्षा-दीक्षा तो भींडर में हुई। कालांतर में आगे की पढ़ाई भीलवाड़ा ज़िले में पूरी की। विवाह हो गया तो पिताजी के साथ कारोबार में हाथ बँटाना शुरू कर दिया। मन में निष्ठा और मेहनत का भाव तो बचपन से ही प्रबल था। इसी का परिणाम था कि व्यावसायिक क्षेत्र में भी मैंने अपनी अच्छी पहचान बना ली। सब कुछ ईश्वर की अनुकम्पा से हुआ।

आपने व्यवसाय से किनारा क्यों कर लिया ?

व्यवसाय ऐसा क्षेत्र है जहाँ ऊँच-नीच ज़्यादा होती है। ऐसे कई अवसर आते हैं जब आपके संस्कार कुछ अन्यथा करने की अनुमति नहीं देते। शायद होनी प्रबल थी। इसलिए अच्छे-भले चलते कारोबार में ज़बर्दस्त झटका लगा। संभालना मुश्किल हो गया। लेकिन संभालना ज़रूरी था। आत्मशक्ति प्रबल थी, इसलिए धीरज नहीं खोया। व्यापार छोड़कर भारत सरकार के डाक-तार विभाग में नौकरी कर ली । जीवन फिर से नये सिरे से चल निकला...

सरकारी नौकरी करते हुए ऐसा क्या हुआ कि एकाएक पीड़ित मानवता की सेवा में जुट गए इस क़दर कि 'नारायण सेवा संस्थान'-जैसा सेवा का विराट् प्रकल्प खड़ा कर दिया ?

हाँ ! ऐसी ही घटना थी, जिसने मुझे आहत किया तो मानवसेवा के लिए प्रेरित भी किया। यह दुर्घटना उदयपुर के पिंडवाड़ा क्षेत्र में हुई थी। तब मैं उधर से गुजर रहा था। एक बस-दुर्घटना में यात्री इतनी बुरी तरह हताहत हुए कि मेरी आगे की यात्रा टल गई और घायलों को अस्पताल पहुँचाने की व्यवस्था में जुट गया। उनकी वेदना मन को बुरी तरह बींध गई थी। इसलिए मन वहाँ से जाने को नहीं हुआ। यहाँ तक कि उपचार के दौरान भी उनकी ख़ैर-ख़बर लेने अस्पताल जाता रहा। कुछ ऐसे भी लोग थे जो आर्थिक दृष्टि से बुरी तरह विपन्न थे। घायलों को तो अस्पताल से भोजन मिल रहा था, लेकिन उनके तीमारदार भूख से बेहाल थे। संस्कार ही ऐसे नहीं थे कि किसी को भूखा देख पाता। नतीज़तन अस्पताल जाने के साथ ही पास-पड़ोस के लोगों से आटा-दाल जुटाने की शुरूआत की ताकि घायलों के परिजनों के लिए भी भोजन का बंदोबस्त हो सके। इस पुनीत कार्य में मेरी पत्नी भी मेरा संबल बनी रही। पीड़ित मानवता के प्रति करुणाभाव ने ही मुझे 'नारायण सेवा संस्थान' की स्थापना के लिए प्रेरित किया। मैं इस मामले में अपने आपको 'स्व' की भावना से अलग रखते हुए सब कुछ ईश्वर-प्रेरित मानता हूँ। शुरूआती दौर में संस्थान का लघु रूप ही था : 'नारायण सेवा'। कालांतर में बढ़ती आवश्यकताओं और लोगों के सहयोग से यह 'नारायण सेवा संस्थान' में बदल गया। लेकिन संस्थान के रूप में इस प्रकल्प की शुरूआत 1985 में हुई। आपको याद होगा इसी दौरान उदयपुर संभाग में भयंकर अकाल पड़ा। अपने लक्ष्य के अनुरूप हमने अभावग्रस्त क्षेत्रों में शिविर लगाए और ज़रूरतमंदों को भोजन-वस्त्र और दवाइयाँ उपलब्ध करवाई गयीं।

आपने इन गाँवों में स्थायी रूप से किसी नये प्रकल्प की भी स्थापना की थी ?

हाँ। गाँवों में गरीब-अनाथ बच्चों को नंगे-भूखे भटकते देखना मेरे लिए त्रासद था। स्थायी रूप से उनकी परवरिश और निःशुल्क शिक्षा-दीक्षा के लिए 15 दिसम्बर, 1990 को 'भगवान् महावीर अनाथालय' की स्थापना की ।

विकलांगों के पुनर्वास की दिशा में आपने काफ़ी कुछ किया है।

अब यह तो मैं क्या कहूँ ? लेकिन जब मैंने सेवा-शिविरों में विकलांगों को लाचारी के साथ घिसटकर चलते देखा, तो मन बड़ा द्रवित हो गया। विकलांगों के पुनर्वास की भी ठान ली और विकलांग सेवा प्रकल्प का भी गठन किया। विकलांगों के उपचार के लिए उन्हें मुम्बई भेजने का प्रबंध किया। किन्तु यह व्यवस्था काफ़ी महंगी और समयखाऊ थी । इसलिए नया विकल्प सोचा। तब समाजसेवी चैनराज लोढ़ा ने मदद को हाथ बढ़ाए तो उदयपुर में निःशक्तजनों की शल्य-चिकित्सा कर उनके पुनर्वास के लिए पोलियो हॉस्पीटल की स्थापना की। इसकी स्थापना 1997 में की गई थी। अभी तक इस अस्पताल में एक लाख 35 हज़ार निःशक्तजनों का सफल उपचार किया जा चुका है। सबसे बड़ी बात यह है कि रोगियों और उनके परिजनों को यहाँ इलाज़ की सभी प्रकार की जाँचें, रिहायश और भोजन इत्यादि निःशुल्क उपलब्ध कराई जाती है।

विकलांगों के उपचार के बाद उनका पुनर्वास तथा आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में क्या किया गया ?

यह एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न है। हमारा दायित्व निःशक्तों के उपचार तक ही पूरा नहीं हो गया बल्कि उन्हें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण-केन्द्र की स्थापना की गई है। इस केन्द्र में टेलरिंग, कंप्यूटर-ऑपरेटिंग, विद्युत-उपकरणों की मरम्मत आदि प्रशिक्षण लेकर विकलांगता से उबरकर लोग इतने प्रवीण हो जाते हैं कि अपना व्यवसाय शुरू कर सकें। इसके काफ़ी अच्छे परिणाम मिले हैं। इससे मुझे गहरी आत्मसंतुष्टि मिली है। आख़िर 'नर' की सेवा ही तो 'नारायण' की सेवा है। ■

चर्चित व्यक्तित्व

डॉ. नरेन्द्र शुक्ल
(इण्डियन काउंसिल ऑफ़ सोशल सायंस रिसर्च, नयी दिल्ली के फेलो हैं।)

नरेन्द्र मोदी

एक स्वयंसेवक, जो बना प्रधान सेवक

विगत दो वर्ष के प्रधानमंत्रित्व के काल में श्री नरेन्द्र मोदी ने सम्पूर्ण विश्व के समकालीन राजनैतिक परिदृश्य में एक अलग पहचान बनाई है। प्रधानमंत्री के रूप में भारत के उत्थान के लिए उनके अनवरत संघर्ष और परिश्रम का लोहा आज उनके धुर विरोधी भी मान रहे हैं। यह पहली बार है जब भारत का कोई प्रधानमन्त्री विश्व की बड़ी-से-बड़ी शक्ति से आंख मिलाकर बात कर रहा है, जबकि छोटी शक्तियों को भी उतना ही सम्मान दे रहा है। आज जब पूरे भारत में एक बार पुनः आशा की किरण बंधी है, तब यह जानना और ज़रूरी हो जाता है कि वह कौन-सी शक्ति है जिसने नरेन्द्र मोदी के व्यक्तित्व को इतनी ऊर्जा प्रदान की है।

वडनगर की प्राचीन सांस्कृतिक धरती पर 17 सितम्बर, 1950 को श्री दामोदरदास व हीरा बा के घर नरेन्द्र दामोदरदास मोदी का जन्म हुआ। आर्थिक हालात ऐसे कि छह भाई-बहन में कोई भी उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं कर सका। किन्तु यह परिवार के संस्कार, अनुशासन और सेवाप्रियता ही थी जिसने सभी में करुणा, अध्यात्म, परस्पर प्रीति और जिज्ञासा का भाव दिया। चायवाले से लेकर प्रधानमंत्री तक के सफ़र की यह आधारभूमि थी।

किन्तु भारत माँ के आंचल की इस कच्ची सोंधी मिट्टी को मां भारती के स्वर्णिम मन्दिर के निर्माण की ईंट बनने के लिए अभी बहुत-बहुत तपना था, जिसकी शुरुआत राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखा से हुई। वडनगर में भागवताचार्य हाई स्कूल के हिंदी-भाषा के आचार्य श्री चंद्रकांत दबे, संघ की शाखा का संचालन करते थे। नरेन्द्र मोदी इसी समय संघ के संपर्क में आये। संघ की शाखा में जो सबसे पहला प्रशिक्षण होता है, वह है 'समरसता'। वहां सब एक दूसरे को नाम से जानते हैं, जात-पांत, ग़रीबी-अमीरी से नहीं। शाखाओं पर अक्सर ऐसे 'चन्दन' (सहभोजन) कार्यक्रम होते रहते हैं जिसमें प्रत्येक स्वयंसेवक अपने घर से कुछ भोजन लाता है और वहां सब एक दूसरे में मिला दिया जाता है। फिर सब मिलकर एक परिवार की तरह खाते हैं। वडनगर के दानेश्वर

श्री नरेन्द्र दामोदरदास मोदी का गौरवमय इतिहास

- **दिनांक 17 सितम्बर, 1950 :** वडनगर में श्री दामोदरदास मोदी व हीराबा के घर नरेन्द्र दामोदरदास मोदी का जन्म
- 1960 : दस वर्ष की आयु में संघ के स्वयंसेवक बने।
- 1967 : 17 वर्ष की आयु में गृह त्याग, हिमालय, ऋषिकेश, रामकृष्ण मिशन आदि में आध्यात्मिक जीवन

एक कार्यक्रम में संघ-प्रार्थना करते हुए श्री मोदी

- 1971 : 21 वर्ष की आयु में संघ कार्यालय को अपना निवास बनाया
- 1972 : राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक बने, बांग्लादेश में पाकिस्तानी सेना द्वारा नरसंहार के विरुद्ध दिल्ली में प्रदर्शन के दौरान गिरफ़्तारी दी
- 1973 : संघ शिक्षा वर्ग (प्रथम वर्ष) नडियाड में
- 1974 : गुजरात में नवनिर्माण आन्दोलन में सक्रिय
- 1975 : संघ शिक्षा वर्ग (द्वितीय वर्ष) बाजवा (बड़ौदा) में
- 1975-77 : आपातकाल के दौरान आपातकाल विरोधी आन्दोलन में सक्रिय
- 1978 : संघ शिक्षा वर्ग (तृतीय वर्ष) नागपुर में, वड़ोदरा में विभाग प्रचारक बनाकर भेजे गये
- 1980 : कुछ समय बाद संभाग प्रचारक का दायित्व
- 03 फरवरी, 1987 : संगठन-सचिव के रूप में भारतीय जनता पार्टी की गुजरात इकाई से जुड़े
- 2001-2014 : लगातार 4 बार गुजरात के मुख्यमंत्री चुने गये
- 26 मई, 2014 : भारत के प्रधानमंत्री चुने गये

संघ के संग...

बालासाहिब देवरस के साथ, 1973

रज्जू भैया के साथ

कुप्प.सी. सुदर्शन के साथ
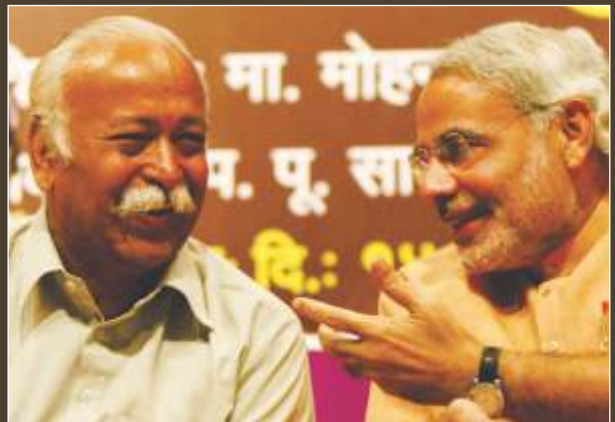
मोहनराव भागवत के साथ, 2008

चर्चित व्यक्तित्व
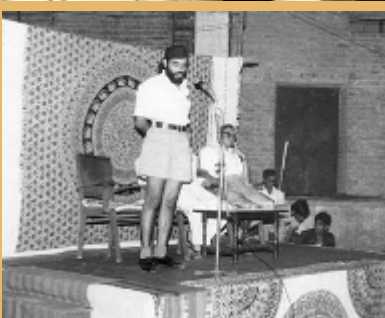
मन्दिर में ऐसे ही एक कार्यक्रम के समय झिझकते हुए खडे एक स्वयंसेवक रमेश ओझा से उनका 'कुल्हर' (बाजरे का आटा, घी और गुड़ से बना एक व्यञ्जन) लेते हुए नरेन्द्र मोदी बोले, 'भैया, सुदामा के चावलों-जैसी इतनी स्वादिष्ट चीज छिपाकर थोड़े ही रखी जाती है।' इस तरह स्वयंसेवकों में समरसता, एकात्मभाव, और भ्रातृभाव– एक ही परिवार के अंगभूत ये संस्कार नरेन्द्र मोदी को बचपन से संघ की शाखा में मिले थे।

संघ की शाखा वस्तुतः एक प्रयोगशाला हैं जहाँ मानव-मूल्य अपने सर्वोच्च रूप में स्वयंसेवकों के मन-मस्तिष्क में 'इनबिल्ड' किए जाते हैं। स्वयंसेवकों को अपने देश और समाज के प्रति जागरूक किया जाता है और यह भाव भरा जाता है कि उनका कष्ट वस्तुतः हमारा कष्ट है। सूरत के पास तापी नदी की बाढ़ से त्रस्त लोग मेरे अपने लोग हैं– जब यह भाव दिन-रात सताता रहा, तब स्वयंसेवक मोदी सावन मेला देखने के लिए खुद को मिले एक रुपये को भी अपने मित्रों के साथ मिलकर मेले मे चाय का ठेला लगाने के लिए खर्च कर देता है और उससे हुई पूरी आय बाढ़-पीड़ितों को समर्पित कर देता है।

प्रत्येक दिन एक घंटे की शाखा में किशोर सीखता है अनुशासन, समर्पण और राष्ट्रप्रेम, जो उसे लगातार देश के लिए उसके कर्तव्यों की याद दिलाता रहता है। वह बीज, जो बचपन में उसके मन-मस्तिष्क में आरोपित किया जाता है, वह जीवनभर फलता-फूलता रहता है। इस प्रकार एक किशोर अपना सर्वस्व देश व समाज पर अर्पित करने के लिए तैयार होता जाता है। यह यूं ही नहीं है कि महज़ बारह साल का बालक नरेन्द्र मोदी भारत-चीन युद्ध के लिए जाते सैनिकों की प्राणपण से सेवा-सुश्रुषा करता है और सिर्फ़ सत्रह वर्ष की आयु में आध्यात्मिक प्रगति के लिए गृह त्याग देनेवाला युवक जब वापस लौटता है, तो वह संघ के प्रचारक के रूप में अपना जीवन राष्ट्र को समर्पित कर देता है। इस तरह सभ्यता, मानव-मूल्यों के जिन दो स्वरूपों में अपने सर्वोच्च को प्रगट करती है, ऐसे दोनों स्वरूप, यथा– साधु और संघ-प्रचारक के रूप में नरेन्द्र मोदी ने स्वयं को राष्ट्र-सेवा के निमित्त समर्पित कर दिया।

अपनी आध्यात्मिक यात्रा से आने के पश्चात् नरेन्द्र मोदी 1971 से संघ कार्यालय पर ही रहने लगे थे। 1972 में औपचारिक रूप से इन्हें संघ का प्रचारक घोषित किया गया। अपने प्रचारक-जीवन में संघ की शाखाओं के प्रसार के साथ जब भी इन्हें कोई अतिरिक्त कार्य सौंपा गया, इन्होंने पूरी लगन के साथ पूरा किया। बिलकुल शुरुआत में डॉ. वणिकर के मार्गदर्शन में विश्व हिंदू परिषद् ने सिद्धपुर में गुजरात सम्मेलन आयोजित किया। इसकी समस्त व्यवस्था का कार्य नरेन्द्र मोदी के हाथों में था। यहां उनके प्रबन्ध-कौशल की सराहना हुई। 1973 में गुजरात में फूड बिल के विरोध में एक विद्यार्थी आन्दोलन चला जिसमे नरेन्द्र मोदी ने अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के साथ जुड़कर अत्यंत सक्रिय भूमिका निभायी। कुछ समय बाद देश में आपातकाल लगा दिया गया। आपातकाल में नरेन्द्र मोदी का जुझारूपन काम आया। इन्होंने न केवल भूमिगत रहकर आपातकाल विरोधी आयोजनों में भाग लिया, बल्कि अन्य राज्यों से सम्पर्क स्थापित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी। इस दौरान उनकी मुलाकात जॉर्ज़ फर्नांडीस से हुई। दोनों ने लोकतंत्र और तत्कालीन तानाशाही पर अपने विचार साझा किए। नरेन्द्र मोदी ने योजनानुसार, आपातकाल का विरोध कर रही श्लोक संघर्ष समिति के अध्यक्ष नानाजी देशमुख से जॉर्ज़ फर्नांडीस की मुलाकात करवायी। आपातकाल के दौरान इन्दिरा गांधी ने राष्ट्रमण्डल देशों के संसदीय प्रतिनिधियों का एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन नयी दिल्ली में आयोजित किया। उस दौरान नरेन्द्र मोदी ने राजधानी दिल्ली में इन्दिरा सरकार को नागवार गुजरनेवाली अनेक पुस्तकें तैयार कर वितरित कीं, जिनके शीर्षक कुछ यूं थे– **भारतीय प्रेस प्रतिबंधित, तथ्य बनाम इंदिरा के झूठ, इन्दिरा गांधी के बीस झूठ, जब क़ानून अवज्ञा एक कर्तव्य हो, और आर्थिक अराजकता का एक दशक** आदि। बाद में मोदी ने उच्च शिक्षाप्राप्ति के दौरान गुजरात में आपातकाल पर अलग से एक पुस्तक लिखी। 1979 में जब मोदी शिक्षा और संघ-कार्य के सिलसिले में दिल्ली में थे, तब संघ के वरिष्ठ प्रचारक श्री दत्तोपंत ठेंगड़ी (1920-2004) ने इनकी आपातकाल पर पहली पुस्तक का आधार लेते हुए आपातकाल पर एक और पुस्तक के लिए शोधकर्ता की भूमिका दी।

संघ की शाखा में जो सबसे पहला प्रशिक्षण होता है, वह है 'समरसता'। वहां सब एक दूसरे को नाम से जानते हैं, जात-पांत, ग़रीबी-अमीरी से नहीं। शाखाओं पर अक्सर ऐसे 'चन्दन' (सहभोजन) कार्यक्रम होते रहते हैं जिसमे प्रत्येक स्वयंसेवक अपने घर से कुछ भोजन लाता है और वहां सब एक दूसरे में मिला दिया जाता है। फिर सब मिलकर एक परिवार की तरह खाते हैं।

1979 में मोदी पुनः गुजरात लौटे। अब उन्हें गुजरात में संघ के 'विभाग प्रचारक' का दायित्व सौंपा गया। इस विभाग में बड़ोदरा, पंचमहल, दहोद, आणंद, और खेड़ा जिले थे। कुछ ही दिनों बाद इनके कार्यक्षेत्र में सूरत विभाग भी जोड़ दिया गया। इस प्रकार वह 'संभाग प्रचारक' बन गये। बाद में उन्हें संघ के 'सह प्रांत व्यवस्था प्रमुख' का दायित्व दिया गया। सन् 1981 से ही मोदी को अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद्, भारतीय किसान संघ तथा विश्व हिंदू परिषद् के समन्वय का कार्य भी प्राप्त हो गया था। इस बीच इन्होंने संघ के प्रकाशन विभाग- साधना प्रकाशन का भी प्रभार संभाला। 1981 के बाद विश्व हिंदू परिषद् ने पूरे देश में जनजागरण से जुड़े अनेक कार्यक्रम लेने प्रारम्भ कर दिए थे। गुजरात में नरेन्द्र मोदी ने इनकी सफलता के लिए महती कार्य किया।

किन्तु तन, मन और सर्वस्व जीवन के बाद भी मातृभूमि को कुछ और देने की उनकी चाह उन्हें राजनीति में ले आयी। 1984 के आम चुनाव में कांग्रेस को अभूतपूर्व सफलता मिली। बाकी सभी दलों को हार का मुंह देखना पड़ा। किन्तु 1986 में अहमदाबाद नगर निगम चुनाव हुए, जिसका संचालन नरेन्द्र मोदी ने किया था। भारतीय जनता पार्टी दो-तिहाई बहुमत से जीती। पार्टी को इस जीत ने बड़ा सम्बल दिया। 1987 में नरेन्द्र मोदी को कार्य करने के लिए भारतीय जनता पार्टी में भेज दिया गया। सन् 2001 में जब गुजरात बीजेपी भारी संकट से गुजर रही थी, तब मोदी को गुजरात के मुख्यमंत्री का दायित्व सौंपा गया।

जो लोग राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की रीति-नीति से परिचित हैं, वे जानते हैं कि वहां कुछ भी अनायास नहीं होता। भगवान् के चरणों में जैसे सबसे ताजे, सुगन्धित और सुन्दर फूल चुनकर चढ़ाए जाते हैं, वैसे ही भारतमाता के मन्दिर में राष्ट्र सेवा के लिए सबसे मेधावी, प्रत्युत्पन्नमति और कर्मठ व्यक्ति को चुना जाता है। संघ की शाखा में सबसे तेज और अनुशासित किशोर को ही गटनायक, मुख्य शिक्षक आदि दायित्व दिया जाता है। उनमें से सबसे मेधावी व्यक्ति आगे मण्डल, नगर, जिले की रचना में कार्य करते हैं। और इनमे से कोई एक ही संघ-प्रचारक के लिए चुना जाता है। फिर देश के प्रधानमंत्री का दायित्व, जो राष्ट्र को 'परम वैभव' पर ले जाने के स्वप्न को साकार करने की क्षमता रखता है, उसका चुनाव किसी राजनैतिक गुणा-गणित का परिणाम नहीं हो सकता था। यह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की लगभग 90 वर्ष की स्वयंसेवक-निर्माण की प्रयोगशाला के सर्वोत्तम उत्पाद में से ही एक होना था। कोई ऐसा, जो दुनिया के सबसे शक्तिशाली देश के राष्ट्रपति को नाम से बुला सकने का आत्मविश्वास रखता हो, जो सम्पूर्ण विश्व के कोने-कोने में फैले भारतवंशियों में मातृभूमि के प्रति पुनः अपने कर्तव्य का भाव जगा सके, जो एक सौ पच्चीस करोड़ भारतवासियों को पुनः उनका बल याद दिला सकता हो, और वह एक श्रेष्ठ स्वयंसेवक हैं -नरेंद्र मोदी। ■

कौशल भारत
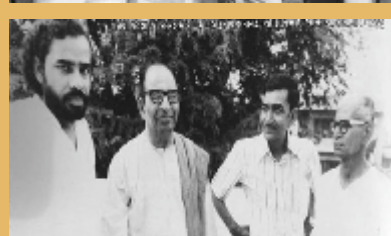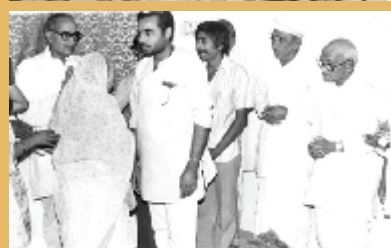
जयन्त कृष्ण
सी.ई.ओ., एन.एस.डी.सी.

भारत में जनांकीय विविधता

यदि भारत की जनांकीय स्थिति पर नज़र डालें, तो एक विविधतापूर्ण आँकड़ा प्रस्तुत होगा। आज की स्थिति पर हम नज़र डालें तो हमारी 54 प्रतिशत जनसंख्या 25 वर्ष से नीचे की है और उमसें भी 62 प्रतिशत कार्य करनेवाले आयु-समूह के हैं। जिस तरह भारत की जनांककीय वृद्धि में नौजवानों की संख्या बढ़ी है, उसी के अनुरूप उनके लिए रोज़गार की मात्रा में बढ़ोत्तरी की चुनौती भी बढ़ी है। इससे देश का आर्थिक विकास भी बढ़ेगा, लेकिन वर्तमान में उद्योग क्षेत्र के सामने यह तथ्य चुनौती बनकर उभरा है। एक महत्त्वपूर्ण सुअवसर देश के सामने आज यह है कि भारत के पास उत्पादक-शक्ति (15 से 60 वर्ष तक की जनसंख्या) बढ़ रही है जो विकासशील देशों में तो बहुत दूर तक नहीं है, कुछ विकसित देशों में भी नहीं है। इस अवसर को महसूस करते हुए भारतीय अर्थव्यवस्था को विकास की ओर ले जाया जा सकता है। इसके लिए यह ज़रूरी है कि रोज़ग़ार-सृजन का सार्थक प्रयास हो। आज जो आँकड़ा हमें दिखाई दे रहा है, वह यह दर्शाता है कि 2040 तक भारत की कामग़ार जनसंख्या चीन की कार्यसंलग्न जनसंख्या को पीछे छोड़ देगी। स्पष्ट रूप से हमारे देश के लिए एक विशेष उपलब्धि यह है कि हमारी कार्य करनेवाली कुल जनसंख्या अर्थात् अर्थव्यवस्था में कार्य करनेवाले लोगों की संख्या सर्वाधिक है। लेकिन हमें एक उज्ज्वल भविष्य के लिए केवल कार्यसंलग्न जनसंख्या के बढ़ने से ही संतोष नहीं करना चाहिये। देश के लगभग पाँच सौ मिलियन कार्यशक्ति में से 14 प्रतिशत ही औचारिक रूप से अर्थव्यवस्था से और 86 प्रतिशत असंगठित क्षेत्र से जुड़ी हुई है। इसमें भी 86 प्रतिशत न तो अच्छी तरह प्रशिक्षित है और न ही जॉब मार्केट में उनकी संबद्धता है– ऐसा विशेषज्ञ बताते हैं। समस्या तब और बढ़ रही है जब प्रत्येक वर्ष कार्यशक्ति के रूप में लोग इस क्षेत्र में प्रवेश कर रहे हैं। के.पी.एम.जी.और एन.एस.

डी.सी.द्वारा गठित एक रिपोर्ट के अनुसार हमारे पास वर्तमान में बड़ी संख्या में मानव-संसाधन मौजूद है। वर्ष 2022 तक 24 प्रमुख क्षेत्रों में लगभग 109 मिलियन कुशल कामग़ारों की आवश्यकता पड़ेगी। जबकि वर्तमान में भारत में जनसंख्या का मात्र 5 प्रतिशत कामग़ार ही औपचारिक रूप से कौशल में प्रशिक्षित हैं जबकि इसकी तुलना में ब्रिटेन में 68 प्रतिशत, जर्मनी में 75 प्रतिशत, अमेरिका में 52 प्रतिशत, जापान में 80 प्रतिशत और दक्षिण कोरिया में 96 प्रतिशत कामग़ार कौशल से युक्त हैं। यह आँकड़ा हमारे सामने एक बहुत बड़ी चुनौती प्रस्तुत करता है।

इन कामकाजी लोगों को अधिक दक्ष बनाने का एक ही रास्ता है कि हम उनके लिए कौशल सुविधाएँ उपलब्ध कराएँ और यह तभी संभव हो सकता है जब असंगठित क्षेत्र में भी हम आकर्षक और आधुनिक सुविधाएँ उपलब्ध कराएँ ताकि पढ़े-लिखे स्नातक भी इस क्षेत्र को चुनें। अतिरिक्त मानव संसाधन को भी प्रभावी तरीके से उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए समायोजित करने की ज़रूरत है। तकनीकी और कौशल के अभाव में तथा अनुपयुक्त शिक्षा-प्रणाली के चलते हमारे यहाँ श्रम की पूर्ति और मांग में पूरी तरह बेमेल गणित दिखाई पड़ता है। हमारे पास कई स्नातक हैं जो सैद्धान्तिक ज्ञान तो रखते हैं, लेकिन व्यावहारिक अनुभव में शून्य हैं। एक व्यक्ति अपने ज्ञान को काग़ज़ में तो प्रस्तुत कर सकता है, लेकिन इसे वह अपने हाथों से सार्थक नहीं कर सकता। हमें ज़रूरत इस बात की है कि हम उनकी पसन्द के क्षेत्रों में उनका कौशल बढ़ाने का रास्ता व माध्यम उपलब्ध कराएँ और उनका स्थानीय एवं वैश्विक उद्योग ज़रूरतों के मुताबिक़ प्रभावी कार्यशक्ति बनाने में मदद करें।

सबसे बड़ी चुनौती यही है कि हम युवाओं के सामने प्रतिभा कौशल का महत्त्व बताएँ ताकि युवा यह समझ सकें कि केवल डिग्री अथवा प्रमाणपत्र अकेले योग्यता के पैमाने नहीं है बल्कि कौशल विकास उनके जीवन के लिए वरदार सिद्ध हो सकता है। हमें प्रत्येक स्तर पर कौशल दक्षता को गौरव के साथ आगे बढ़ाने की ज़रूरत है।

पहली बार भारत सरकार ने कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय बनाया है जो भारत में कौशल विकास के एजेंडे को गति देगा। नेशनल स्किल डेवलपमेंट कार्पोरेशन और नेशनल स्किल डेवलपमेंट एजेंसी साथ-साथ मिलकर इस दिशा में काम कर रहे हैं और सरकार अपने असंख्य प्रयासों से देशभर में इस स्किल एजेंडे को लगातार बढ़ावा दे रही है। भारत विश्व में सर्वाधिक जवान देश है और हमारे पास कुशल और ऊर्जावान् मानव-शक्ति की आपूर्ति की व्यापक संभावना है। यह उद्योग मानकों और भारतीय कंपनियों के लिए ही नहीं बल्कि विश्वभर के लिए उपलब्ध है।

अतीत में भी देश के कई कौशल विकास कार्यक्रम चलाए गए, लेकिन वे प्रभावी नहीं रहे; लेकिन अब कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय (एम.एस.डी.ई.) के बनने के बाद से मुख्य ध्यान इस ओर ही किया जा रहा हे कि विभिन्न मंत्रालयों, राज्यों और विभागों में किस तरह समन्वय स्थापित किया जाए इससे निश्चित रूप से देशभर में कौशल विकास की गुणवत्ता परिलक्षित होती दिखाई पड़ेगी। एम.एस.डी.ई. की हालिया कौशल विकास नीति एक बड़ा कदम है। इससे सारे कौशल विकास प्रक्रियाओं और प्रणाली, जिसमें इनपुट्स, आउटपुट्स, फनडिंग, कॉस्टर्नार्म्स, थर्ड पार्टी सर्टिफिकेशन एंड असेसमेंट, मॉनिटरिंग/ट्रैकिंग मैकेनिज़्म एंड पैनलमेंट ऑफ ट्रेनिंग प्रोवाइडर्स आदि सेवाएँ शामिल हैं।

एन.एस.डी.सी., जो कि केवल लाभ का संगठन नहीं है वह

जनभागिता के तहत पब्लिक, प्राइवेट पार्टनरशिप के माध्यम से कौशल दक्षता के लिए कार्पोरेट, फाउंडेशन और पी.एस.ई.एस. के लिए बड़े पैमाने पर कौशल विकास प्रोजेक्ट का ढाँचा खड़ा कर रहा है जो इन संगठनों के कार्पोरेट सोशल रिसपोंसिबिलिटी का एक हिस्सा है।

एन.एस.डी.सी. देश में प्रशिक्षण-क्षमता निर्माण का कार्य कर रहा है। यह निजी उद्योगों को अनुदान देकर उनको प्रोत्साहन दे रहा है, कौशल विकास के लिए एक मार्केट इकोसिस्टम का निर्माण कर रहा है और सरकार द्वारा 2020 तक 150 मिलियन लोगों को प्रशिक्षण देने के लक्ष्य को क्रियान्वित करने की दिशा में अग्रसर है। यह उद्योग क्षेत्र के निकट संपर्क में रहकर उनकी आवश्यकता के क्षेत्र के लिए कुशल लोगों के साथ साझीदार उपलब्ध करा रहा है। यह स्कूल-कॉलेज़ छोड़नेवालों, स्नातकों और परास्नातकों, अभियांत्रिकी, प्रविधिक कौशल, कृषि और संबंधित गतिविधियों– हस्तशिल्प और स्वयंसहायता समूह को ध्यान में रखते हुए उनका भी विकास कर रहे हैं।

एन.एस.डी.सी. अपने 40 क्षेत्रीय कौशल परिषदों के माध्यम से विविध क्षेत्रों में रोज़ग़ार को पहचानकर अभ्यर्थियों को उनकी रुचि और वरीयता के अनुसार कौशल विकास कार्यक्रमों से जुड़ने का मंच उपलब्ध करवा रहा है। इसमें कई छोटे कौशल विकास कार्यक्रम और उद्यमिता पाठ्यक्रम शामिल हैं जो कि किसी भी ऐसे कार्य कर रहे व्यक्ति के लिए लाभदायक हैं जिसे वर्तमान भूमिका में अपने आगे के जॉब प्रोफाइल को मज़बूत करना है। 249 प्रशिक्षण साझीदारों और देशभर में 3,500 से अधिक केन्द्रों के साथ एक बड़े नेटवर्क के रूप में वह उद्योग और राज्य की आवश्यक कौशलशक्ति उपलब्ध करा रहा है।

इसके अलावा यह कौशल के एक समान मानक और सारे स्किल इको सिस्टम को गति देने का काम जारी रखे हुए है। उद्योग जगत् को आज ज़रूरत है कि वह नेशनल स्किल क्वालिफिकेशन फ्रेमवर्क (एन.एस.क्यू.एफ.), जो कि शीघ्र ही एक लेजिस्लेटिव एक्ट में परिवर्तित होगा और 4323 यूनीक नेशनल अकप्पेशनल स्टैंर्ड्स (एन.ओ.एस.) का निर्माण किया गया है और इनके प्रमाणन की प्रक्रिया जारी है। यह एन.एस.डी.सी. और क्षेत्रीय दक्षता परिषद् द्वारा सम्पन्न किया जाएगा। पिछले एक वर्ष में क्षेत्रीय दक्षता परिषद् एस.एस.सी.एस. ने 325 जॉब भूमिकाओं के लिए क्यू.पी.एस. (क्वालिफिकेशन पैक) विकसित किया है। इस तिथि तक 1644 क्यू.पी.एस., जिनमें 9199 एन.ओ.एस.एस. थे जिनमें 4323 की यूनीक एन.ओ.एस. हैं।

एन.एस.डी.सी. ने अब तक 65 लाख लोगों को ट्रेनिंग पार्टनर नेटवर्क के तहत कौशल दक्षता प्रदान की है। कुछ ही दिनों में देश को कौशल विकास के क्षेत्र में इसका बढ़ता हुआ योगदान दिखाई पड़ेगा। क्या नहीं मापा जा सकता और किस चीज को नहीं सुधारा जा सकता, मंत्रालय के कुशल मार्गदर्शन में एन.एस.डी.सी. कौशल दक्षता के लिए एक मज़बूत अनुसंधानपूर्ण नींव खड़ी की है और इसके साथ ही ज़िलास्तरीय व अलग-अलग क्षेत्र के लिए स्किल गैप स्टडीज़ का अभियान चलाए हुए है। बिहार को छोड़कर देश के सारे राज्यों में डिस्ट्रिक्ट-लेवल स्किल स्टडी पूरी हो चुकी है।

दिनांक 09 अप्रैल, 2015 को 'मन रिसोर्स एण्ड स्किल रिक्वायरमेंट रिपोर्ट देश के सभी 24 क्षेत्रों के लिए शुरू की गयी। इन 24 क्षेत्रों की रिपोर्ट में 19 उच्च प्राथमिकतावाले क्षेत्र योजना आयोग द्वारा चिह्नित किए गए। इनके साथ ही टेलीकॉम, कृषि और अनौपचारिक क्षेत्र भी शामिल हैं। ये रिपोर्ट देशभर में कौशल विकास प्रयत्नों को क्रियान्वित करने में आधार-रेखा का काम करेगी। शोध-रिपोर्टों की ज़ांच के अनुसार इन सभी 24 क्षेत्रों में लगभग

109.73 मिलियन मानव संसाधन की ज़रूरतें पड़ेंगी, जबकि शीर्ष 10 क्षेत्रों, जिनमें ऑटोमोबाईल रिटेल, हैण्डलूम, लेदर आदि क्षेत्र में लगभग 80 प्रतिशत लोगों की आवश्यकता पड़ेगी।

इन रिपोर्टों को एन.एस.डी.सी. द्वारा जारी किया गया और एक जानी-मानी अंतरराष्ट्रीय कन्सल्टिंग फर्म के.पी.एम.जी. द्वारा तैयार किया गया था। इन स्किल गैप रिपोर्टों का उद्देश्य विभिन्न विद्यमान क्षेत्रों और भौगोलिक विस्तार में कौशल आवश्यकताओं को पूरा करना था। ये आँकड़े संबंधित क्षेत्र के हितधारकों सहित लघु, मध्यम और बड़े उद्यमियों, प्रत्येक क्षेत्र के दक्षता परिषद, कौशल प्रशिक्षण प्रदाताओं को लेकर तैयार किए गए हैं। यह स्किल गैप स्टडी 2013-17 और 2017-22 के आधार-वर्षों को लेकर तैयार की गई है। यह रिपोर्ट इस बात का आकलन करने में भी सहायक होगी कि अधिकतम कुशल कार्यशक्ति की आवश्यकता कहाँ ज़्यादा थी और इसे किस प्रकार प्राप्त किया गया। सभी प्रयास निम्नलिखित उपलब्ध आँकड़ों के आधार पर किये जाएँगे–

Incremental Human Resource Requirement Appendix

S. No.	Sector	Employment Base in 2013 (million)	Projected Employment by 2022 (million)	Incremental Human Resource Requirement (2013-2022)
1.	Auto & Auto Components	10.98	14.88	3.9
2.	Beauty and Wellness	4.21	14.27	10.06
3.	Food Processing	6.98	11.38	4.4
4.	Retail	38.6	55.73	17.13
5.	Media & Entertainment	0.4	1.3	0.9
6.	Handlooms & Handicrafts	11.65	17.79	6.14
7.	Leather and Leather Goods	3.09	6.81	3.72
8.	Domestic Help	6.00	10.88	4.88
9.	Gems & Jewellery	4.64	8.23	3.59
10.	Telecommunication	2.08	4.16	2.08
11.	Tourism, Hospitality & Travel	6.96	13.44	6.48
12.	Furniture & Furnishing	4.11	11.29	7.18
13.	Building, Construction & Real Estate	45.42	76.55	31.13
14.	IT & ITES	2.77	5.12	2.35
15.	Construction Material & Building Hardware	8.3	11	2.7
16.	Textile & Clothing	15.23	21.54	6.31
17.	Healthcare	3.59	7.39	3.8
18.	Security	7.00	11.83	4.83
19.	Agriculture	240.4	215.6	24.8
20.	Education/ skill development	13.02	17.31	4.29
21.	Transportation & Logistics	16.74	28.4	11.66
22.	Electronic & IT Hardware	4.33	8.94	4.61
23.	Chemical & Pharmaceuticals	1.86	3.58	1.72
24.	BFSI	2.55	4.25	1.7
	Grand Total	**459.46**	**578.62**	**119.16**

एन.एस.डी.सी. ने कई मायमों और मोड्यूल के माध्यम से इस स्किल एजैण्डे को बढ़ाने के लिए किसी से भी साझेदारी के लिए विकल्प खुला रखा। यह कई परियोजनाओं के समाधान, डिजाईन-निर्माण, ढाँचे और क्रियान्वयन का सुअवसर भी उपलब्ध करवाता है।

पहला सी.एस.आर. प्रोजेक्ट कम्पनी अधिनियम-2013 के अंतर्गत एन.एस.डी.एस., एन.एस.डी.सी. और पावर ग्रिड कॉर्पोरेशन ऑफ़ इण्डिया के बीच 14 जनवरी, 2015 को हुआ। तब से बड़ी संख्या में कॉर्पोरेट और पी.एस.ई.एस. के बीच कई सहमति-पत्रों पर हस्ताक्षर हुए हैं। एस.सी.ओ.पी.ई., यू.एस.आई.बी.सी., विश्व बैंक और कई अन्य संगठनों से कौशल विकास के लिए सी.एस.आर. फंडिंग के लिए आकर्षित किया जा रहा है। पिछले वर्ष बड़ी अच्छी संख्या में ऐसे संगठन आगे आए और उन्होंने अपना योगदान दिया।

नेशनल स्किल कनक्लेव, जो कि एन.एस.डी.सी. और मंत्रालय द्वारा मुम्बई में आयोजित किया गया था और जिसमें कई कार्पोरेट ने सी.एस.आर. फंड को कौशल विकास कार्यों के लिए उपलब्ध कराने के सहमति जताई थी जो कि देश के लिए भविष्य में एक बड़ा निवेश है और

एन.एस.डी.सी. ने अब तक 65 लाख लोगों को ट्रेनिंग पार्टनर नेटवर्क के तहत कौशल दक्षता प्रदान की है। कुछ ही दिनों में देश को कौशल विकास के क्षेत्र में इसका बढ़ता हुआ योगदान दिखाई पड़ेगा। क्या नहीं मापा जा सकता और किस चीज को नहीं सुधारा जा सकता, मंत्रालय के कुशल मार्गदर्शन में एन.एस.डी.सी. कौशल दक्षता के लिए एक मज़बूत अनुसंधानपूर्ण नींव खड़ी की है।

स्वयं उद्योग-क्षेत्र लाभ की इस फसल को काट पायेगा।

हाल ही में एन.एस.डी.सी. ने विद्यमान तंत्र के साथ कई सैक्टर स्किल काउंसिल को जोड़ा है। इनके माध्यम से उड्डयन एस.एस.सी., ग्रीन एस.एस.सी. और डोमेस्टिक वर्कर्स एस.एस.सी. का गठन हो सकेगा जो सेवा-कार्यों के लिए मुख्य रूप से लक्षित किया गया है। संगठन ने स्वयं को कई बड़े राष्ट्रीय मिशन, जैसे– मेक इन इंडिया, स्मार्ट सिटीज़ और डिज़िटल इंडिया से जोड़ने का निर्णय किया है जो इनकी निर्दिष्ट आवश्यकताएँ पूरी करने में सहायता करेगा जिससे देश के आर्थिक विकास में सहायता मिलेगी। हमारे समक्ष एक और चुनौती शिक्षा को प्राविधिक और एन.एस.क्यू.एफ. के क्रियान्वयन की है जो विद्यालय-शिक्षा और उच्च शिक्षा के सहयोग से होनी है। हम इस दिशा में प्रयासरत हैं और उद्योग और शिक्षा की दूरी को कम करते हुए अपने देश के युवाओं के लिए एक सुसंगत स्किल इको सिस्टम बनाकर उनके लिए रोज़गार उपलब्ध करवाएंगे।

एन.एस.डी.सी. देशभर के कई राज्यों में स्कूलों के साथ कार्य कर रहा है। और कम उम्र में ही कौशल-दक्षता उपलब्ध कराने की दिशा में संलग्न है। इस अवधि तक 2,03,127 को देश के 3,000 से अधिक स्कूलों में लाभ हुआ है। प्रतिभा कौशल प्रशिक्षण के कई कार्यक्रम अलग-अलग स्तरों पर उपलब्ध कराए गए हैं, जैसे–

पी.एम.के.भी.वाई., उड़ान, एन.यू.एल.एम. इत्यादि या विभिन्न मंत्रालयों के साथ साझेदारी के साथ चल रहा है।

संगठन एम.एस.डी.ई. के अंतर्गत चलनेवाली भारत सरकार की योजनाओं–प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (पी.एम.के.भी.वाई.) में सहयोग कर रहा है। विशेषकर ऐसे क्षेत्रों में जहँ आज तक भी कौशल विकास पर बहुत कम ध्यान दिया जाता है। पी.एम.के.भी.वाई. के तहत विशेष फोकस रिकग्निशन ऑफ़ प्रियर लर्निंग (आर.पी.एल.) पर किया जा रहा है। इसके तहत आकलित अभ्यार्थी की पूर्व क्षमता व दक्षता का आकलन कर उनका आकलन पूरा कर सफल होने पर एक प्रमाणपत्र प्रदान किया जाता है।

पी.एम.के.वाई. और आर.पी.एल. को भारत के 22 राज्यों के 27 ज़िलों और 23 अलग-अलग क्षेत्रों में 95 रोजगार रोल्स पर लागू किया जा रहा है। वर्तमान समय तक 18 लाख से भी अधिक अभ्यर्थी पी.एम.के.भी.वाई. में नामांकित हैं जिनमें से 14 लाख ने अपना प्रशिक्षण पूरा कर लिया है। दूसरी बड़ी योजना 'उड़ान' नाम से है जो एन.एस.डी.सी. द्वारा जम्मू काश्मीर के युवाओं के लिए क्रियान्वित की गई है। इसके माध्यम से जम्मू-काश्मीर के शिक्षित बेरोज़गारों के लिए रोज़गार अभियान छेड़ने का संकल्प है जो देश के किसी अन्य राज्य में नहीं है। यह जम्मू-काश्मीर के उन छात्रों के लिए है जो स्नातक, परास्नातक और 3-वर्षीय डिप्लोमा इंजीनियरिंग के छात्र हैं। इसका लक्ष्य है ऐसे नौजवानों के लिए कौशल और रोज़गार के अवसर उपलब्ध करवाना। इसी प्रकार यह भी लक्ष्य है कि कार्पोरेट इंडिया को जम्मू-काश्मीर की इस असंख्य प्रतिभा से परिचित कराया जाए। 5 वर्ष की अवधि के अंदर इस योजना के तहत 40,000 युवाओं तक पहुँचने का लक्ष्य रखा गया है।

दूसरी तरफ सरकार भी जहाँ तक संभव है, इनकी क्षमता को सौ फीसदी उपयोग करने की मंशा रखती है। हाल ही में देश के इंजीनियरिंग कॉलेज़ों में जारी बहस पर भी ध्यान देना जरूरी है जहाँ अच्छी ढाँचागत सुविधाएँ नहीं हैं। एन.एस.डी.सी. स्किलिंग नेटवर्क पर नज़दीकी और बारीकी से काम कर रहा है। वह देश में छोटी अवधि के प्रशिक्षण-पाठ्यक्रम शुरू कर रहा है। इसके साथ ही देश में कई इंजीनियरिंग कॉलेज़ और पोलिटेक्नीक खोले गए हैं। यह एक आदर्श व्यावसायिक मॉडल सिद्ध होगा और देश में कुशल युवाओं को राष्ट्र-निर्माण से जोड़ने में विशेष भूमिका निभाएगा।

संगठन अपनी शक्ति को गति देते हुए अन्य देशों के साथ भी साझेदारी कर उनके टेक्नीकल वोकेशनल एजुकेशन एण्ड ट्रेनिंग (टी.वी.ई.टी.) सहयोगियों के साथ बढ़ावा दे रहा है जो वैश्विक स्वीकार्यता प्राप्त कर रहा है। यह इस अभियान में लगा है कि प्रतिभाओं का कौशल परीक्षण हो और उनका प्रमाणन हो।

एन.एस.डी.सी. अमेरिका, ब्रिटेन, ऑस्ट्रेलिया, फ्रांस, जर्मनी और कनाडा आदि देशों के साथ कई सहमति के क्षेत्रों में प्रवेश कर रहा है। इस सबका लक्ष्य है देश से बाहर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर वोकेशनल ट्रेनिंग, प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण, सेंटर ऑफ़ एक्सीलेंस की स्थापना, देश से बाहर रोज़ग़ार की भूमिका तलाशने के अवसर उपलब्ध करवाना आदि। एन.एस.डी.सी. इन देशों के साथ साझेदार बनाकर कुछ अच्छे कार्यक्रमों को ज़मीन पर उतारना चाहता है जो न केवल डोमेस्टिक मार्केट के युवा, बल्कि वैश्विक युवा के लिए भी रोज़ग़ार उपलब्धता का माध्यम बनेगा, जहाँ युवा अपना मनपसंद रोज़ग़ार पा सकेंगे। आवश्यकता इस बात की है कि युवाओं को और अन्य लोगों को उपलब्ध पाठ्यक्रमों की सूचना और जागरुकता फैलाई जाये। वोकेशनल शिक्षण-प्रशिक्षण से एक-एक व्यक्ति का जीवन चमकाया जा सकता है।

कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय (एम.एस.डी.ई.) के तहत राष्ट्रीय कौशल विकास कार्पोरेशन (एन.एस.डी.सी.) के तहत वर्ल्ड स्किल इंडिया एक अन्य बड़ा अभियान है जो 2011 से वर्ल्ड स्किल इंटरनेशनल कंपीटीशन में भारत की सहभागिता बढ़ा रहा है। यह इसलिए किया गया था ताकि हमारे देश में कौशल विकास को बढ़ावा मिले और हमारे युवाओं को विश्व के अपने सहयोगियों के साथ देश-विदेश में अच्छे अवसर प्राप्त हों।

ग्यारह महीने की अवधि के अन्दर टीम इंडिया का चयन एक लंबी प्रक्रिया थी जिसमें पूरे भारतवर्ष से लगभग 1,050 प्रतिभागियों ने भाग लिया। वर्ल्ड स्किल-2015 के तहत फाइनल नयी दिल्ली में हुआ था जिसमें 27 अलग-अलग क्षेत्रों के दक्ष 29 विजेताओं का चयन किया गया था। 2015 में ब्राजील के साओ पाउलो में 43वाँ वर्ल्ड स्किल्ड कंपीटीशन हुआ जिसमें भारत ने देशों के कौशल टीमों में 8 पदक प्राप्त किए थे। इससे पूर्व भारत ने ओसियानिया वर्ल्ड स्किल्स कंपीटीशन में 2015 में 6 पदक प्राप्त किए थे। न्यूजीलैण्ड ने एक स्वर्ण, 2 रजत और 3 कांस्य पदक प्राप्त किये थे।

एन.एस.डी.सी. मंत्रालय के साथ मिलकर पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप के तहत सफल ईकोसिस्टम की कथा गढ़ रही है। कौशल विकास की आवश्यकताओं को समझने के लिए सभी को एक मंच पर आने की आवश्यकता है। 2016 में पूरी तरह से उद्योग-क्षेत्र के साथ तादात्म्य स्थापित कर कदम बढ़ाते हुए कौशल भारत में आगे की ओर कदम बढ़ाना है। उद्योगों को भी उन क्षेत्रों की ओर ध्यान देना होगा कि वे कहाँ कार्य-विस्तार करें और किसमें निवेश करें। उनकी आवश्यकता में एक मज़बूत प्रयास होना चाहिए। यह वे उद्यमिता अथवा स्वरोज़ग़ार-सृजन द्वारा कर सकते हैं। एन.एस.डी.सी. के सभी प्रशिक्षण-साझीदारों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वह 70 प्रतिशत कार्यशक्ति हमारे कुशल प्रशिक्षण से दक्ष युवाओं में से ले और हमें भी उद्योग-क्षेत्र के लिए यथाशक्ति अधिकाधिक कौशल विकास ये युक्त प्रतिभाएँ तैयार करनी होंगी।

मंत्रालयों, राज्य सरकारों, विभिन्न विभागों ओर उद्योगों को मिल-जुलकर और सहकारिता की भावना के साथ कार्य करते हुए आर्थिक विकास सुनिश्चित करना चाहिए और बहुत ज़ल्द भारत को विश्व की समृद्ध कौशल राजधनी बनाने का प्रयास करना चाहिये। ■

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

क्रान्तिकारी तकनीक का दूसरा नाम M2K

भारत में रक्षा का क्षेत्र ऐसा है जहां हम विदेशी कंपनियों पर आश्रित हैं। प्रधानमंत्री ने अपने मेक इन इंडिया वाले दूरदर्शितापूर्ण कार्यक्रम में रक्षा क्षेत्र पर विशेष ज़ोर देने की बात कही है। भारत के कई बड़े औद्योगिक समूह, जैसे– टाटा, एल एण्ड टी, महिन्द्रा आदि भी रक्षा-उत्पादन में क्षेत्र में उत्साहजनक रुचि दिखाने लगे हैं। भारत के ये शीघ्र उद्योग महारथी एयरक्राफ्ट, टैंक, आर्टिलरी, मिसाइल और अन्य बड़े हथियारों के निर्माण में घुसने का निश्चय कर चुके हैं।

सबसे ज्यादा गौरव और उत्साह की बात ये है कि कई छोटे-छोटे व्यावसायिक घराने भी प्रधानमंत्री के इस आह्वान को सफल बनाने के लिए इस क्षेत्र में लग गए हैं। भारत में ऑटोमोबाइल क्षेत्र में स्वेदशीकरण की क्रान्ति 1980 में मारुति सुजुकी के प्रवेश से शुरू हुई थी, लेकिन वास्तविक सफलता तब तक भी नहीं मिली थी जब 90 प्रतिशत से अधिक वाहनों के अलग-अलग हिस्से भारत के छोटे, लघु एवं मध्यम उद्योगों को सफलता पाने में पूरे 15 वर्ष लगे। आज भारत ऑटोमोबाइल-क्षेत्र में एक वैश्विक शक्ति है और पूरे विश्व के साथ शानदार प्रतियोगिता करता हुआ ऑटो कंपोनेंट्स और पार्ट्स-निर्माण क्षेत्र का बादशाह है।

एऍसा ही प्रयास और ऐसी ही रणनीति रक्षा-क्षेत्र में आत्मनिर्भरता के लिए ज़रूरी है ताकि दुनिया के सामने हमारी 'मेक इन इंडिया' की सच्ची कहानी आ सके। बड़े स्तर पर काम करनेवाले निर्माण उद्योगों, जो फाइटर जेट, टैंक, पनडुब्बी और आर्टिलरी गन इत्यादि बना रहे हैं, को हमारे मध्यम और लघु उद्योग कारखानों के भी सहयोग की ज़रूरी है तभी सब मिलकर सफलता की एक कहानी लिख पाएंगे।

इसका एक दूसरा पहलू भी है कि रक्षा-उद्योगों को केवल ऐसे बड़े घरानों, जो कि मीडिया का ध्यान अपनी ओर खींचे रहते है, का भी सहयोग नहीं चाहिए अपितु इससे महत्त्वपूर्ण यह है कि छोटे उद्योग घराने और निर्माण-संस्थाएँ हमारे जांबाज सैनिकों की आवश्यक दैनिक उपयोग की वस्तुओं अथवा छोटे हथियारों, जैसे-रात्रि में देखनेवाला यन्त्र, बर्फ से बचने के लिए गरम जैकेट, हैलमेट, बुलेट प्रूफ जैकेट आदि की ज़रूरत पड़ेगी।

भारतीय उद्योग जगत् को इस चुनौती को स्वीकारने के लिए तैयार होना चाहिए और बड़े स्तर की सैन्य एवं युद्ध-सामग्री की आपूर्ति-क्षमता और शक्ति बढ़ाने के लिए कमर कसनी चाहिए। हमारे रक्षा-क्षेत्र और सुरक्षाबलों को जिस प्रकार के भी हथियार और सामग्री की ज़रूरत है, उसे पूरा करने का संकल्प लेना चाहिए।

प्रधानमंत्री द्वारा देश की रक्षा-ज़रूरतों के हिसाब से निर्माण-कार्य में जुट जाने के आह्वान को मातृभूमि की सबसे बड़ी आवश्यकता मानकर जिन कंपनियों ने इस अभियान से जुड़ने का संकल्प लिया है, उनमें एक कंपनी है–M2K टेक्नालॉजीज़ प्राइवेट लिमिटेड, जो कि M2K समूह का एक हिस्सा है। इस कंपनी का व्यावसायिक ध्येय है भारतीय रक्षा तंत्र, सशस्त्र सैन्य बलों व सुरक्षा दस्तों को वैज्ञानिक संस्थानों और आपातकालीन सहयोग-क्षेत्र को नवोन्मेष से युक्त प्रभावी समाधान-सेवा देना।

(www.M2Ktechnologies.com) भारत के पास टेक्नोलॉज़ी से जुड़ी प्रतिभाओं, रक्षा-अनुसंधान संगठन का एक बड़ा व्यापक तंत्र है। इन सबका मिला-जुला प्रयास और उसका परिणाम भारतीय सेनाओं के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होना चाहिए, ये विदेशी कंपनियों के साथ जुड़कर इस प्रयास को यथार्थ रूप दें अथवा स्वदेशी तकनीक को आकार देकर स्वयं करके पूरा करें।

इन सब उपायों और संभावनाओं को ध्यान में रखकर M2K टेक्नोलॉजीज़ प्राइवेट लिमिटेड एक ऐसी क्रांतिकारी तकनीक को लेकर आ रही है जो भारतीय रक्षा उद्योग मिलिट्री एंड सर्विलांस डिपार्टमेंट को नये पंख लगाकर पर्याप्त गतिमान बनायेगी।

कुछ उत्पाद जो उपलब्ध कराए गए हैं उनमें शामिल हैं-

1. मार्टिन जैकपैक, 2. ड्रोण,

3. ड्रोण रिकवनी सिस्टम्स

M2K टेक्नोलॉजीज़ प्राइवेट लिमिटेड ने मार्टिन एयरक्राफ्ट कंपनी लि.मार्टिन एयरक्राफ्ट, न्यूजीलैंड की (ASX : MJP) कंपनी के साथ संयुक्त सहमति-प्रस्ताव तैयार किया है जो मिलकर विश्व का पहला व्यावहारिक जेट पैक भारत के लिए उपलब करवाएंगे।

मार्टिन जेटपैक यह अकेले पायलट द्वारा उड़ेगा अथवा रिमोट कंट्रोल द्वारा ही यह उड़ान भरेगा और उतरेगा (VTOL) और अपने छोटे आयाम द्वारा किसी भी भवन, पेड़ अथवा अन्य सटे क्षेत्रों से आसानी से निकल सकेगा। ऐसे सभी क्षेत्रों से जहाँ से हैलीकॉप्टर आदि

की पहुँच नहीं हो पाती।

जेटपैक द्वारा नियमित देखरेख (पैट्रोलिंग) सर्विलांस, इमर्जेंसी, सर्च और रेस्क्यू आदि आसानी से किया जा सकेगा। मार्टिन जेटपैक का मानवजन्य स्वरूप या वर्जन इसे सर्वश्रेष्ठ सिद्ध करता है, यह प्रत्युत्तर के लिए, सैन्य गतिविधियों, वाणिज्यिक और मनोरंजक माध्यमों के लिए भी उपयोग में लाया जाएगा। इसके साथ ही इसके एक भारी लिफ्ट वर्टिकल टेक ऑफ, और लैंडिंग (VTOL) और अन्मैंड एयरव्हीकल (UAV) शामिल है। मार्टिन जेटपैक के संचालन का सर्वाधिक लाभ यह है कि यह आज 120 किलो तक का अतिरिक्त भार भी ढो सकता है।

सुरक्षा पर विशेष फोकस रखनेवाले मार्टिन जेटपैक के पास ऐसा समेकित ढाँचा है, ऐसा पायलट मॉड्यूल है जो किसी भी स्थिति अथवा घटना के उपस्थित होने पर पायलट की रक्षा में सक्षम सिद्ध होगा। इसमें एक बैलेस्टिक पैराशूट सिस्टम भी है जो कहीं भी जोड़ा जा सकता है और मैदान से कुछ ऊपर ही एयरक्राफ्ट को सुरक्षित कर सकता है।

इन्हीं सब विशेषताओं ने इस जेटपैक को आज पूरे विश्व में सबसे सुरक्षित एयरक्राफ्ट बना दिया है।

जेटपैक एक अद्‌भुत बदलाववाली तकनीक है जो हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा बनेगी। ये प्रभावी और उचितलागत वाले समाधान इमर्जेन्सी और रेस्क्यू ऑपरेशन एवं ऐसी ही विशेष सेवाओं के लिए उपलब्ध कराएंगे जिसमें रक्षा, पुलिस व अन्य सुरक्षा-प्रणालियों से जुड़े सामानों की सुरक्षा, जैसे– पावर और गैस पाइपलाइन सहित हमारी कल्पनाओं तक सीमित सुरक्षा इंतजामों के लिए कारगर सिद्ध होंगे। इनकी सर्वाधिक मांग भारत में निश्चित रूप से सर्वाधिक रक्षा एवं सुरक्षाबलों के बीच ही बढ़ेगी।

कॉमर्शियल जेटपैक्स को अब सायंस फिक्शन के डोमेन की ज़्यादा ज़रूरत नहीं है। भविष्य अब केवल यही है। हम अपेक्षा करते हैं कि भारतीय मांग लगातार बढ़ती रहेगी और एक बहुत उन्नत व प्रभावी व्यावसायिक टीक का निर्माण बिना देरी के कर सकेगी।

अन्मैंड एयरयिल व्हीकल्स सिस्टम

M2K टेक्नोलॉजीज़ द्रोण/यूएवी की एक सल्तनत खड़ी कर रही है जो भारतीय रक्षा तंत्र, सैन्य एजेंसियों और लॉ एन्फोर्समेंट एजेन्सियों के लिए एक शुभ संकेत है।

UNMANNED AERIAL SURVEILLANCE SYSTEM

द्रोण मुख्य रूप से ऐसे मॉडलयुक्त जहाज हैं जो उड़ान भरने के साथ एकसाथ कई लक्ष्यों की पूर्ति करते हैं। ये रिमोट कंट्रोलवाले सिस्टम से आगे न केवल उड़ने की ही बल्कि प्रभावी मारक क्षमता रखते हैं।

द्रोण की ख़ासियत यह है कि ये रिमोट कंट्रोल द्वारा नियंत्रित है जो पायलट और कंप्यूटर– दोनों के ही द्वारा नियंत्रित हो सकता है। दूसरे शब्दों में द्रोण मानव पायलट के निर्देश के बिना भी अचानक उपस्थित हुई गतिविधियों पर उचित कार्यवाही करने में सक्षम रहता है।

द्रोण की विशेषताएँ–

1. जीवनरक्षक : द्रोण की सर्वश्रेष्ठ विशेषता यही है कि वह संकट के समय सैन्यकर्मियों के जीवन की क्षति को कम करता है।

2. कम लागत : इसका दूसरा सबसे बड़ा गुण है इसकी कम लागत। नियमित प्रयोग में आनेवाले जहाजों से खरीदने में ये बहुत सस्ते होते हैं ओर इसका ईंधन व रखरखाव भी सस्ता ही होता है।

3. ऑपरेशन अवधि : बिना मानव पायलट के द्रोण कई-कई घंटों तक बड़े-बड़े अभियानों में बिना अतिरिक्त दबाव के कार्य करता रहता है। इसके अतिरिक्त द्रोण का पायलट या ऑपरेटर आसानी से बिना किसी विशेष समय लगाए इसको नियंत्रित कर सकता है।

4. ठोस आकलन (एकुरेसी) : बहुत दूरी से भी द्रोण को ठोस और प्रामाणिक जानकारी रहती है कि अमुक जगह कितना नियत समय लगेगा या पूरा आकलन।

5. संहारक (लेथल) : नियमित जहाज जिस प्रकार सामान्य रूप से देखे जाते हैं, द्रोण शत्रु के लिए उनकी तुलना में संहारक रूप में दिखाई देता है।

6. उपयोगितापूर्ण : कई वर्षों पूर्व द्रोण को भी सामान्य रूप से एक मालवाहक के रूप में प्रयोग में लाया जाता था, लेकिन अब इसने अपनी बढ़ती शक्ति प्रमाणित की और सर्विलांस, रिकोनाइसेंस और सामान्य सैन्य अन्वेषणों के लिए इसका प्रयोग किया जाता है।

7. तैनाती में आसान : आख़िर में द्रोण ज़्यादातर जहाजों की तुलना में कहीं भी तैनाती के लिए और आवागमन के लिए आसान और तेज माध्यम है।

डीलेयर डीटी एयरफ्रेम : विश्व का यह पहला सिविलियन UAVX था जो बीयोंड जिअल लाइन-ऑफ-साइट (BVLOS) के तहत कार्य करता था। 2012 में DGAC नामक एक आधिकारिक नियम लागू करनेवाले संगठन ने इसे बनाया। उसके बाद से सारे विश्व में सभी प्रकार के पर्यावरण (पर्वत, मरुस्थल, सघन वन, शीत हवाओं, गरम मौसम) में DS-18 एयरफ्रेम में इतनी क्षमता है कि ये हाई रिजोल्यूसन

RGB और मल्टी स्पेक्ट्रल सेंसर व इन्फ्रेयर्ड वीडियो कैमरा से युक्त होता है। DT-18 का वजन 2 किलोग्राम है और 2 घंटे में यह 100 कि.मी.से भी अधिक की दूरी उड़ान से पूरी कर सकता है। इसे निगरानी और भौगोलिक सूचना-प्रणाली के लिए आसानी से उपकरण युक्त तैयार किया जा सकता है।

द एम. ए. थोर : यह मार्कवेस एवियेशन हाउस द्वारा प्रवर्तित UAV है, यह कई प्रकार के मिशन में काम करता है यह सघन व दुर्गम क्षेत्रों से लेकर शहरों तक फैले पुनर्निर्माण की मैपिंग, रिमोट सेंसिंग व मैपिंग, भूमि और सामुद्रिक सीमाओं की निगरानी, समुद्री और ज़मीनी खोज एवं बचाव, तेल और गैस के स्रोतों की खोज, प्राकृतिक आपदाओं का निरीक्षण, खेती के विस्तार और आग से फैले संकटों के समाधान के अभियान में विशेष भूमिका निभाता है। इसका ऑपरेटिंग रेडियश 150 कि.मी.और क्रूज स्पीड 90 किमी.प्रति घंटा है। इसके साथ ही एक बार में 900 कि.मी. की फलाइट रेंज, जिसमें अधिकतम टेक ऑफ़ वजन 90 किलोग्राम है।

एम.ए. एयर डिफेन्स स्काइपैट्रोल: दूसरे हल्के वजन का UAVX स्काइ पैट्रोल एयरडिफेन्स UAV शृंखला परिवार का हिस्सा है। यह एक मिनी UAVX इलेक्ट्रीकल सिस्टम है। 10 कि.मी.रेडियश रेंज का यह सिस्टम मुख्य रूप से दुर्गम एवं समस्याग्रस्त क्षेत्रों में त्वरित खोज के साथ-साथ ऐसी जगहों पर किसी मिशन अथवा समस्या के हल का ठोस जरिया है। यह माइक्रोवेब अपलिंग, 8 चैनल माइक्रोवेब (वीडियो व टेलीमेट्री) ट्रांसमीटर और एंटेना व एडवांस्ड मिनियेचर GPS नेविगेशन ऑटोपायल से सुसज्जित होता है।

एम.ए.थोर सोलर लाइट : यह सबसे ज्यादा मांगवाला सौर ऊर्जा संचालित UAV है जो कई-कई दिनों तक कितनी भी ऊँचाई पर अपना पूरा प्रभाव रखता है। इसके पंखों पर सोलर पैनल लगा होता है जो एयरक्राफट को अनंत दूरी और ऊँचाई तक ले जाता है, इसे दबारा ईंधन भरवाने की ज़रूरत नहीं पड़ती। यह सौर ऊर्जा का प्रकाश एक हल्के वजनवाले कार्बन-फाइबर एयरक्राफट जिसके विंगसपैन 10m के किन्तु वजन केवल 70 किलोग्राम होता है, को संचालित करता है। यह सौर ऊर्जा का प्रयोग कर दिन-प्रतिदिन लगातार उड़ सकता है। दिन के प्रकाश में बैट्री को रिचार्ज किया जाता है, इस प्रकार दिन में वे सौर ऊर्जा से और रात्रि में रिचार्ज बैट्री से आगे बढ़ते हैं। इसमें लीथियम-सल्फर बैट्री का प्रयोग किया जाता है।

द्रोण वेंडी : पी.वाई. इन्नोवेशंस हाउस की ओर से यह भी एक विशिष्ट UAV है जो कंबस्सन इंजन युक्त है और 175 कि.मी. प्रति घंटे की रफ्तार से पहुँचने की क्षमता रखता है और 170 किलोग्राम तक के भार का वहन कर सकता है। इसके विशेष फ़ीचर के चलते ही इसकी मांग बहुत अधिक है। आज रक्षा क्षेत्र और सैन्य एजेंसियों के लिए इसकी सर्वाधिक आवश्यकता समय की मांग है।

सेफ लैंडिंग के लिए यह पैराशूट से लैस होता है। किसी भी इमर्जेन्सी में इसे ऑटोमैटिक रूप में उतारा जा सकता है और किसी भी प्रकार की खराबी के बाद भी इसमें सुरक्षित बचे रहने का पूरा प्रबंध है।

द्रोण शैरी : यह हेलीकॉप्टर के आकार का द्रोण है जिसका वजन 8 किलोग्राम है और यह 4 किलोग्राम तक का अधिभार उठा सकता है। यह 50 कि.मी. घंटे की रफ़्तार से पहुँच सकता है और इसकी फ्लाइट रेंज 15 कि.मी. है। इसे ऑटोमेटिक रूप से पूरा प्रबंध है।

एम. ए. एयरडिफेन्स एडी-1 : UAV टार्गेट सिस्टम को एयर डिफेन्स वेपन ट्रेनिंग के मूल्यांकन और बहुत से नजदीकी कम दूरी और मध्यम दूरी के वायु रक्षा उपकरणों की जांच के कार्य में लगाया जाता है। यह एयरियल टार्गेट सभी प्रकार की वायु रक्षा चुनौतियों, चाहे 'क्रूज मिसाइल' हों, 'एंटी शिप मिसाइल' हों, 'मानवरहित एयरियल वाहन' हों, 'गाइडेड बम' हों या 'अटैक एयरक्राफ्ट'– सबका पूरी तरह अथवा अलग-अलग रूप में मुक़ाबले को खड़ा दिखाई पड़ता है। इससे आगे इसे और उन्नत करने का लक्ष्य रखा गया है, ऐसा वायु वाहन, जो पावर प्लांट, ऑटोमैटिक फ्लाइट-कंट्रोल सिस्टम, रिकवरी पैराशूट और मॉड्यूलर मल्टीवर्ज़न मिशन पेलोड से युक्त होगा।

द्रोण रिकवरी सिस्टम : उड़ान के दौरान एक द्रोण या दूसरी प्रकार का
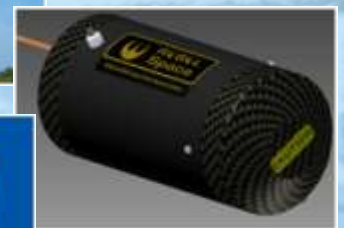
Shri Mahesh Bhagchandka

"The Martin Jetpack is a truly revolutionary product, developed by the extremely talented and innovative engineers at MAC. We have been working on demand assessment and market seeding in India, and the response from the defence, para-military, surveillance, rescue and other potential usershas been overwhelming. I expect this JV to be a landmark of the new-age businesses in India."

—Mahesh Bhagchandka
M2K Group Chairman

UAV है जो उड़ान के समय उपस्थित प्रतिकूलताओं सम्पर्क कट जाने, बैट्री फेल हो जाने अथवा पूरी तरह अनियंत्रित हो जाने अथवा आउटसाइड सिग्नल हो जाने की स्थिति में इसको सुरक्षित रख सकता है, जबकि उस स्थिति में द्रोण अनियंत्रित होकर क्रैश होकर कई वाहनों की क्षति और उसमें रहनेवाले कई उपकरणों की क्षति का कारण बन सकता था।

द्रोण रिकवरी सिस्टम को या तो पायलट की देखरेख में अथवा स्टेंड अलोन सिस्टम के माध्यम से प्रयोग में लाया जाता है, इससे यह पता लग जाता है कि द्रोण आपात स्थिति में है, बहुत मामूली से नुकसान के बाद इस को सुरक्षित उतारा जा सकता है और न केवल इससे महंगे द्रोण को ही सुरक्षित बचाया जाता है बल्कि इससे आसपास के क्षेत्र में संभावित क्षति को भी रोका जा सकता है।

हमारे सहयोगी साझीदार

MARTIN JETPACK

मार्टिन एयरक्राफ़्ट कंपनी लिमिटेड : द मार्टिन जेटपैक तकनीकी क्षेत्र की महारथी है, ठीक उसी प्रकार जैसे जब सबसे पहले हेलीकॉप्टर विकसित किया गया था, तब उपलब्ध संसाधनों के साथ और उसी क्षमता के साथ बाद में वह पायलट के द्वारा अथवा रिमोट कंट्रोल– दोनों से चलने में समर्थ हो गया। जेटपैक ज़मीन से सीध उड़ सकता है (VTOL) और अपने लघु आकार व आयाम के चलते यह छोटी जगह में, भवनों और पेड़ों के बीच भी आसानी से आ-जा सकता है। जबकि अन्य VTOL एयरक्राफ्ट, जैसे हेलीकाप्टर आदि से यह संभव नहीं है। (www.martinjetpack.com)

delair-tech AIRBORNE SENSORING

डेल एयर-टेक, फ्रांस : विश्व के इस पहले लंबी रेंज के UAV को 'बीएंड विजुअल लाइन ऑफ़ साइट' (BVLOS) ने प्रमाणित किया है। यह फ्रांसीसी उड्डयन प्राधिकरण (फ्रेंच एवियेशन अथॉरिटी द्वारा संचालित है।) (www.delair-tech.com)

MARQUES AVIATION

मार्क्विस एवियेशन लि. यूनाइटेड किंगडम: द्रोणें में उन्नत मल्टी पे लोड कन्फिगुरेशन के साथ मॉड्यूलर सिस्टम और लचीलेपन से युक्त निर्माण-प्रणाली है। यह हल्के वजनवाला सौर ऊर्जा से संचालित UAV है जो कई दिनों तक सर्विलांस एरिया में टिक सकता है। इसके साथ ही यह एक विस्तृत रेंज तक अन्वेषण, सर्विलांस और रेकोनाइसेंस मिशन में भी सहायक है।

PY Innovation

पी. वाई इन्नोवेशन, फ्रांस : इस UAV की रेंज क्वाडकोप्टर (42 किग्रा) से ULM (380 किग्रा) तक है जो नागरिकों, सर्विलांस और सुरक्षा-क्षेत्र को स्पर्श करता है। इसके यूरोप में 30 प्रतिशत मार्केट शेयर और वैश्विक स्तर पर 5 प्रतिशत मार्केट शेयर हैं। ज्यादातर ग्राहक यूरोपीयन डिफेन्स एजेंसी से जुड़े हुए हैं। (www.py-innovation.com)

रीबल स्पेश बी.वी., नीदरलैण्ड : द्रोण रिकवरी सिस्टम्स (RDRS) ऐसी इमर्जेंसी रिकवरी का समाधान है जिसका विकल्प कुछ नहीं हो सकता।

(www.rebelspace.eu) ▪

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते

"यदि मैं कर सकती हूँ, तो आप भी..."

पी.टी. उषा

अभिषेक कुमार दुबे
(स्वतंत्र पत्रकार हैं।)

इफ आई कैन, सो कैन यू...'' (यदि मैं कर सकती हूँ, तो आप भी), केरल के पयोली ज़िले से शुरू हुई यह एक ऐसी ख़ास धुन है जिसकी गूँज आज सम्पूर्ण देश में सुनी जा सकती है। दिन-प्रतिदिन यह और भी स्पष्ट और प्रखर होती जा रही है। इम्फाल के निकट बनी झोंपड़ियों से लेकर, हरियाणा की धूल भरी गलियों और राँची के जंगलों तक में इसे साफ़ महसूस किया जा सकता है। देश की उभरती नयी खेल राजधानी हैदराबाद की दीवारें तो इससे पटी पड़ी हैं। केरल के समुद्र तट पर इसने पहले ही अपनी जड़ें जमा रखी हैं। ग़रीबी, अशिक्षा, बीमारियों, सामाजिक बुराइयों और बंधनों के विरुद्ध लड़ रही सकारात्मक सोचवाली ये महिलाएँ यदि कई मोर्चे एक साथ फतह कर सकती हैं तो फिर समाज के दूसरे वर्गों की महिलाएँ भी यह काम कर सकती हैं। इस ख़ास धुन को गुनगुनाते हुए आनेवाले दिनों, महीनों अथवा सालों में खेल जगत् के अंदर और बाहर ऐसी अनेक छुपी हुई प्रतिभाएँ सामने आनेवाली हैं जो दुनिया भर में भारत को एक नयी पहचान दिलाएँगी। इस धुन की रचनाकार हैं केरल की रहने वाली एक दुबली-पतली, शर्मीली और अत्यंत अल्पभाषी लड़की।

जब बॉलीवुड फ़िल्मों की स्क्रिप्ट में महत्त्वपूर्ण भूमिकाएँ पुरुषों के लिए और सिर्फ़ नाचने-गाने की भूमिका में महिलाओं को रखा जाता था, उस दौर में पी.टी. उषा ने अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया। यह वह दौर था जब ओलम्पिक्स तथा एशियन खेलों में भारत की पहचान उसी के कारण थी। उस समय भारतीय धावक दुनिया की इस सबसे बड़ी खेल-प्रतियोगिता में सिर्फ़ खेल-परेड का हिस्सा बनने जाते थे। वर्ष 1984 में लॉस एंजलिस में आयोजित ओलम्पिक के दौरान भारत के लिए एक गौरवपूर्ण क्षण हाथ आते-आते रह गया। उड़न सिख मिल्खा की भाँति पीटी.उषा सिर्फ एक सेकेंड के अंतर से ओलम्पिक मैडल जीतने से रह गयीं। उन दिनों को स्मरण करते हुए पी.टी. उषा कहती हैं, ''जब लॉस एंजलिस में मैंने सेमीफाइनल जीता, उसी दौरान रजत पदक जीतनेवाली अमेरिका की जूडी ब्राउन ने मुझे कहा कि उसे यह देखकर घोर आश्चर्य हो रहा है कि जब भारत में कोई पुरुष आगे बढ़ने का साहस नहीं जुटा पा रहा है, उस समय भारत की एक महिला पूरी दुनिया को रुककर उसे निहारने के लिए मज़बूर कर रही है। उस समय वहाँ की मीडिया ने भी इसे छापा। जब जूडी को दूसरों से यह पता चला कि मैं 100 और 200 मीटर दौड़ में भी भाग लेने वाली हूँ तो उसे यह जानकर घोर आश्चर्य हुआ कि आख़िर एक व्यक्ति इतनी अधिक ज़िम्मेदारियाँ अपने कंधों पर लेकर पाँच अलग-अलग प्रतियोगिताओं में हिस्सा भी ले सकता है और वह भी खेल के सबसे बड़े वैश्विक मंच पर। यहाँ तक कि तत्कालीन विश्व रिकॉर्ड-निर्माता एडविन मोसस ने भी मुझे बधाई दी थी।''

सन् 1984 के लॉस एंजलिस ओलम्पिक में भले ही वह

मामूली अंतर से मैडल जीतने से रह गयीं, लेकिन उसने आनेवाली पीढ़ियों की अनेक 'उषाओं' के हृदय में आनेवाले दिनों में पदक जीतने की उम्मीदें जगा दी। 2012 लंदन ओलम्पिक की पदक-विजेता सायना नेहवाल कहती हैं, ''मेरी मां मुझे अक्सर कहा करती थीं कि पी.टी. उषा मामूली अंतर से ओलम्पिक मैडल जीतने से रह गयी, यदि तुम खेल को गम्भीरता से लेना चाहती हो तो देश के लिए ओलम्पिक में मैडल ज़रूर जीतना''। उषा ने उस समय देशभर में बेटियों के माँ-बाप को यह संदेश दिया कि यदि आप बेटियों को प्यार करें और आगे बढ़ने और दूसरों से मुक़ाबला करने का उन्हें पूरा अवसर दें तो अनेक क्षेत्रों में अधिक-से-अधिक 'उषाएँ' आगे बढ़कर दुनियाभर में भारत का नाम रोशन कर सकती हैं। पी.टी. उषा की अविश्वसनीय उपलब्धियों तथा साहस ने खेल ही नहीं, दूसरे क्षेत्रों में भी बालिकाओं को समान अवसर देने का माहौल तैयार किया।

खेल ऐसी चीज़ नहीं है जो जीवन के अन्यान्य पहलुओं से अछूती रह जाये। यह उस समाज का प्रतिबिम्ब है जिसमें हम रहते हैं। यह महज एक संयोग नहीं है कि पी.टी.उषा-शाइरनी विल्सन-एमडी वलसम्मा त्रय केरल के एक ही तटीय क्षेत्र से आती हैं। जिस समाज में वे रहते थीं, यह उसी का प्रतिबिम्ब था। साक्षरता, लिंगानुपात, महिलाओं हेतु खेल, स्कूल तथा महिला सशक्तिकरण के मापदण्डों के हिसाब से केरल उस समय पूरे देश में सबसे आगे था। प्रस्तुत हैं **'इफ आई कैन, सो कैन यू'** धुन की रचयिता तथा देश की महान् खेलरत्न पी.टी. उषा से हुई बातचीत के मुख्य अंश। यह साक्षात्कार उस शृंखला का हिस्सा है जो भारतीय खेल-यात्रा में महिलाओं के महत्त्वपूर्ण योगदान से आपको रूबरू कराएगा।

खेल-कॅरियर में आपकी मुख्य प्रेरणा क्या रही, यानि रोल मॉडल कौन था?

मैंने अपना खेल-कॅरियर 13 साल की आयु में शुरू किया और मेरी सबसे बड़ी प्रेरणा थी हमेशा और हर जगह जीतने की मेरी चाह। आज खेलों में जितनी सुविधाएँ हैं, उतनी उस समय नहीं हुआ करती थीं। इसलिए आदर्श कोई नहीं था। जब मैंने खेलना शुरू किया तो मैं हमेशा जीतना चाहती थी, मैं कभी हारना नहीं चाहती थी। इसी से मुझे बेहतर करने की प्रेरणा मिलती थी।

आधुनिक भारतीय महिला खेल जगत् की प्रारम्भिक हस्ती पी.टी. उषा केरल से ही क्यों आई?

जब मैंने सातवीं कक्षा पास की, उसी समय केरल सरकार ने खेल स्कूल शुरू किये। इसलिए कन्नूर स्कूल के सबसे पहले बैच की मैं विद्यार्थी थी। उस बैच में मेरी बहन भी थी। इस कारण मुझे खेल में बेहतर प्रदर्शन करने में मदद मिली। उस समय स्कूल स्तर पर ही खेल को लेकर बहुत रुचि ली जाती थी। अन्य राज्यों की तुलना में केरल इस दृष्टि से बहुत आगे था। उस समय स्कूल खेल प्रतियोगिताओं में जो सुविधाओं का स्तर था, वह राष्ट्रीय स्तर पर होनेवाली खेल-प्रतियोगिताओं में भी नहीं था।

आप हमें उस क्षण के बारे में बताइए जब आप लॉस एंजलिस में आयोजित ओलम्पिक खेलों के दौरान सेकेंड के अंतराल से पदक जीतने से रह गयीं और पूरी दुनिया को भारत की बेटी पी.टी. उषा के बारे में पता चला?

"जब आप किसी यूरोपीय देश में जाते हैं, तो वहाँ एथलेटिक्स को लोग बहुत प्यार करते हैं। हमारे यहाँ जब प्रतियोगिता हो रही होती है तो लोग आकर उसका उत्साहवर्धन करना भी ज़रूरी नहीं समझते। किसी खेल में बेहतर प्रदर्शन करने के लिए हमें लोगों को भी जागरूक करना पड़ेगा। इसमें सभी तरफ़ से सहयोग चाहिए। यदि मीडिया एथलेटिक्स का सहयोग करे और इस खेल से जुडी चीज़ें लोगों को समझाए तो इस खेल के लिए भी बडी संख्या में प्रायोजक मिलेंगे। आज तो प्रायोजक ढूँढ़ना बहुत संकट का काम है। दूसरे, हमें छोटी आयु से ही प्रतिभा की खोज करके उसे तराशना पडेगा। हमें उन्हें राज्य-स्तर की एकेडमी में सभी प्रकार की सुविधाएँ प्रदान करते हुए अंतरराष्ट्रीय स्तर के एथलीट से प्रशिक्षण दिलवाना पड़ेगा। प्रत्येक राज्य में इस प्रकार की एकेडमी होनी चाहिये। उनके लिए भोजन, किट, जीवन के लिए सुविधाएँ आदि सभी उच्च स्तर की होनी चाहिये। प्रत्येक महीने उनके रक्त आदि का सेम्पल लेकर उसकी जाँच करके उसी प्रकार का प्रशिक्षण और एक्सपोज़र देना चाहिये। इसलिए ज़मीनी स्तर से ही व्यवस्था को ठीक करना पडेगा।"

जब मैं लॉस एंजलिस ओलम्पिक के लिए रवाना हुई, तब मेरी आयु 20 साल थी और मैंने 400 मीटर दौड़ में महज छह महीने पहले ही भाग लिया था। जब मैंने अंतरराज्यीय दौड़ में भाग लेना शुरू किया, उस समय केरल में 400 मीटर बाधा दौड़ थी ही नहीं। इसलिए मैं अपने राज्य की तरफ से उसमें भाग नहीं ले सकी। मुझे अपने देश में भी सिर्फ़ दो बार यानी बॉम्बे ओपन मीट तथा ओलम्पिक ट्रायल में ही दौड़ने का अवसर मिला। पहली दौड़ में मैंने भारी अंतर से एशियाई खेलों के रिकॉर्ड को तोड़ दिया। दूसरी दौड़ में तो अंतर 40 मीटर का था और कहीं से कोई चुनौती थी ही नहीं। ओलम्पिक बहुत बड़ा खेल-कार्यक्रम होता है, इसलिए उसमें भाग लेने से पहले आपको 10-15 प्रतियोगिताओं में दौड़ने का अभ्यास होना ही चाहिए और वह भी यूरोप के अलग-अलग देशों में। जब मैं लॉस एंजलिस पहुँची, उस समय मुझे तीसरी बार दौड़ने का मौका तब मिला जब मेरे कोच ने मेरा नाम एंजल वुड प्री-ओलंम्पिक में रखवा दिया। इसलिए, प्री-ओलंम्पिक में मैं 400 मीटर दौड़ जीत गयी। उस दौड़ में अमेरिका की जूडी ब्राउन किंग ने भी भाग लिया था। उससे मुझे ओलम्पिक में बेहतर प्रदर्शन करने का साहस प्राप्त हुआ। इसलिए पदक न जीत पाने का एक कारण यह था कि मुझे उससे पहले ज़्यादा प्रतियोगिताओं में भाग लेने का अवसर नहीं मिला। मेरी टांगें तो सामने थीं, लेकिन मैं अपनी छाती सामने नहीं कर पायी। यदि मैंने अपनी छाती भी आगे बढ़ा दी होती तो मुझे कांस्य पदक मिल गया होता। वास्तव में पहले प्रयास में मैं 6.2 सेकेंड के अंतराल से 'हर्डल' किया करती थी। लेकिन पता नहीं उस दिन मुझे 6.8 सेकेंड लग गये। यदि मेरा अंतराल 6.2 सेकेंड का ही होता तो मुझे रजत पदक मिल जाता। इसके अलावा यदि मुझे भारत और दुनिया के दूसरे देशों में दौड़ने का पर्याप्त अवसर मिला होता तो मैं निश्चित रूप से स्वर्ण पदक जीत लेती। इस कारण वह ऐतिहासिक अवसर मेरे हाथ से निकल गया..(यह कहकर वह कुछ देर के लिए गुम सी हो गयीं और फिर खुद को संभालते हुए बात को आगे बढ़ाया)...

आपको 1986 के सिओल एशियन गेम्स में अपना सपना साकार करने का अवसर मिला। उस खेल में तो लग रहा था कि मानो आप अकेली महिला 80 करोड़ भारतीयों का प्रतिनिधित्व कर रहीं थीं ?

दरअसल एशियायी खेलों में भाग लेने से एक महीना पहले मैंने गुडविल गेम्स में भाग लिया था। चूंकि मैं वहाँ अच्छा प्रदर्शन नहीं कर सकी, इसलिए मीडिया ने मुझे कोई तवज़्जो नहीं दी। उन्होंने कहना शुरू कर दिया था कि पी.टी. उषा का कॅरियर अब ख़त्म मानिये। मैंने उस आलोचना को अपने दिमाग में रखा और उसी ने मुझे आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। मैं उन सभी को ग़लत साबित करना चाहती थी। मैं उन्हें बताना चाहती थी कि मेरा कॅरियर अभी ख़त्म नहीं हुआ, बल्कि मैं अभी लंबी पारी खेलूंगी। जब मैं सिओल गेम्स में गयी, तब मेरे अंदर एक भाव था कि मैं अपने देश के लिए बेहतर प्रदर्शन करूंगी। हालांकि पहले कुछ दिनों में हमारे शिविर में निराशा का माहौल रहा, क्योंकि हममें से किसी को पदक नहीं मिला। लेकिन बाद में हमें पाँच स्वर्ण पदक मिल गये। उनमें से चार मैंने ही जीते थे।

भारतीय खेल के मैदान की धाविका पी.टी. उषा अब कोच बन गई हैं। क्या आपको लगता है कि धावकों के लिए देश में माहौल में कुछ बदलाव आया है?

दुर्भाग्य से उसी प्रकार की कुछ ग़लतियां आज भी दोहराई जाती हैं। मैं मामूली अंतर से ओलम्पिक मैडल हार गयी, लेकिन उसी प्रकार की चीज़ें आज भी होती हैं। उदाहरण के लिए मेरी एक छात्रा टिंटू लुका को वह एक्सपोज़र नहीं मिल रहा है जो उसे मिलना चाहिए। उसे राष्ट्रमण्डल खेल, वर्ल्ड मीट तथा एशियायी खेलों के अलावा दूसरा एक्सपोज़र नहीं मिला। हालांकि सुविधाओं के हिसाब से स्थितियाँ बदल गई हैं, लेकिन मेरा कहना है कि धावकों को और अधिक एक्सपोज़र मिलना चाहिये।

आपकी सफलता में आपके कोच ओ.एम. नाम्बियार का योगदान ?

उनके बग़ैर तो मैं आज जो भी कुछ हूँ, वह हो ही नहीं सकती थी। उन्होंने मेरी बहुत मदद की। वह 13 साल की आयु से मेरे कोच रहे। अपने पूरे कॅरियर में मैंने देश के लिए 103 अंतरराष्ट्रीय पदक जीते। इनमें से पाँच पदक एशियन गेम्स में जीते जिनमें चार स्वर्ण थे। सिओल एशियन गेम्स में भारत की तरफ से 475 खिलाड़ी भाग लेने गए थे। उस समय हमने पाँच स्वर्ण पदक जीते, जिनमें चार अकेले मेरे थे। आज बहुत अधिक जागरूकता है और और पदक जीतने के लिए खिलाड़ियों के प्रशिक्षण तथा एक्सपोज़र पर पैसा भी बहुत खर्च किया जाता है। लेकिन हमारे समय में तो एक फूटी कौड़ी भी खर्च नहीं होती थी। परन्तु उसके बावजूद मैंने 103 पदक जीते। ओलम्पिक में पदक जीतने के करीब भी मैं नाम्बियार सर की मदद, सहयोग तथा त्याग के कारण ही पहुँच सकी।

अपने परिवार के बारे में बताइए, जहाँ आप पली-बढ़ीं और आपके दोस्तों एवं परिवार ने क्या सहयोग किया?

प्रतिभा तो बहुत लोगों में होती है। लेकिन प्रायः सभी परिवार बेटों को डॉक्टर, इंजीनियर अथवा आई.ए.एस. अफ़सर बनाना चाहते हैं। यदि खेलों में जाना हो तो यह सभी की आख़िरी पसंद होती है। लेकिन यदि किसी में वास्तव में खेल-प्रतिभा है और बच्चा खेल में आगे बढ़ना चाहता है, तो मां-बाप को चाहिए कि वे उसकी मदद करें। जब मैंने खेलना शुरू किया तो मेरे पिता, माता, बहन, भाई आदि सभी ने मुझे बहुत प्रोत्साहित किया। विवाह के पश्चात् मेरे पति, उनके परिवार और यहाँ तक कि मेरे बेटे की तरफ़ से भी मुझे पूर्ण सहयोग मिला। उनके सहयोग के कारण ही मैं अभी तक कोचिंग दे पा रही हूँ। इसलिए परिवार का सहयोग बहुत ज़रूरी है। उसके बग़ैर आप कुछ नहीं कर सकते। अपने परिवार और दोस्तों के सहयोग से ही आप अपने जीवन में बेहतर कर पाते हो।

कोच बनने का ख़्याल कैसे आया, क्या खेल के प्रति आपके जुनून के कारण या फिर कोई अन्य कारण ?

मुझे इस बात की खुशी है कि मैं अपने देश के लिए 103 पदक जीत सकी। लेकिन ओलम्पिक में सिर्फ़ एक सेकेंड के अंतर से पदक न जीत पाने का मलाल मुझे आज भी है। हमारे ज़माने में किसी प्रकार की कोई

सुविधा नहीं हुआ करती थी और अपनी स्वयं की कड़ी मेहनत के कारण मैं उस स्तर तक पहुँच सकी। हमारे देश में प्रतिभाओं की कमी नहीं है। यदि वे कम आयु से ही वैज्ञानिक एवं सुनियोजित तरीक़े से अभ्यास शुरू कर दें, तो वें एथलीट में ओलम्पिक मैडल ही नहीं, बल्कि दूसरे खेलों में भी पदक जीत सकेंगे। मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि प्रतिभा एवं कड़ी मेहनत के साथ यदि पर्याप्त सुविधाएँ और एक्सपोज़र मिल जाए तो हमारे लिए ओलम्पिक में पदक जीतना बिल्कुल भी मुश्क़िल नहीं है। यही सोचकर मैं लगी हुई हूँ और यही सोचकर 2000 में मैंने एथलीट स्कूल शुरू किया। हमारी छात्रा टिंटू एशिया में 800 मीटर में टॉपर है और ओलम्पिक में भी वह 11वें नम्बर पर रही। यदि उसे सही एक्सपोज़र मिल जाए तो वह नयी ऊँचाइयाँ छू सकती है। जूनियर लेवल पर एक और बालिका उभर रही है। एशियन जूनियर मीट में उसने स्वर्ण पदक जीता है। वह 800 मीटर जूनियर कैटेगरी में एशिया में टॉपर है।

दौड़ सभी खेलों का मर्म है। जिस दिन से चलना सीखते हैं तभी से हम दौड़ना शुरू कर देते हैं। फिर भी एथलेटिक्स में हम विश्व में अपनी जगह नहीं बना पाए हैं। यह कमी क्यों है?

जब आप किसी यूरोपीय देश में जाते हैं तो वहाँ एथलेटिक्स को लोग बहुत प्यार करते हैं। हमारे यहां जब प्रतियोगिता हो रही होती है तो लोग आकर उसका उत्साहवर्धन करना भी ज़रूरी नहीं समझते। किसी खेल में बेहतर प्रदर्शन करने के लिए हमें लोगों को भी जागरूक करना पड़ेगा। इसमें सभी तरफ से सहयोग चाहिए। यदि मीडिया एथलेटिक्स का सहयोग करे और इस खेल से जुड़ी चीज़ें लोगों को समझाए तो इस खेल के लिए भी बड़ी संख्या में प्रायोजक मिलेंगे। आज तो प्रायोजक ढूँढ़ना बहुत संकट का काम है। दूसरे, हमें छोटी आयु से ही प्रतिभा की खोज करके उसे तराशना पड़ेगा। हमें उन्हें राज्य-स्तर की एकेडमी में सभी प्रकार की सुविधाएँ प्रदान करते हुए अंतरराष्ट्रीय स्तर के एथलीट से प्रशिक्षण दिलवाना पड़ेगा। प्रत्येक राज्य में इस प्रकार की एकेडमी होनी चाहिये। उनके लिए भोजन, किट, जीवन के लिए सुविधाएँ आदि सभी उच्च स्तर की होनी चाहिये। प्रत्येक महीने उनके रक्त आदि का सैंम्पल लेकर उसकी जाँच करके उसी प्रकार का प्रशिक्षण और एक्सपोज़र देना चाहिये। इसलिए ज़मीनी स्तर से ही व्यवस्था को ठीक करना पड़ेगा। हमारे लिए तो किसी प्रकार की सुविधाएँ नहीं थीं, लेकिन फिर भी अपने स्तर पर प्रयास करके मैंने दिखा दिया है कि एक लड़की ओलम्पिक्स में 11वें स्थान पर पहुँच सकती है।

आपसे प्रेरणा लेकर आज बहुत-सी महिला खिलाड़ी विश्वस्तर पर चमक रही हैं। सानिया, साइना और मैरी कोम आदि को देखकर आपको कैसा महसूस होता है?

पहले सटल्स में पदक जीतना बहुत मुश्किल था। लेकिन सानिया ने दिखा दिया कि कैसे हम देश के लिए ओलम्पिक में पदक जीत सकते हैं। अब पी.वी. सिंधु भी अच्छा प्रदर्शन कर रही है। मुझे विश्वास है कि बैडमिंटन में आनेवाले दिनों में और भी अनेक प्रतिभाएं सामने आयेंगी। चाहे वह शटल हो या फिर टेनिस, एथलेटिक्स, वॉलीबॉल अथवा कोई अन्य खेल– हमारे यहाँ प्रतिभाओं की कमी नहीं है। बस ज़रूरत इस बात की है कि काम ज़मीनी स्तर से शुरू होना चाहिए। जो बच्चे खेल में ही आगे बढ़ना चाहते हैं, उन्हें छाँटकर प्रोत्साहित करना चाहिये। फिर उन्हें सरकार और समाज की तरफ़ से पर्याप्त सहयोग मिले। किसी भी भावी एथलीट के लिए प्रारंभिक साल बहुत महत्त्वपूर्ण होते हैं– उनके लिए ज़रूरी सुविधाएँ, सही भोजन, पोषण की ठीक प्रकार से चिन्ता की जाये। यदि हम इस संबंध में एक सही तंत्र विकसित कर लें, तब हमें और भी बहुत सी सानिया नेहवाल और मैरी कोम मिल सकती हैं।

मुझे कई महिला एथलीट से बात करने का अवसर मिला। उनमें से अधिकतर का कहना है कि उनकी प्रेरणा आप हैं। आप अपने मैडल एवं उपलब्धियाँ किसे समर्पित करना चाहेंगी?

मेरे सामने बहुत नाम हैं...नाम्बियार सर, मेरे माता-पिता, मेरे पति, हमारे बच्चे और देश के हज़ारों लोग... मैं उन सभी को अपने मैडल समर्पित करना चाहूँगी। मुझे लगता है कि लोग आज भी मुझे पहचानते हैं और मेरा सम्मान करते हैं। मैंने खेल को 1994 में छोड़ दिया था। उसके करीब 20 साल बाद आप मेरा साक्षात्कार करने आए हैं। इसका मतलब है कि लोग आज भी मेरा सम्मान करते हैं। मैं जहाँ कहीं भी जाती हूँ, लोग मुझे पहचानते हैं। मेरे लिए यही सबसे बड़ा सम्मान है। मुझे तब और भी खुशी होती है जब मैं देखती हूँ कि अधिक-से-अधिक संख्या में महिलाएँ खेल में आगे बढ़ रही हैं।

देश की महिलाओं के लिए आपका संदेश?

भारतीय महिलाओं में बहुत गुण एवं प्रतिभा है। यदि उनमें गुण हैं, तो मैं चाहती हूँ कि वे आगे आएं और किसी-न-किसी क्षेत्र में आगे बढ़ें। हमेशा शुरू में ही अधिक-से-अधिक सुविधाएँ और बड़े सपने मत देखिये। अपना काम ईमानदारी से करते रहो, मुझे 100 प्रतिशत विश्वास है कि आपको सफलता ज़रूर मिलेगी। यदि मैं कर सकती हूँ तो आप भी कर सकती हैं...

जीवन के अन्य क्षेत्रों की भाँति खेलों में भी महिलाएँ आगे आ रही हैं। चुनौतियाँ कम नहीं हैं। गर्भ से लेकर मीनार तक लिंगभेद से भी लड़ना होगा। महिलाओं को लेकर जो ग़लतफहमियां हैं, उन्हें दूर करना होगा। लेकिन इन सबके बावजूद वे पीछे मुड़कर नहीं देख रही हैं। ■

हृदय-रोग से मुक्ति प्राकृतिक चिकित्सा

डॉ. बिन्द किशोर गुप्ता 'बिन्दु'
(अध्यात्म साधना केन्द्र नेचुरोपैथी सेन्टर (छत्तरपुर, नयी दिल्ली) में मुख्य चिकित्सक हैं)

हृदय रोग जीवनशैली से जुड़ा रोग है। आजकल इस रोग की समस्या बहुत तेज़ी से बढ़ रही है। भारत के ग्रामीण इलाकों की अपेक्षा शहरी क्षेत्रों में यह बीमारी अधिक पाई जाती है और हार्टअटैक से प्रतिवर्ष लाखों लोगों की मृत्यु हो जाती है। इस रोग का मुख्य कारण अनियमित दिनचर्या, अनुचित खानपान, अधिक मानसिक तनाव, ब्लडप्रेशर, शुगर की दवाइयों का लगातार सेवन, सिगरेट, तम्बाकू, धूम्रपान, अधिक वसायुक्त भोजन करने से कोलेस्ट्राल-लेवल बढ़ जाता है और आर्टरी ब्लॉक हो जाती है। इसके अलावा अधिक बी. पी. , हृदय का कमज़ोर होना, अस्थमा के कारण भी विकार उत्पन्न होते है। कब्ज़ पाचन ठीक न होना, हृदय की मांसपेशियों का कमज़ोर होना, वसायुक्त भोजन अधिक रक्तचाप (बी.पी.), मांसाहार अधिक लेना– ये आर्टरी में 80 या 90 प्रतिशत ब्लॉकेज होने के कारण हैं। इन सब कारणों से वॉल्व खराब होना, रूमेटिक फीवर हार्ट डिसीज़ कोरोनरी आर्टरी हार्ट डिसीज़ (CAD) हो जाती है।

लक्षण– नॉर्मल चलने में श्वास फूलना। बायीं ओर सीने व हाथ में दर्द। माथे में पसीना आना, सीने के बीच में जलन, सीने में खिंचाव व भारीपन लगना, धड़कन का असामान्य गति से तेज़ होने का अनुभव होता है जो चलने व दौड़ने के दौरान बढ़ जाता है किंतु आराम करने पर राहत मिलती है। ऐसी स्थिति में बी. पी. की जांच करायें। ज्यादा बी.पी. है तो खून की जाँच, लिपिड प्रोफाइल (कोलेस्ट्रॉल), ई.ई.ज़ी. की ज़ांच करायें। आमतौर पर हृदय रोगी 80 प्रतिशत ब्लॉकेज़ होने के बाद हृदय रोग की शिकायत करते हैं, ऐसी स्थिति एंज़ाइना कहलाती है। ऐसे लक्षण होने पर तुरंत हृदय रोग विषेशज्ञ से मिलकर सलाह लें और रोग निदान करायें। आवश्यकता हुई तो डॉक्टर टी.एम.टी. टेस्ट या एंज़ियोग्राफी कराकर रोग की सही स्थिति का पता लगाते हैं। यदि बाईपास सर्जरी को कहा जाये तो दो-तीन डॉक्टरों से सलाह अवश्य लें।

प्राकृतिक चिकित्सा– प्राकृतिक चिकित्सा के उपचार में मड पैक, एनिमा, कटिस्नान, रीढ़ स्नान, मेहन स्नान, पेट का गर्म ठण्ढा सेक व शरीर की हल्की मालिश करायें। शरीर की अंतर्बाह्य सफ़ाई ज़रूरी है। समय-समय पर प्राकृतिक उपायों से शरीर का शोधन अवश्य करायें।

योग– भोजन के बाद वज्रासन तथा थकान महसूस होने पर शवासन करें। मकरासन, पवनमुक्तासन, हल्की कपालभाति, नाड़ी-शोधन, भ्रामरी प्राणायाम, प्रेक्षाध्यान, कायोत्सर्ग का प्रतिदिन अभ्यास करें।

आहार– हृदय रोग न हो, इसके लिये हृदय को लाभ पहुंचाने वाले आहार का सेवन करना आवश्यक है। फल और सब्जियाँ शरीर के लिये बहुत अच्छी हैं। इनमें एंटीऑक्सीडेंट्स होते हैं, जिससे ये शरीर को बहुत लाभ पहुँचाते हैं। ये शरीर की रोग-प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाते हैं और रोगी शरीर को निरोगी बनाते हैं। अनार, आँवला, सेब, पपीता, अंगूर, नींबू-रस, गाय का दूध , जौ का पानी (बार्ली वाटर), कच्चे नारियल का पानी, दलिया, सब्जी, सूप आदि लाभप्रद हैं। अर्जुन की छाल के सेवन से भी लाभ मिलता है। मांसाहार छोड़ दें। धूम्रपान और मादक पदार्थों का सेवन न करें।

अन्य उपाय– अनियमित दिनचर्या से बचें, भूख से अधिक खाना न खायें, वजन कम करें, क्रोध न करें, मन में तनाव व गुस्सा न आने दें। किसी काम को करने का मन न हो तो 'न' कहने की आदत डालें। खाना खाने के बाद पेशाब अवश्य करें। हृदय के रोगी घी, तेल या उनसे बने भोज्य पदार्थों का सेवन बिलकुल न करें। भोजन के साथ पानी न पियें। भोजन करने के 60 मिनट बाद और भोजन करने से 40 मिनट पहले पानी पीना ठीक रहता है। तेज़ धूप में चलने, व्यायाम या शारीरिक श्रम के बाद या शौच जाने के बाद उसी समय पानी न पियें। यदि भूख न हो तो भोजन न करें। चिंता, हड़बड़ी, भाग-दौड़ की प्रवृत्ति त्याग दें। प्रतिदिन सुबह शौचादि से निवृत्त होकर प्रार्थना या ध्यान अवश्य करें। इससे तनाव दूर होकर मन को शान्ति मिलती है तथा आत्मबल की वृद्धि होती है और सकारात्मक सोच आती है, निराशा समाप्त होती है। तनावरहित गहरी नींद, संयमित जीवन आवश्यक है और यही स्वास्थ्य की कुञ्जी है। जो लोग प्रकृति के नियमों का पालन करते है, उन्हें हृदय रोग नहीं होते। कहा भी गया हैं– 'रात का जल्दी सोना और सुबह जल्दी उठना व्यक्ति को स्वस्थ, समृद्ध और सुखी बनाता है।' ■

योग द्वारा

डॉ. बिपिन पतंजलि
(प्रख्यात योग-शिक्षक हैं)

महानगरों में रहनेवाले लोग वायु-प्रदूषण के कारण हृदय-रोग से पीड़ित होते हैं। छोटे बच्चे भी प्रदूषित वातावरण में सांस लेने के कारण अल्पायु में ही हृदय-रोग के शिकार बन रहे हैं। सूर्योदय के समय किसी पार्क में जाकर भ्रमण करने से शुद्ध वायु की समुचित आपूर्ति होती है जिससे शुद्ध रक्त-धमनियों में दौड़ता है, तो हृदय लंबे समय तक नीरोग रहता है। विशेषज्ञों के अनुसार प्रदूषित वायु के कारण रक्त-धमनियां कठोर हो जाती हैं जिससे हार्ट अटैक की संभावना बढ़ जाती है। शरीर में शुद्ध वायु अर्थात् ऑक्सीजन की समुचित आपूर्ति के लिए प्राणायाम करना चाहिए, जिससे जीवनीशक्ति प्राप्त होती है और हृदय रोग में सुधार होता है।

हरी पत्तेदार सब्जियाँ, रेशेदार फल, अंकुरित चने, अंकुरित मूंग आदि हृदय के लिए बहुत ही लाभप्रद हैं। लौकी की सब्जी हृदय के लिए बहुत लाभकारी होती है।

सूर्योदय के समय प्रकृति में शुद्ध वायु का संचार होता है। इस समय प्राणायाम का अभ्यास विशेष रूप से लाभप्रद होता है। अनुलोम-विलोम प्राणायाम का अभ्यास करने से वात, पित्त और कफ– तीनों में संतुलन स्थापित होता है। वात, पित्त और कफ के प्रकोप से रक्तवाहिनी में अवरोध उत्पन्न होता है। हृदय-रोगियों की धमनियों में कोलेस्ट्रॉल एकत्र होने से हृदयरोग उत्पन्न होता है, जो अनुलोम-विलोम प्राणायाम के अभ्यास से दूर होता है। इनके अतिरिक्त ओंकार का जाप, कपालभाती प्राणायाम, भ्रामरी प्रणायाम भी बहुत लाभकारी है। कपालभाती प्राणायाम के अभ्यास से हृदय की कार्यक्षमता विकसित होती है और फेफड़ों के संकुचन और प्रसारण की क्षमता बढ़ती है।

आसनों के अभ्यास से भी हृदय को लाभ मिलता है और हृदय की कमज़ोरी दूर होती है। आसनों में शवासन, भुजंगासन, ताड़ासन, मकरासन का अभ्यास हृदय-रोगियों के लिए बहुत लाभकारी है।

कैंसर का मुफ्त इलाज कर रहे डॉ. भारत भूषण

आज के इस भैतिकतावादी युग में बहुत कम ऐसे लोग हैं जो इंसानियत का ज़िन्दा रखे हुए हैं या ये कहिए की मानव ही मानव के काम आता है इसका आइना समाज के सामन रख रहे हैं। ऐसे समाजसेवियों की सूची में शामली के निजी चिकित्सक डॉ. भारत भूषण भारद्वाज का नाम भी शामिल है। चिकित्सा पेशे से जुड़े डॉ. भूषण समाजसेवा के साथ मानवता की मिसाल हैं। ऐसे मुकाम पर जब मरीज को जीवन में निराशा ही निराशा नजर आती है, उस समय में वे उनकी जिन्दगी में उम्मीद की किरण बने हुए हैं। डॉ. भारत भूषण के मरीजों के प्रति सेवाभाव उनके जज्बे के सामने उन मरीजों की कैंसर-जैसी असाध्य बीमारी भी घुटने टेक देती है।

शामली में मरीज़ों का इलाज करते चिकित्सक भारत भूषण भारद्वाज

वे किसी स्वार्थ या प्रचार के लिए नहीं बल्कि मानवता के नाते निःशुल्क उपचार कर अंधेरे जीवन में रोशनी भर रहे हैं। इनके साथ-साथ वे नाभि, पेट व सिर दर्द का उपचार कर आसपास के क्षेत्र के साथ दूर-दराज से आनेवाले ग़रीब लोगों के जीवन को खुशहाल बना रहे हैं। मूलरूप से गाँव कसेरवा कलां के निवासी 70-वर्षीय डॉ. भारत भूषण शामली में झिंझाना रोड पर पिछले 35 वर्षों से क्लीनिक चला रहे हैं। डॉ. भारत भूषण को ऑल इंडिया ब्राह्मण महासभा द्वारा चिकित्सा रत्न उपाधि से भी सम्मानित किया जा चुका है।

प्रेरणास्रोत

पिता जनार्दन स्वरूप, स्वतंत्रता सेनानी चाचा रगबीर शर्मा व श्यामसुंदर उनके प्रेरणा स्रोत हैं। डॉ. भूषण का कहना है कि उनके लिए चिकित्सा व्यवसाय नहीं, बल्कि एक मिशन है। ■

बाल-जगत्

गणेश चतुर्थी की चित्रमय यात्रा
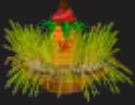
अंजु बाला प्रबंधक (कॉरपोरेट संचार), गेल (इण्डिया) लिमिटेड

गौरीनन्दन गणेश का जन्मदिवस यानि गणेश चतुर्थी अथवा विनायक चतुर्थी ऐसा रंगारंग उत्सव है जो भारत के अधिकतर क्षेत्रों में बहुत ही हर्ष और उल्लास के साथ मनाया जाता है। यह उत्सव प्रतिवर्ष हिंदू कैलेंडर के अनुसार भाद्रपद माह (अगस्त-सितम्बर) की चतुर्थी यानि शुक्ल पक्ष के चौथे दिन शुरू होता है और अनन्त चतुर्दशी तक पूरे दस दिन मनाया जाता है। मैं और मेरी बेटी जैसे लाखों लोग इसे हर साल अपने अपने घरों में मनाते हैं।

गणेश चतुर्थी से जुड़ी कहानी इस प्रकार है कि एक बार गणेशजी को चन्द्रलोक में एक दावत में बुलाया गया। वहाँ उन्होंने जी भरकर भोजन किया। भोजन के पश्चात् उन्हें लगा कि उनका पेट इतना भर गया है कि मानो फट जाएगा। इसलिए ऐसा न हो यह सुनिश्चित करने के लिए उन्होंने एक साँप अपने पेट के चारों तरफ बाँध लिया। इस कारण वे स्वयं का संतुलन नहीं बना पा रहे थे, इसलिए गिर पड़े। आसमान से चाँद यह सब देख रहा था, इसलिए उसे गणेशजी पर हँसी आ गयी। उसी समय गणेशजी ने उसे सृष्टि से गायब हो जाने का शाप दे दिया। चाँद ने इस दुर्व्यवहार के लिए माफ़ी माँगी और भगवान् शिव के हस्तक्षेप के कारण गणेशजी ने अपने शाप में थोड़ा बदलाव करते हुए कहा कि चाँद सिर्फ़ एक दिन के लिए पूरी तरह गायब होगा और बाकी दिनों में थोड़ा-थोड़ा दिखाई देगा।

गणेशोत्सव के दौरान गणेशजी की अलग-अलग आकारों में छोटी-बडी प्रतिमाएँ बनाई जाती हैं। लोग उन्हें अपने घरों पर दैवीय अतिथि की भाँति स्थापित करते हैं। कुछ लोग डेढ़, कोई पाँच, कोई सात तो कोई दस दिन के लिए स्थापित करते हैं। इस अवसर पर जो पूजा होती है, उसका नेतृत्व परिवार का कोई भी सदस्य कर सकता है। मेरे परिवार में पूरे दस दिन तक इस पूजा का नेतृत्व मेरी बेटी अवनी करती है। यहाँ चित्रों के माध्यम से बताया गया है कि हिंदू शास्त्रों के अनुसार मैं और मेरी बेटी गणेश-पूजा और स्थापना किस प्रकार करती हैं।

1

सबसे पहले वह स्थापना स्थल की दीवार पर खूबसूरत रंगों से खूबसूरत पेंटिंग बनाती है

2

उसके बाद वह स्थापना के लिए आसन बिछाती है और फिर भगवान् गणेश की स्थापना से पूर्व उस स्थान पर चावल और हल्दी छिड़कती है

3

उसके बाद वह स्थापना के लिए भगवान् गणेश को लाती है

4

तत्पश्चात् भगवान् गणेश को पत्तों के बिस्तर पर स्थापित किया जाता है। परम्परा के अनुसार गणेश पूजा में 21 पत्ते प्रयोग होते हैं। उनमें मुख्य रूप से तुलसी, अर्जुन, गण्डकी आदि शामिल होते हैं।

5

उसके बाद बच्चों के सबसे प्रिय भगवान् को अलग-अलग रंगों के फूल तथा मालाएँ अर्पित की जाती हैं।

6

फिर वह पाँच पान के पत्ते रखती है। प्रत्येक पत्ते पर वह एक सुपारी, हल्दी, कुमकुम, अखरोट, बादाम और खरीक रखती है। उसके बाद वह पाँच अलग-अलग प्रकार के फल एक-एक पान के पत्ते पर रखती है।

7

उसके बाद वह पूजा के लिए दीप प्रज्ज्वलित करती है और धूप-अगरबत्ती जलाती है

8
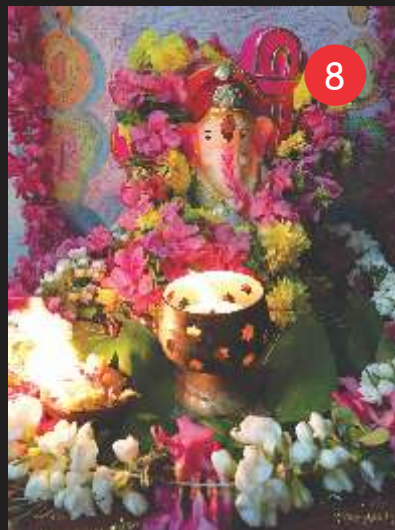
उसके बाद वह एक दिये में कपूर रखती है और नौ अलग-अलग प्रकार के खाद्य-पदार्थ भोग के लिए रखती है। उसी में से प्रसाद वितरित होता है।

9

परम्परागत रूप से नौ प्रकार के खाद्य-पदार्थ तैयार किये जाते हैं, कुछ मीठे होते हैं तो कुछ नमकीन। कुल मिलाकर पूर्ण भोग तैयार किया जाता है।

10

वही भोग प्रसाद के लिए प्रयोग होता है और जो भी पूजा के समय मौजूद रहता है अथवा उस दिन गणेश-दर्शन के लिए आता है, उनमें वितरित किया जाता है

11

उसके बाद हम दोनों झुककर गणेशजी से आशीर्वाद मांगते हैं और निवेदन करते हैं कि वे हमारे सपने और हमारी इच्छाएँ पूर्ण करें।

घर पर गणेश पूजा करने के लिए कोई बंधन नहीं है। हम अपनी श्रद्धानुसार यह काम कर सकते हैं। वैदिक पुजारी पूजा के सभी नियमों का सख़्ती से पालन करते हैं। पूजा करते समय हमें स्वच्छ तन और स्वच्छ मन रखना चाहिए। पूजा में समर्पण का बड़ा महत्त्व है, पूजा-विधि का नहीं। जितना हो सके, सादा रहें। सजावट और विधि-विधान से अधिक ज़रूरी है कि प्रार्थना पर ध्यान दें।
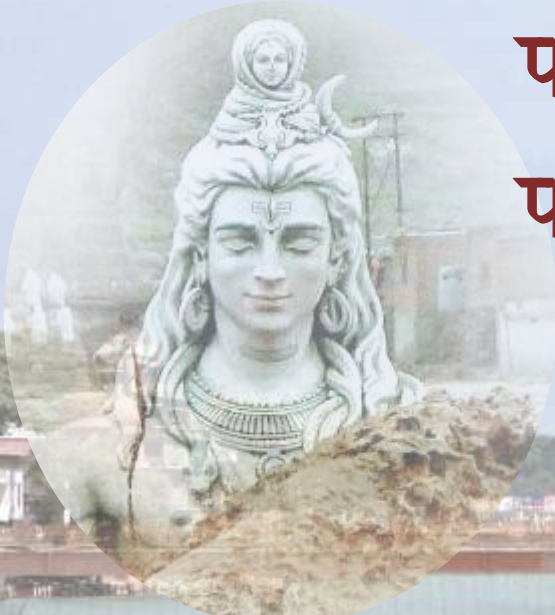
पावन गंगा तरल तरंगे, पाप मोचनी हर हर गंगे!

श्याम सुन्दर शर्मा

इसका अपवाह क्षेत्र अमेजन के समान बड़ा नहीं, इसकी लम्बाई नील नदी से ज्यादा नहीं, इसकी गहराई यांग्टीसी के जैसी नहीं, फिर भी इस नदी को जनमानस में वह स्थान प्राप्त है जो विश्व की किसी भी अन्य नदी को प्राप्त नहीं है। विश्व की एकमात्र नदी जिसे हम हिन्दुस्तानी 'माँ' शब्द से सम्बोधित करते हैं। आई.सी.एस. के साक्षात्कार में जब एक प्रश्नकर्ता ने सुभाषचन्द्र बोस से पूछा कि दुनिया में सबसे अच्छा पानी किस नदी में बहता है, तो सुभाष बाबू ने जवाब दिया ''टेम्स में !'' प्रश्नकर्ता ने कहा ''सुना है तुम्हारी गंगा नदी का भी पानी बहुत अच्छा है'' सुभाष बाबू ने तुरन्त पलटकर कहा ''गंगा में पानी कहाँ है साहब, उसमें तो अमृत बहता है।'' मरते हुए व्यक्ति के मुँह में जिस के जल की दो बूंदें इस भवसागर से उसकी मुक्ति सुनिश्चित कर देती हैं, ऐसी है हमारी माँ गंगा।

हिंदु-संस्कृति का यह जीवंत प्रवाह युगों-युगों से भारत के सामाजिक, आर्थिक ताने-बाने का आधार रहा है। गंगा को पर्यटन, परिस्थिति की, आर्थिक, सामाजिक कितने ही आयामों से समझा जा सकता है। जितनी दृष्टियों से माँ गंगा को समझा जाये उतना ही सम्मान इसके प्रति बढ़ता जाता है।

आर्थिक महत्ता- 10 लाख वर्ग किलोमीटर मे फैली पूरी गंगा घाटी लगभग 110 सेमी. वार्षिक वर्षा का क्षेत्र है। नदी द्वारा बहाकर लाई हुई उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी का यह विषाल मैदान पूरे भारत का लगभग 26.4 प्रतिषत भूभाग घेरता है। देश की लगभग 43 प्रतिशत जनसंख्या इस मैदान में रहती है। यह पूरा मैदान गेहूँ उत्पादन का केन्द्र है। इस दृष्टि से गंगा नदी भारत की अन्नपूर्णा है।

आँकड़ों के आइने में– 2,525 किलोमीटर लम्बी यह देश की सबसे बड़ी नदी है। 4,000 मीटर उँन्चाई पर स्थित गौमुख से निकलकर लगभग 300 किलोमीटर की यात्रा पहाडों में करके हरिद्वार में यह मैदान में उतरती है। 2008-09 में इसे राष्ट्रीय नदी का दर्जा दिया गया। गंगा में पाई जाने वाली गंगा डॉल्फिन देश का राष्ट्रीय जलीय जीव है।

हाल ही में हुए एक शोध के अनुसार आज केवल ऋषिकेश तक का ही पानी पीने लायक स्थिति में बचा है। गंगा जल के प्रति देश में जो श्रद्धा का भाव है, उसे देखते हुए यह विचारणीय स्थिति है। ऋषिकेश से ऊपर देवप्रयाग, रुद्रप्रयाग, कर्णप्रयाग, नन्दप्रयाग व विष्णुप्रयाग से होता हुआ गंगाजल हिमालयी जड़ी बूटियों से छनकर आगे बढ़ता है। किन्तु अब इस क्षेत्र में दर्जनों छोटे-बड़े बाँध बनाकर गंगा के अनवरत प्रवाह को अवरुद्ध कर दिया गया है।

गंगा की तीन प्रमुख धारायें– हिमालय में गरुण गंगा, हनुमान गंगा-जैसी गंगा बेसिन की हर छोटी-बड़ी धारा गंगा का ही निर्माण करती हैं। क्षेत्र में कोटि गंगा की अवधारणा भी प्रचलित है जिसके अनुसार करोड़ों धारायें मिलकर गंगा का निर्माण करती हैं। फिर भी तीन धारायें प्रमुख हैं– 1. गंगोत्री से निकलनेवाली भागीरथी, 2. केदारनाथ से निकलनेवाली मंदाकिनी और 3. बद्रीनाथ से निकलनेवाली अलकनन्दा। देवप्रयाग में गंगा अपने समन्वित रूप में आ जाती है।

बाँधों की बेड़ियों में जकड़ी गंगा- ऋषिकेश के ऊपर, जहाँ गंगा अपनी पूरी गति में प्रवाहमान है, अनेक छोटे-बड़े बाँध बनाकर गंगा की अविरल धारा को अवरुद्ध कर दिया गया है। यहाँ टिहरी, मनेरीमाला, बद्रीनाथ, तपोवन, थारली, तिलवारा, उरगम, विष्णुप्रयाग आदि स्थानों परजल विद्युत परियोजनाओं के नाम पर गंगा की धारा को बाँध दिया गया है। इनके अलावा कालीगंगा, कोटलीभेल, मदमहेश्वर, तपोवन, विष्णुगढ़ तथा श्रीनगर में इस प्रकार की परियोजनायें प्रस्तावित हैं। हरिद्वार के बाद मैदानी क्षेत्र में गंगा पर सिंचाई की दृष्टि से अनेक बाँध बनाए गये हैं जिनके कारण गंगा की अविरल धारा अवरुद्ध हुई है एवं गंगा डॉल्फिन-जैसे जलीय जीवों का अस्तित्व संकट में पड़ गया है।

गंगा डॉल्फिन– गंगा नदी के मैदानी प्रवाह में पाया जानेवाला यह खूबसूरत व जुझारू जलीय जीव है जो बहुत प्रतिकूल परिस्थितियों में भी जीवित रहने की क्षमता रखता है। नरौरा परमाणु संयंत्र के रासायनिक अवशिष्ट, कानपुर के चमड़ा उद्योगों के दूषित कचरे एवं पश्चिमी उत्तरप्रदेश की चीनी मिलों के अवशिष्ट के कारण गंगा डॉल्फिन का जीवन संकट में पड़ गया हैं। 1966 में नरौरा, 1975 में फरक्का एवं 1984 में बिजनौर में बड़े बाँध बनने के बाद गंगा डॉल्फिन का प्राकृतिक आवास तीन भागों में बँट गया है। 1996 में गंगा डॉल्फिन को लुप्तप्राय प्रजाति घोषित किया गया। यह भारत के राष्ट्रीय जलीय जीव की औपचारिक उपाधि से अलंकृत है। प्रतिवर्ष 5 अक्टूबर को डॉल्फिन दिवस मनाकर सरकारें इस सुन्दर जीव के प्रति अपने कर्तव्यों की इतिश्री कर लेती हैं।

अब तक के प्रधानमंत्रियों का रवैया–

1. जवाहरलाल नेहरू- जन्म तीर्थराज प्रयाग में, शिक्षा विदेश में, लम्बे कार्यकाल में गंगा के बारे में कोई विचार नहीं।

2. लालबहादुर शास्त्री- जन्म मुग़लसराय में गंगा किनारे, छोटा कार्यकाल, गंगा के बारे में कोई योजना नहीं।

3. इन्दिरा गाँधी- लम्बा कार्यकाल, किन्तु दिमागी संरचना राजनैतिक अधिक, सांस्कृतिक कम, कोई योजना नहीं।

4. राजीव गाँधी- पहली बार गंगा की चिन्ता किन्तु समझ की कमी, दशाश्वमेध घाट पर ही सीवरेज प्लांट बनवा दिया।

5. वी.पी.सिंह- गंगा के समीप मांडा में जन्म अल्प कार्यकाल, गंगा के बारे में कोई विचार नहीं।

6. चन्द्रशेखर- गंगा के किनारे बलिया में जन्म, मात्र चार माह का कार्यकाल, कोई प्रगति नहीं।

7. नरसिंह राव- गंगा एक्शन प्लान की घोषणा, किन्तु क्रियान्वयन लालफीताशाही की भेंट।

8. अटल बिहारी वाजपेयी– राष्ट्रीय नदी संरक्षण योजना एवं नदी जोड़ो योजना-जैसी दीर्घकालीन योजनाओं की घोषणा, किन्तु क्रियान्वयन राजनैतिक विरोधों और कार्यपालिका की शिथिलता की भेंट।

9. मनमोहन सिंह– 2009 में राष्ट्रीय गंगा नदी बेसिन प्राधिकरण का गठन, प्रधानमंत्री अध्यक्ष, प्राधिकरण की कोई बैठक नहीं, गंगा को राष्ट्रीय नदी घोषित करने की काग़ज़ी कार्यवाही सम्पन्न।

10. अब नरेन्द्र मोदी से उम्मीद– अब तक के अधिकांश प्रधानमंत्री कहीं-न-कहीं गंगा के मैदान की सामाजिक पृष्ठभूमि से आए हैं, किन्तु नरेन्द्र मोदी ऐसे प्रधानमंत्री हैं जो साबरमती के किनारे पैदा हुए और वहीं राज्य की राजनीति में सक्रिय रहे, किन्तु राष्ट्रीय राजनीति में आने के लिये उन्होंने गंगा किनारे बाबा विश्वनाथ की नगरी बनारस को चुना। नामांकन के समय उनके शब्द भारतीय जनमानस में एक उम्मीद जगाते हैं, ''न मैं यहाँ आया हूँ, न किसी ने मुझे यहाँ बुलाया है, मैं तो माँ गंगा के आदेश पर यहाँ हाज़िर हुआ हूँ।'' चुनाव जीतने के बाद सर्वप्रथम बनारस की गंगा आरती में उपस्थित होना और उमा भारती को गंगा स्वच्छता अभियान के लिये विशेष रूप से कार्यभार सौंपना– इस दिशा में प्रधानमंत्री की गंभीरता को दर्शाता है। लेकिन यह भी सत्य है कि सरकार के पौने दो साल के कार्यकाल के बाद कार्य की प्रगति अपेक्षाओं के अनुरूप नहीं है। अभी भी समय है कि प्रधानमंत्री गंगा स्वच्छता अभियान को दिखाई देनेवाले परिणामों तक पहुँचायें, अन्यथा पाँच वर्ष बीतने में समय नहीं लगता। मृत्यु के बाद मुक्ति देनेवाली माँ गंगा मोदी को जीते जी अमर हो जाने का अवसर लिये खड़ी है।

क्या किया जाना चाहिये- अब तक केन्द्र सरकार द्वारा गंगा एक्शन प्लान प्रथम व द्वितीय तथा नेशनल गंगा रिवर बेसिन अथॉरिटी-जैसी योजनाएँ मात्र पैसा बहाने की योजनाएँ बनकर रह गई हैं। लगभग नौ हज़ार करोड़ रुपये खर्च करने के बाद भी परिणाम शून्य दिखाई देता है। गंगा सफ़ाई के नाम पर पैसे की बहती गंगा में किसने कितनी डुबकी लगाई, इसका अनुमान नहीं लगाया जा सकता। किन्तु आगे इस पवित्र कार्यक्रम में लगाये जा रहे धन का उपयोग हो सके, इसका ध्यान रखने हेतु कुछ बिन्दु निर्धारित किये जा सकते हैं, यथा– नवीन शोधों व वैज्ञानिक विधियों का क्रियान्वयन, विभिन्न मंत्रालयों व संस्थाओं में समन्वय, विकास की पर्यावरण की क़ीमत पर नहीं करने की नीति का अवलम्बन, फैक्ट्रियों के अवशिष्टों के निस्तारण की उचित व्यवस्था, पुरस्कार एवं दण्ड– दोनों नीतियों का यथोचित प्रयोग, स्थानीय विद्वानों एवं स्वयंसेवी संगठनों से परामर्श एवं क्रियान्वयन में उनकी मदद लेना, सारी अक्ल आई.ए.एस अधिकारियों के पास है– इस मानसिक विकलांगता से बाहर निकलना, तटवर्ती नगरों के सीवरेज ट्रीटमेन्ट प्लांट से निकले जल का उपयोग खेती में करना, समीपवर्ती पारिस्थिति की तंत्र को सुदृढ़ करना, समीपवर्ती क्षेत्रों में सघन वृक्षारोपण, गंगा की सहायक नदियों को भी अभियान में सम्मिलित करना, टेम्स और साबरमती के उदाहरणों के आधार पर गंगा में पर्याप्त व अनवरत जलप्रवाह सुनिश्चित करना, बांधों की आवश्यकता एवं परिणाम पर नयी दृष्टि से विचार करना। ■

जायका

भारतीय रसोई

समृद्ध परम्परा का आईना

ऋषिकेश राजोरिया
(ई.टी.वी. राजस्थान में
एडिटोरियल कंसल्टेंट हैं।)

भारत में खान-पान की सदियों से समृद्ध परम्परा रही है। खान-पान की जितनी शैलियाँ और व्यञ्जन भारत में पाए जाते हैं, उतने विश्व के किसी अन्य भाग में देखने में नहीं आते। पौराणिक कथाओं से लेकर आज तक भारत में कई तरह के खाने-पीने के प्रचलन का संकेत मिलता है। वर्तमान में जो इतिहास प्रचलित है, उसमें बताया जाता है कि ईसा से करीब 1500 साल पहले आर्य लोग गंगा के मैदानों में बसने लग गए थे और खेती करने लगे थे। इसके साथ ही विभिन्न प्रकार के भोजन तैयार करने का सिलसिला शुरू हुआ। शुरू में भोजन का मुख्य आधार चावल, गेहूं, जौ और अन्य मोटे अनाज थे। बाद में इनके साथ सब्जियों और मसालों का उपयोग शुरू हुआ। इसके अलावा मांसाहारी भोजन भी प्रचलित था। गेहूं और जौ के आटे की रोटियां उत्तरी और पश्चिमी भारत का प्रमुख भोजन रहीं, जो आज तक चला आ रहा है, जबकि पूर्वी और दक्षिणी भारत में मुख्य भोजन चावल है। मध्ययुग में ज़्यादातर भारतीय अनाज, फल, सब्जियों और दूध तथा दूध से बनी वस्तुओं का सेवन करते थे। पश्चिमी इतिहासकार इसे भारत में शाकाहार की शुरूआत मानते हैं। ईसा पूर्व छठी शताब्दी से बौद्ध और जैन-धर्म के अहिंसा के सिद्धान्त प्रचलित होने के कारण शाकाहार का निरंतर विकास होता चला गया। इसके बाद भारत में विश्व की अन्य संस्कृतियों

का आगमन हुआ, जिससे खान-पान की शैलियों में काफ़ी बदलाव हुआ। भारत में प्रवासियों, व्यापारियों और आक्रमणकारियों के आने से खान-पान की विभिन्न शैलियाँ विकसित हुईं। एक अन्य मत के अनुसार भारत में करीब पाँच हज़ार साल से खान-पान की विभिन्न शैलियाँ विकसित होनी शुरू हो गई थीं। आजकल देश के विभिन्न हिस्सों में प्रचलित खान-पान की विभिन्न शैलियों में इतनी विविधताएँ हैं कि उनका आपस में तालमेल ही नज़र नहीं आता। भोजन में मसालों के उपयोग और भोजन पकाने के तौर-तरीक़ों में अंतर से स्पष्ट है कि भारतीय सभ्यता निरंतर विकास के पथ पर अग्रसर रही है।

अरब-आक्रमणकारी अपने साथ धनिया, जीरा और कॉफी लेकर आए थे। धनिया और जीरा को भारतीय मिर्च और हल्दी में मिलाकर करी बनाने का सिलसिला शुरू हुआ। पारसियों के भारत में आने के बाद यहाँ बिरियानी का चलन शुरू हुआ। मुग़लों के आने के बाद सूखे मेवों का प्रचलन बढ़ा और नये तरह के मांसाहारी और शाकाहारी व्यञ्जन बनने लगे। आज जो टमाटर, मिर्च और आलू भारतीय पाक शैली के मुख्य खाद्य-पदार्थ हैं, वे पुर्तगालियों के माध्यम से भारत पहुँचे थे। पुर्तगालियों ने भारत में शक्कर का चलन भी शुरू किया, जिससे पहले मीठे में केवल फलों और शहद का प्रयोग होता था। अफगानिस्तान से हिंदू-शरणार्थी अपने साथ तंदूर लेकर लाए, जिससे नये व्यञ्जनों की नयी शृंखला विकसित हुई। ब्रिटिश लोगों ने भारतीयों में चाय पीने की आदत डाली और चाय उगाने के लिए आदर्श जलवायु होने के कारण भारत तेजी से विश्व में चायप्रेमियों की श्रेणी में शामिल हो गया। ब्रिटिश लोगों ने भारतीयों के खाने के ढंग को भी बदलने का प्रयास किया और पहली बार भारत में भोजन के लिए काँटे-छुरी-चाकू का इस्तेमाल शुरू हुआ। रसोई में बैठकर खाने की जगह डायनिंग टेबल पर खाने की परम्परा विकसित हुई।

ब्रिटिश लोगों ने भारतीयों में चाय पीने की आदत डाली और चाय उगाने के लिए आदर्श जलवायु होने के कारण भारत तेजी से विश्व में चायप्रेमियों की श्रेणी में शामिल हो गया। ब्रिटिश लोगों ने भारतीयों के खाने के ढंग को भी बदलने का प्रयास किया और पहली बार भारत में भोजन के लिए काँटे-छुरी-चाकू का इस्तेमाल शुरू हुआ। रसोई में बैठकर खाने की जगह डायनिंग टेबल पर खाने की परम्परा विकसित हुई।

भारतीय भोजन में जड़ी-बूटियाँ और मसाले महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अलग-अलग व्यञ्जनों के मसाले भी अलग-अलग होते हैं। मसालों में गरम मसाला सबसे महत्त्वपूर्ण मिश्रण है और भारतीय भोजन का अत्यन्त आवश्यक अंग है। भारत के प्रत्येक राज्य का गरम मसाले का अपना ख़ास मिश्रण है। मसालों एवं जड़ी-बूटियों की भूमिका केवल भोजन पकाने तक ही सीमित नहीं है। प्राचीन आयुर्वेदिक ग्रंथों में रोग-निदान के इनके गुणों का वर्णन किया गया है। हालांकि आज की पीढ़ी के ज़्यादातर लोगों को मसालों

और जड़ी-बूटियों के औषधीय गुणों का ज्ञान नहीं है। खुशबू और स्वाद ज़्यादा हावी हो गया है।

भारतीय भोजनशैलियों में उत्तर भारतीय भोजनशैली सम्भवतः सबसे लोकप्रिय है। उत्तर भारत में ज़्यादातर गेहूँ पैदा होता है, इसलिए परम्परागत तौर पर इस क्षेत्र के भोजन के साथ कई तरह की रोटियों– नान, तंदूरी रोटी, चपाती या परांठे का सेवन किया जाता है। समोसा सम्भवतः उत्तरी भारत का सबसे पसंदीदा नाश्ता है। दही से बननेवाली लस्सी भी एक स्वादभरा पेय है। गुलाबजामुन और मोतीचूर के लड्डू इस इलाके की पसंदीदा मिठाइयाँ हैं। उत्तर भारत के कुछ रोचक मांसाहारी व्यञ्जनों में रेशमी कबाब, सींक कबाब, शामी कबाब, काश्मीरी पुलाव, तंदूरी चिकन और मटन हैं। कश्मीरी भोजनशैली में सबसे महत्त्वपूर्ण सामग्री मटन है जिसकी 30 से अधिक किस्में हैं। काश्मीरी भोजनशैली की अनोखी विशेषता यह है कि इसमें जिन मसालों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें तलने के बजाय उबाला जाता है जिससे अनोखा खुशबूदार जायका मिलता है। पंजाबी भोजनशैली मध्य एशियाई और मुग़लई भोजनशैलियों से प्रभावित है। दाल, सरसों का साग और मक्के की रोटी, तंदूरी रोटी, मीट करी, रोगन जोश और भरवां परांठे– पंजाबी भोजनशैली के कुछ लोकप्रिय व्यञ्जन हैं। अवधी भोजनशैली में पारसी, काश्मीरी, पंजाबी और हैदराबादी शैलियों का समावेश दिखता है। अवध में भोजन पकाने की दम शैली का जन्म हुआ, जिसमें दम अर्थात् धीमी आँच पर एक बड़ी हांडी में खाद्य-पदार्थों को बंद कर गरम करके पकाया जाता है।

दक्षिण भारतीय भोजन शैली में विभिन्न व्यञ्जन तवे पर सेंके जाते हैं, जैसे डोसा, उत्तपमा आदि, जिसके साथ सांबर का उपयोग किया जाता है। सांबर पतली दाल से बनाया जाता है। इसके अलावा दक्षिण भारत में समुद्री भोजन की भी एक विशेष शृंखला है। यह क्षेत्र करी पत्ता, इमली और नारियल के प्रयोग के लिए भी जाना जाता है। आंध्रप्रदेश अपनी हैदराबादी भोजनशैली के लिए विख्यात है जो मुग़लई शैली से काफ़ी प्रभावित है। परम्परागत हैदराबादी व्यञ्जनों में बिरियानी, चिकन कोरमा और शीर खुरमा प्रमुख हैं।

कर्नाटक की भोजनशैली इसके तीन पड़ोसी दक्षिण भारतीय राज्यों के समान हैं और यह उत्तर में स्थित महाराष्ट्र और गोवा की भोजनशैली से भी मिलती-जुलती हैं। कर्नाटक में भोजन पकाने की दो प्रमुख शैलियाँ हैं– ब्राह्मण भोजनशैली, जो पूरी तरह शाकाहारी है और कुर्ग की भोजनशैली, जो मांसाहारी व्यञ्जनों के लिए मशहूर है। तमिलनाडु की चेट्टीनाड भोजनशैली के व्यञ्जन गर्म और ताजे पिसे हुए मसालों से भरपूर होते हैं और इसकी विशिष्टकता चेट्टीनाड के लोगों की कुलीन जीवनशैली को प्रदर्शित करती है।

केरल में अप्पम और स्टीव, उली थीयाल और सर्वव्यापी बनाना-चिप्स कुछ सबसे मशहूर व्यञ्जन हैं। केरल के उत्तरी भाग में या मालाबार तट में मुस्लिम मोप्लाह-भोजनशैली का वर्चस्व है। यहाँ के अनेक व्यञ्जनों में अरब प्रभाव अच्छी तरह दिखाई देता है जैसे कि अलीसा, जो गेहूँ एवं मांस का दलिया होता है। मध्य केरल का दक्षिण भाग वह क्षेत्र है जहाँ सीरियाई ईसाई भोजन कला आज भी दिखाई देती है। सीरियाई ईसाइयों का केरल की भोजनशैली में भारी योगदान है। इसमें शामिल व्यञ्जनों में होपर, डक रोस्ट, मीन वेविचथू (रेड फिश करी), वस्टे और स्ट्यू प्रमुख हैं।

बंगाली भोजनशैली में सरसों के तेल के साथ काली मिर्च पर बहुत अधिक ज़ोर दिया जाता है तथा इसमें अधिक मात्रा में मसालों का प्रयोग होता है। यह भोजनशैली मछली, सब्जी, मसूर की दाल और चावल के साथ अपने तीखे जायके व खुशबू के लिए विख्यात है। ताजे मीठे पानी की मछली इसकी सबसे अनोखी विशेषताओं में से एक है।

बंगाली मछली को कई तरह से बनाते हैं जैसे कि उबालकर, दम देकर पकाकर या नारियल के दूध या सरसों के बेस पर सब्जियों एवं सॉस के साथ उबालकर।

ओड़ीशा का भोजन आम तौर पर तीखा और हल्का मसालायुक्त होता है। यहाँ के भोजन में मछली और अन्य समुद्री जीव, जैसे– केकड़ा और झींगा बहुत लोकप्रिय हैं।

भारत के पूर्वी राज्यों, जैसे– सिक्किम, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, असम, नागालैंड के भोजन में उनकी भौगोलिक स्थितियों के कारण नाटकीय रूप से काफ़ी अंतर है। ये क्षेत्र तिब्बत, चीन तथा पश्चिमी भोजनशैली से भी काफ़ी प्रभावित हैं। पश्चिमी भारत में राजस्थानी भोजनशैली काफ़ी विविधतापूर्ण है। यहाँ के राजशाही युग में शिकार के चलन से जहाँ मांसाहारी व्यञ्जन विकसित हुए, वहीं मारवाड़ या जोधपुर के सभी भोजन शाकाहारी हैं जिनके लोकप्रिय व्यञ्जन चूरमा, लड्डू एवं दाल-बाटी हैं। राजस्थान के रेगिस्तानी क्षेत्र की सब्जी कैर सांगरी के बारे में तो यहां तक कहा गया है कि **कैर कुमटिया सांगरी काचर बोर मतीर। तीनूं लोकां नहिं मिले, तरसे देव अखीर।।** अर्थात् कैर, कुमटिया, सांगरी, काचर, बेर और मतीरे राजस्थान को छोड़कर तीनों लोकों में दुर्लभ हैं और इनके स्वाद के लिए देवता भी तरसते हैं।

गुजरात की एक बड़ी आबादी मुख्य रूप से शाकाहारी है, इसलिए गुजराती भोजनशैली पूरी तरह से शाकाहारी है। इसके व्यञ्जनों में ओंधिया, पात्र, खांडवी, थेपला, ढोकला, खमण आदि प्रमुख हैं। गुजराती भोजन आम तौर पर मीठे होते हैं। पारसियों का मुख्य व्यञ्जन धनसख है, जिसे तले हुए प्याज, ब्राउन राइस, दाल, सब्जियों एवं मांस के साथ परोसा जाता है और जो रविवार को तथा सभी त्योहारों पर खाया जाता है।

गोवा की भोजनशैली पर पुर्तगाल का मज़बूत प्रभाव है क्योंकि पहले यह पुर्तगालियों का उपनिवेश हुआ करता था। इस भोजनशैली के व्यञ्जनों में बालकायो, जकाती, विंदालूस, सोरपोटेल एवं मोएलोस प्रमुख हैं। मालवणी और कोंकणी भोजनशैली महाराष्ट्र के कोंकण क्षेत्र, गोवा तथा पश्चिम कर्नाटक के उत्तरी भाग के हिंदुओं की मानक भोजनशैली है। मालवणी भोजनशैली के व्यञ्जन ज़्यादातर मांसाहारी होते हैं। मालवणी भोजनशैली में नारियल का भरपूर उपयोग होता है और इसके व्यञ्जन आमतौर पर बहुत मसालेदार होते हैं। हालांकि इस क्षेत्र की कोंकणस्थ ब्राह्मण भोजनशैली शाकाहारी भी है।

महाराष्ट्र के भोजन में पूरणपोली का विशेष स्थान है। चने की दाल, गुड़ या शक्कर के साथ पीसकर बनाया जानेवाला यह व्यञ्जन गुड़ीपड़वा पर अनिवार्य रूप से हर घर में परोसा जाता है और अन्य त्योहारों पर भी पूरणपोली बनाई जाती है।

भौगोलिक विशेषताओं और क्षेत्रों की विविधता के कारण छोटे-बड़े त्योहार भारत में पूरे साल मनाए जाते हैं, जो लोगों को परंपरागत व्यञ्जनों का लुत्फ़ उठाने के अवसर प्रदान करते हैं। विशेष त्योहारों पर विशेष व्यञ्जन बनाकर संबंधित देवी-देवताओं को अर्पित किए जाते हैं। उदाहरण के लिए दूध का हलवा, मक्खन और दही से बने व्यञ्जन जन्माष्टमी पर बाँटे जाते हैं, जबकि ताजे नारियल के मोदक, मुरुक्कू की क्षेत्रीय वैरायटी, लड्डू और कज्जाया को गणेश का मनपसंद व्यञ्जन माना जाता है और गणेश चतुर्थी को यह भेंट में चढ़ाया जाता है।

भारत में इतनी तरह की मिठाइयाँ हैं कि जब कोई उत्तर से दक्षिण या पूरब से पश्चिम और भिन्न जातीय समुदायों के बीच जाता है तो वह अचम्भित रह जाता है। पश्चिम बंगाल और उत्तर भारत में रसगुल्ला, चमचम, संदेश और लड्डू, गुलाबजामुन, काजू कतली लोकप्रिय हैं जबकि गुजरात और राजस्थान में मेस्सू, मोंथार, घेवर, फेणी लोकप्रिय हैं।

भारतीय भोजनशैली दक्षिण-पूर्व एशिया में मज़बूत हिंदू एवं बौद्ध-सांस्कृतिक प्रभाव के कारण इस क्षेत्र में बहुत लोकप्रिय है। मलेशिया की भोजनशैली पर भी भारतीय शैली का काफ़ी प्रभाव है तथा यह सिंगापुर में भी लोकप्रिय है। सिंगापुर भोजनशैली के मिश्रण के लिए विख्यात है जिसके तहत सिंगापुर की परम्परागत भोजनशैली का मिश्रण भारतीय भोजनशैली के साथ किया जाता है। एशिया के अन्य भागों में शाकाहार के प्रसार का श्रेय अक्सर हिंदू एवं बौद्ध-प्रथाओं को दिया जाता है जिसका जन्म भारत में हुआ।

भारतीय संस्कृति में भोजन पकाने की कला को 'पाककला' कहा गया है। इस तरह भारतीय भोजन विभिन्न प्रकार की पाककलाओं का संगम ही है। इसमें पंजाबी, मारवाड़ी, दक्षिण भारतीय, शाकाहारी भोजन (निरामिष), मांसाहारी भोजन (सामिष) आदि सभी शामिल हैं। भारतीय भोजन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि कई प्रकार के भोजन न भी मिलें तो भी आम या नीबू के अचार या फिर टमाटर की चटनी से भी भरपूर स्वाद प्राप्त होता है। ■

भारतीय भोजन में जड़ी-बूटियाँ और मसाले महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अलग-अलग व्यञ्जनों के मसाले भी अलग-अलग होते हैं। मसालों में गरम मसाला सबसे महत्त्वपूर्ण मिश्रण है और भारतीय भोजन का अत्यन्त आवश्यक अंग है। भारत के प्रत्येक राज्य का गरम मसाले का अपना ख़ास मिश्रण है। मसालों एवं जड़ी-बूटियों की भूमिका केवल भोजन पकाने तक ही सीमित नहीं है। प्राचीन आयुर्वेदिक ग्रंथों में रोग-निदान के इनके गुणों का वर्णन किया गया है। हालांकि आज की पीढ़ी के ज़्यादातर लोगों को मसालों और जड़ी-बूटियों के ओषधीय गुणों का ज्ञान नहीं है। खुशबू और स्वाद ज़्यादा हावी हो गया है।

राजस्थानी
कठोर वातावरण में भी जीवन्त पहचान

श्याम सुन्दर शर्मा
(राजस्थान प्रशासनिक सेवा में प्रशासन ऑफिसर हैं)

राजनीतिक दृष्टि से मध्यकालीन राजस्थान में सामन्तवाद का प्रभाव रहा, जिसके कारण मुग़लकाल व ब्रिटिशकाल में यह भूभाग अपनी विशिष्ट प्रकार की संस्कृति को बचाए रखने में क़ामयाब रहा। इस क्षेत्र की यह सांस्कृतिक विशिष्टता यहाँ के पहनावे में भी दिखाई देती है।

जलवायु की दृष्टि से राजस्थान एक शुष्क व गर्म भूभाग है। प्रकृति यहाँ बहुत कठोर है, दूर तक हरियाली का नामोनिशान नहीं। धूसर रेतीले टीले राजस्थान, विशेषतया इसके पश्चिमी भाग की पहचान हैं। ऐसी स्थिति में इस प्रदेश में चटकीले रंगबिरंगे वस्त्र इस कठोर जलवायु प्रदेश में मनुष्य की जीवन्तता के परिचायक हैं।

राजस्थानी महिलाओं की वेशभूषा देखकर न केवल उनके क्षेत्र का, बल्कि उनकी जाति तक का अनुमान लगाया जा सकता है। मीणा स्त्रियाँ विशिष्ट प्रकार का लहँगा-ओढ़नी पहनती हैं, जबकि गूजर-स्त्रियों में लहँगे के साथ कमीज़ प्रचलित है। ओढ़नियाँ भी चुनरी, लहरिया, मोरठा आदि प्रकारों की होती है। प्रसूता स्त्री को पीहर पक्ष से भेजी जानेवाली ओढ़नी 'पोमथा' कहलाती है, बेटी के जन्म पर यह पीले रंग की तथा बेटे के जन्म पर यह गुलाबी रंग की होती है।

सावन के महीने में लहरिया की ओढ़नी अपना विशिष्ट स्थान रखती है। कालवेलिया जाति की स्त्रियाँ काले रंग की कांचली तथा बड़े घेर का काला लहँगा पहनती हैं जो नृत्य के दौरान अद्भुत घेरा बनाता है। अस्सी कली का लहंगा प्रसिद्ध है। सुहागिन स्त्रियाँ लाल, पीले, चटकीले रंग के गोटेवाले वस्त्र पहनती हैं जबकि विधवाएँ काले अथवा सफेद वस्त्र पहनती हैं। धागों की कसीदाकारीयुक्त लाल रंग की ओढ़नी को 'ढामणी' कहा जाता है।

पुरुष वस्त्र-विन्यास में भी राजस्थान अपनी विशिष्ट पहचान रखता है। यहाँ पगड़ी बाँधने के ही इतने तरीके प्रचलित हैं कि पगड़ी को देखकर उसके क्षेत्र की पहचान की जा सकती है। मेवाड़ी, मारवाड़ी, ढूँढाड़ी, शेखावटी क्षेत्र की पगड़ियाँ भिन्न-भिन्न प्रकार से बाँधी जाती हैं। हम्मीरशाही, स्वरूपशाही, खंजरशाही, विजयशाही, राजशाही, जसवन्तशाही व अटपटी पगड़ियों के प्रमुख क्षेत्रीय प्रकार हैं। सुनार आँटेवाली पगड़ी पहनते थे तो बनजारे मोटी पट्टेदार पगड़ी पहनते थे। दशहरे पर पहनी जानेवाली पगड़ी 'भदील' कहलाती थी,

जबकि होली पर फूल-पत्तीदार पगड़ी पहनी जाती थी। पगड़ी को सजाने के लिए तुर्रे, सरपेच, बालाबन्दी, लटकन आदि बनाए जाते थे। जोधपुर में प्रतिदिन पहनी जानेवाली पगड़ी का छोटा रूप 'साफा' कहलाता है, जिसे आज राष्ट्रीय स्तर पर जोधपुरी कोट के साथ प्रतिष्ठा प्राप्त है।

शरीर के ऊपरी भाग में पहना जानेवाला वस्त्र 'अंगरखी' कहलाता था। सर्दी के मौसम में राजा-महाराजा व सेठ-साहूकारों द्वारा अंगरखी के ऊपर पहना जानेवाला कपास फर से बना वस्त्र 'आतमसुख' कहलाता था।

ब्रिटिश आधिपत्य के समय एक चूड़ीदार पायजामे का प्रचलन हुआ जो घुटनों तक कसा हुआ तथा घुटनों से कमर तक ढीला तथा घेरदार होता था। शिकार के समय पहने जानेवाले इस वस्त्र को 'ब्रीचेस' या 'बिरजिस' कहा जाता था। इसके ऊपर चमड़े के टुकड़ों का बना कोट तथा सिर पर मोटे चमड़े का हैट अंग्रेज़ों के अनुकरण से राजस्थान के राजपूत वर्ग की प्रचलित पोशाक बन गया था।

कमर पर बाँधा जानेवाला पटका 'कमरबंद' कहलाता था जिसमें तलवार, कटार, ख़ंजर आदि ठुंसा रहता था। अहमदाबादी, चेदीरी, पैठण, बनारस आदि कमरबन्द प्रसिद्ध थे, क्योंकि ये रेशम से बनाए जाते थे।

राजस्थान का आदिवासी समाज भी अपने विशिष्ट पहनावे के कारण अलग पहचान रखता है। कुँवारी आदिवासी कन्याएँ 'कटकी' पहनती हैं, जिसमें दाबू प्रिन्ट का प्रयोग किया जाता है। विवाह के अवसर पर आदिवासी स्त्रियाँ जामसाई साड़ी पहनती हैं। 'नानड़ा' आदिवासी स्त्रियों द्वारा पहना जानेवाला पारम्परिक वस्त्र है। आदिवासी महिलाओं द्वारा घुटनों तक पहना जानेवाला घाघरा 'कछावू' कहलाता है।

आदिवासी पुरुष घुटनों तक जो धोती पहनते हैं, उसे 'ढेपाड़ा' तथा कमर पर जो लंगोट बाँधते हैं, उसे 'खोयतू' कहा जाता है। पगड़ी की भाँति बाँधा जानेवाला वस्त्र पोतिया कहलाता है। शरीर के ऊपरी भाग में सफेद धागों की कढ़ाईयुक्त काले रंग का वस्त्र 'बुगतरी' पहना जाता है। आदिवासी पुरुष सिर पर छपाई युक्त अंगोछा लपेटते हैं।

यद्यपि आधुनिक समय में शहरीकरण के कारण पहनावे के ये पारम्परिक रूप लुप्त होते जा रहे हैं, तथापि लम्बे समय तक ये वस्त्र-विन्यास राजस्थान की पहचान रहे हैं। वस्त्रों के आधार पर क्षेत्र, जाति, व्यवसाय तक की पहचान होती थी, यहाँ तक कि चित्र में पहनावे को देखकर ऋतु का भी परिचय हो जाता था।

प्रकृति के कोपभाजन इस प्रदेश के लोगों का पुरुषार्थ यहाँ के लोगों के वस्त्र-विन्यास से स्पष्ट दिखता है, जिसमें उपयोगिता के साथ आलंकारिकता के भी दर्शन होते हैं। ■

प्रवीण कुमार द्विवेदी
(शोध-छात्र, विशिष्ट संस्कृत अध्ययन केन्द्र,
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली)

॥ संस्कृत ॥
का भारतीय संस्कृति को योगदान

संस्कृत भारतीयता का दूसरा नाम है। यह केवल भाषामात्र न होकर ज्ञान का अथाह स्रोत है। भारत की प्रायः सभी भाषाओं में संस्कृत के शब्द पाए जाते हैं और प्रत्येक भाषाभाषी संस्कृत-वाक्यों को अपने ग्रन्थों या लेखन में प्रमाण रूप में उद्धृत करते हैं। अतः भारत में 15 संस्कृत विश्वविद्यालय, 5000 संस्कृत महाविद्यालय, दो संस्कृत-ग्राम (मुत्तुरु और झीरी क्रमशः कर्णाटक और मध्यप्रदेश में) तथा संस्कृत-भाषा में अध्ययन-अध्यापनरत लगभग 3 करोड़ से अधिक लोग हैं। भारतीय एकता और अखण्डता के परिप्रेक्ष्य में संस्कृत-भाषा के अंतर्गत क्षेत्रीयता दृष्टिगोचर नहीं होती है; क्योंकि न केवल भारतीय भाषाओं के, अपितु पुरातन भाषा होने के कारण प्रायः सभी वैश्विक भाषाओं के शब्द संस्कृत से निष्पन्न हैं। इसलिये भारतीय एकता को संजोये रखने के लिये संस्कृत का ज्ञान अत्यावश्यक है। भारतीय नैतिकता, आध्यात्मिकता, सहिष्णुता, सर्वांगीणता-जैसे मानवीय मूल्यों के आधारभूत हज़ारों तत्त्वों की जननी संस्कृत को उपेक्षित करने का प्रयास प्रारम्भ से लेकर अद्यावधि विद्यमान है। यदि हमें भारतीय संस्कृति का अध्ययन करना है, तो यह कार्य संस्कृत के बिना असम्भव है; क्योंकि प्रायः 11वीं शती पूर्व भारत का सभी साहित्य संस्कृत-भाषा में लिपिबद्ध था। उसके बाद मुग़ल-काल और अंग्रेज़ी-शासन के अधीन रहते हुए भी भारतीय संस्कृतज्ञों ने गुलाम रहते हुए भी संस्कृत-भाषा में ही रचनाओं को प्रमुखता दी। भारत सभी विद्याओं का ज्ञाता
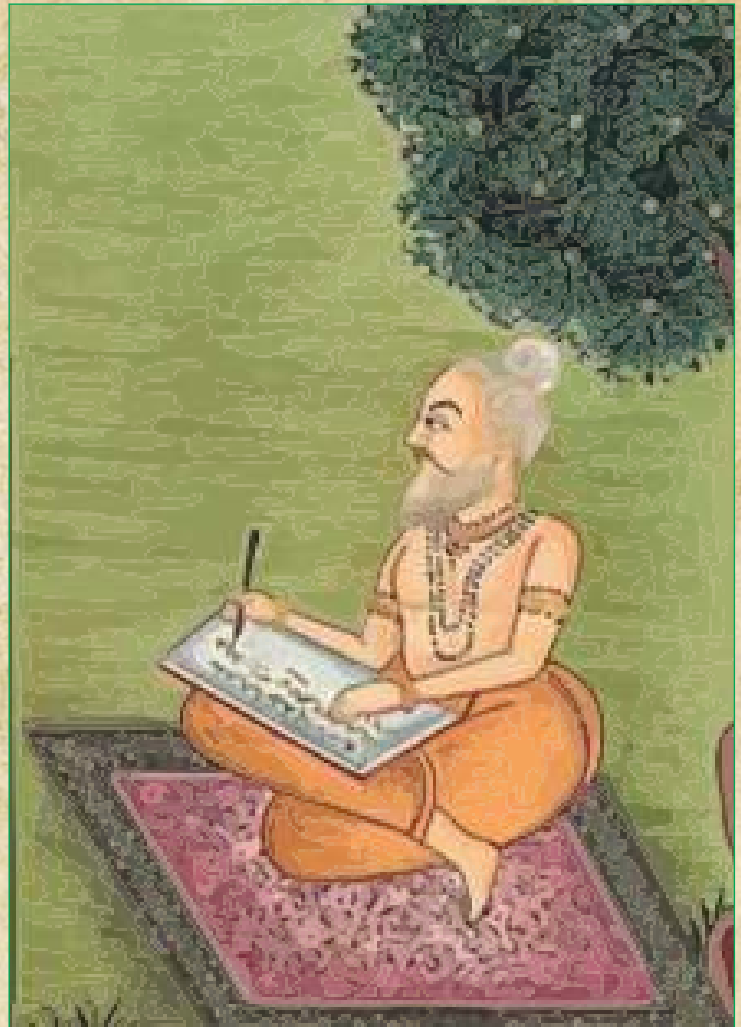
होने के कारण 'जगद्गुरु' की उपाधि से सर्वदा विभूषित रहा है और इसकी इसी विश्वबन्धुता और व्यापकता के कारण कुछ लोग इससे सर्वदा जलते रहे हैं। फलतः कभी नालन्दा विश्वविद्यालय जलाया गया था तो आज मनुस्मृति के पन्ने जलाए जा रहे हैं। यह संस्कृत को मिटाने का एक विफल प्रयास है। बाह्य सभ्यता और संस्कृति का इतना अनुकरण ठीक नहीं है कि हम अपने अतीत को ही विस्मृत कर दें। भारतीय भाषाशास्त्र, दर्शनशास्त्र, गणितशास्त्र, ज्योतिषशास्त्र, साहित्यशास्त्र, विज्ञानशास्त्र, समाजशास्त्र, भूगोल, आयुर्वेद, योगशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र– इन मूलभूत विषयों के हज़ारों ग्रन्थ संस्कृत-भाषा में ही निहित हैं। पाश्चात्य संस्कृति के अन्धानुकरण में हमने अपने महत्त्व को नकारना प्रारम्भ कर दिया है। फलतः कुछ लोगों को 'भारतमाता की जय' कहने में भी परेशानी है, क्योंकि 'भारत', 'माता' और 'जय'– तीनों शब्द संस्कृत-भाषा के हैं। 1993 में सुप्रीम कोर्ट का यह निर्णय था कि कार्यालयीय हिंदी में संस्कृत के शब्दों को प्रमुखता दी जाय। फलतः 'घर मंत्रालय' न कहकर 'गृह मंत्रालय' कहा जाता है। 'नीति आयोग', 'प्रधानमंत्री-आवास, 'कार्यालय', 'सचिवालय', 'विश्वविद्यालय' आदि सम्पूर्ण शब्द संस्कृतनिष्ठ शब्द हैं। कंप्यूटर और विज्ञान का सम्बन्ध कितना संस्कृत से है, यह विश्व के लोग तो जानते हैं पर भारतीय जनमानस को इस भारतीय ज्ञान से दूर रखा जाता रहा है। नोम चॉम्स्की, फर्दिनान्द डी सस्यूर, आइन्स्टाइन, शॉपेनहावर आदि विदेशी विद्वानों ने संस्कृत में विज्ञान और कंप्यूटर के महत्त्व को भली-भाँति समझा और बताया है। विद्यालयों और महाविद्यालयों के पाठ्यक्रम भी इस तथ्य को ध्यान में रखकर बनाए जाते रहे हैं, जिससे कुछ पाश्चात्य संस्कृति के पुरोधाओं को अपनी रोटियाँ सेकने में कोई कठिनाई न हो। इस शिक्षा का प्रभाव यही होगा कि अन्तरराष्ट्रीय बनने के चक्कर में हम कहीं अपनी राष्ट्रीयता भी न खो दें।

संस्कृत भारत की आत्मा कही जाती रही है, किन्तु आजकल यह प्रश्न हो रहा है कि इसको क्यों पढ़ा जाये? क्या इसमें रोज़गार की पर्याप्त सम्भावना है? इसको पढ़नेवाले केवल कर्मकाण्डी पण्डित या पूजा-पाठ करनेवाले होते हैं? इसको पढ़नेवाले धार्मिक हो जाते हैं और फिर मानवता उनके लिये धर्म के द्वारा ही पारिभाषित होती है। इस तरह के अनेक प्रश्न आजकल संस्कृत से जुड़े लोगों से पूछे जा रहे हैं। इसका कारण यह है कि केन्द्र सरकार का रुझान संस्कृत की ओर हुआ है। इसी सन्दर्भ में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने जर्मनी में भाषण देते हुए '**तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः**' तथा '**सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःखभाग भवेत्**'-जैसे संस्कृत के आदर्श वाक्यों को भारत की वास्तविक सांस्कृतिक विरासत बताया था। श्री मोदीजी ने संस्कृत का महत्त्व बताते हुए कहा था कि जर्मनी में भी संस्कृत में रेडियो स्टेशन था, किन्तु आज भी भारत में संस्कृत का नाम लेने पर कुछ लोगों को समस्याएँ हो जाती हैं। आधुनिक समाज संस्कृत को केवल हिंदुओं (विशेषकर ब्राह्मणों) तक ही सीमित रखना चाहता रहा है जिस ज्ञान को समझने के लिये दारा शिकोह

जैसे मुग़ल-शासक ने उस मुग़ल काल में भी उपनिषदों का फ़ारसी-अनुवाद (जिसका नाम 'सिर्रे अकबर' है) करवाया था। यह रुझान भी अकारण नहीं था। यदि वास्तव में भारत को ठीक से समझना है तो हमें संस्कृत को जानना ही होगा। संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद् के साथ सम्पूर्ण संस्कृत-वाङ्मय केवल संस्कृत पढ़नेवाले लोगों के लिए ही उपयोगी नहीं हैं अपितु इसके द्वारा ही भारतीय दर्शन, भारतीय राजनीतिशास्त्र, भारतीय गणित, भारतीय विज्ञान तथा भारतीय संस्कृति आदि विषयों को अच्छी तरह से समझा जाता है। यह ठीक उसी तरह है जिस प्रकार दूध से बनी हुए मिठाई तो बच्चे को अच्छी लगती है किन्तु दूध से उसे परहेज़ है। आज प्रत्येक विषय के अध्ययन में पाश्चात्य पद्धति को इसलिये ही बढ़ावा मिल रहा है। क्या 'जगद्गुरु' कहाये जानेवाले भारतवर्ष के पास अपनी पद्धति है ही नहीं कि उसे दूसरों के सहारे चलना पड़ रहा है ? या फिर यदि है तो वह क्यों नहीं इसका समुचित सदुपयोग कर रहा है। राष्ट्र की प्राथमिकता होती है कि वह किसी भी ज्ञान का समादर करे, किन्तु इसका यह भी मतलब तो नहीं है कि हम अपने भारतीय समाज को संस्कृत-भाषा या संस्कृत में निहित ज्ञान से वञ्चित करें। आज जो भी विषय पढ़ाए जा रहें हैं, या समाज के समक्ष परोसे जा रहे हैं; वो संस्कृत-ग्रन्थों में निहित ज्ञान का पूर्णतः या अंशतः प्रयोग तो करते ही हैं। कुछ विद्वान्, जो संस्कृत-भाषा को जाने बिना ही इसके कुछ ग्रन्थों का अनुवाद कर चुके हैं और उस अनुवाद के माध्यम से अनेक दुर्व्याख्याएँ भी भारतीय समाज में प्रचलित हो चुकी हैं। संस्कृत-भाषा का सम्यक् ज्ञाता ही संस्कृत-ग्रन्थों का समुचित अनुवाद कर सकता है। इसके समुचित अध्ययन के बिना ही आज से पहले इसपर कई तरह के आक्षेप होते रहे हैं, किन्तु आज इसकी प्राथमिकता को समझा जा रहा है।

रही बात संस्कृत विषय में रोज़गार की, तो इसमें अन्य विषयों की अपेक्षा अधिक सम्भावनाएँ दिखती हैं, तथापि किसी भी विषय के असफल अध्येता की तरह कुछ लोगों को इसमें कार्य करने की अत्यल्प सम्भावना या इसका भविष्य दिखाई नहीं देता है। इनके लिये संस्कृत विषय के अन्तर्गत प्रमुख रोज़गार की सूची निम्नलिखित है (तथापि संस्कृत केवल जीविका ही नहीं देती, अपितु जीवन जीना भी सिखलाती है।)–

- **संस्कृत विषय को पढ़कर आई.ए.एस.और आई.पी.एस.परीक्षा में आप अधिक से अधिक अंक प्राप्त कर सकते हैं।**
- **भारतीय सेना में आप जे.सी.ओ. (धर्मगुरु) का पद प्राप्त कर सकते हैं।**
- **संस्कृत में शिक्षण कर सकते हैं।**
- **संस्कृत-भाषा में निहित पाण्डुलिपियों के संरक्षण, उनके पढ़ने और प्रकाशित करने का कार्य भी संस्कृत के जानकार ही कर सकते हैं। भारत में करीब 5 लाख संस्कृत-पाण्डुलिपियाँ हैं तथा विदेशों में भी संस्कृत की अनेक पाण्डुलिपियाँ हैं।**

- **संस्कृत के विद्यार्थी राजभाषा अधिकारी बन सकते हैं।**
- **कथा-लेखन में भी संस्कृत के ग्रन्थों में निहित प्राचीन या नवीन कहानियाँ समाज में नैतिक मूल्यों को बढ़ावा देती हैं।**
- **संस्कृत के विद्यार्थी का उच्चारण सम्यक् होने से वह कर्मकाण्ड या पौरोहित्य भी करा सकता है।**
- **ज्योतिष एवं वास्तु का ज्ञान रोज़गारपरक है।**
- **आयुर्वेद में संस्कृत के लिए पर्याप्त सम्भावना है।**
- **योग में संस्कृत के अध्येता के लिए पर्याप्त सम्भावना है।**
- **वैदिक गणित के क्षेत्र में प्रशिक्षण की अपार सम्भावनाएँ हैं।**

भारतीय परम्परा ने विश्व को बहुत कुछ दिया है। यह संस्कृत में निहित सार्वभौमिक ज्ञान का ही फल है कि हम अत्यधिक गुलाम रहकर भी अपना सर्वस्व बचा पाये। परम्परा ने जनमानस में **'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः'** की भावना को प्रवाहित रखा, जिससे हमने कभी किसी राष्ट्र पर आक्रमण नहीं किया। हमने किसी को नहीं लूटा। जिसने हमें लूटा, हम उनके साथ भी सत्य और अहिंसा के मार्ग को अपनाते हुए विजयी हुये। ऐसा नहीं था कि हम कायर थे। हम दुनिया को दिखलाना चाहते थे कि प्राणिमात्र के हित में युद्ध सर्वदा विनाशक ही होगा। **'अग्रतः सकलं शास्त्रं पृष्ठतः सशरं धनुः'** वाले हमने हमारी प्रतिष्ठा का अपहरण करनेवाले रावण का केवल वध ही नहीं किया, अपितु स्वर्ण लंका का अधिपति भी विभीषण को ही बनाया, न कि कोहिनूर लूटकर महान् कहलाने की परिकल्पना की। हमारी परम्परा ने हमें यही सिखाया है कि लूटा हुआ धन सर्वदा ही घातक होगा।

आज विश्व के विकसित देशों में संस्कृत को लेकर अनेक शोध-कार्य हो रहे हैं। जर्मनी, अमेरिका आदि देशों में संस्कृत के अध्ययन-अध्यापन को बढ़ावा मिल रहा है। वेव्स (Waves)-जैसी संस्थाएँ इस विषय को लेकर अनेक परियोजनाएँ चला रही हैं। कभी अन्तरराष्ट्रीय भाषा के रूप में विख्यात संस्कृत की असंख्य पाण्डुलिपियाँ विदेशों में रखी गई हैं। संस्कृत की पाण्डुलिपियों को विदेशी संस्थाएँ यहाँ के विद्वानों को प्रलोभनादि देकर खरीदती रही हैं तथापि अनेक संस्कृत या संस्कृतेतर (जो भारतीय परम्परा का हित चाहते हैं) विद्वानों ने अपना सम्पूर्ण जीवन संस्कृत के विकास के लिये समर्पित किया हुआ है और वे निरन्तर इस देववाणी के विकास में लगे हुए हैं। स्वामी रामदेव द्वारा सञ्चालित पातञ्जल योग और उत्पाद पातञ्जलयोगसूत्र, चरकसंहिता, सुश्रुतसंहिता-जैसे संस्कृत-ग्रन्थों को आधार बनाकर वैश्विक ख्याति प्राप्त कर रहे हैं। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के विशिष्ट संस्कृत अध्ययन केन्द्र में संगणकीय संस्कृत तथा वैज्ञानिक संस्कृत-जैसे आधुनिकतम विषयों को लेकर अनेक शोध-कार्यों को सम्पादित किया जा रहा है। इन शोध कार्यों में जॉर्ज कार्डोना, मैडम कैस्ट्रिना-सदृश अनेक विदेशी विद्वानों तथा हॉन्क, स्टीफेन आदि अनेक विदेशी छात्रों द्वारा भी अत्यधिक रुचि दिखाई जा रही है। इसी प्रकार हमें परम्परा को आधुनिकता से जोड़ना पड़ेगा। भारत के पास ज्ञान की कमी कभी नहीं रही है। आवश्यकता है उस ज्ञान के प्रचार-प्रसार की। जब हम भारतीय ही अपनी सम्पदाओं को महत्त्व नहीं देंगे, तो अन्य किसी से किस प्रकार अपेक्षा करेंगे कि वह हमारी विरासत को महत्त्व देगा। ऐसा भी नहीं है हमारा ज्ञान महत्त्वहीन है और हम इसे केवल महिमामण्डित करने के लिये बढ़ावा दे रहे हैं, अपितु हमारा लक्ष्य उस भारतीयता का संरक्षण, पुष्पन, पल्लवन तथा फलन करना है, जो ऋषियों की हज़ारों वर्षों की तपस्या का सर्वोत्तम परिणाम है। सम्भवतः इसलिये सार्वभौम संस्कृत प्रचार संस्थान, वाराणसी (उत्तरप्रदेश) के संस्थापक वासुदेव द्विवेदी शास्त्रीजी ने कहा था–

'भारतीयैकतासाधकं संस्कृतम्,
भारतीयत्वसम्पादकं संस्कृतम् ।
ज्ञानविज्ञानसम्मेलनं संस्कृतम्,
भुक्तिमुक्तिद्वयोद्वेलनं संस्कृतम्॥' ■

यदि वास्तव में भारत को ठीक से समझना है तो हमें संस्कृत को जानना ही होगा। संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद् के साथ सम्पूर्ण संस्कृत–वाङ्मय केवल संस्कृत पढ़नेवाले लोगों के लिए ही उपयोगी नहीं हैं अपितु इसके द्वारा ही भारतीय दर्शन, भारतीय राजनीतिशास्त्र, भारतीय गणित, भारतीय विज्ञान तथा भारतीय संस्कृति आदि विषयों को अच्छी तरह से समझा जाता है। आज प्रत्येक विषय के अध्ययन में पाश्चात्य पद्धति को इसलिये ही बढ़ावा मिल रहा है। क्या 'जगद्गुरु' कहाये जानेवाले भारतवर्ष के पास अपनी पद्धति है ही नहीं कि उसे दूसरों के सहारे चलना पड़ रहा है? या फिर यदि है तो वह क्यों नहीं इसका समुचित सदुपयोग कर रहा है।

ए.वी. गुप्ता
(विभागाध्यक्ष, ऑप्टो इलेक्ट्रॉनिक्स ई.एम.ई. स्कूल, बड़ौदा; कुलसचिव, एम.एस. यूनिवर्सिटी, बड़ौदा)

सूक्ष्म ऊर्जा के विश्वविद्यालय

विशेष आध्यात्मिक क्षेत्रों की स्थापना से हो सकती है शुरुआत

मनुष्य का लालच ज़रूरत से आगे बढ़ गया है। अधिक-से-अधिक प्राप्त करने की अंतहीन दौड़ पूरी धरती पर भारी पड़ रही है। यदि पृथिवी का शोषण इसी प्रकार जारी रहा तो धरती के साथ इस पर निवास करनेवाले सभी प्राणियों एवं जीव-जन्तुओं का अस्तित्व ही समाप्त हो जायेगा। धरती पर मौजूद संसाधनों के ज़रूरत से अधिक शोषण से पूरे भूमण्डल के पर्यावरण का संतुलन बिगड़ गया है। जलवायु-परिवर्तन, ग्रीन हाउस गैसों का बढ़ता स्तर, क्लोरोफलोरो कार्बन्स का उत्सर्जन, जल, वायु तथा मिट्टी के बढ़ते प्रदूषण के ख़तरनाक संकेत मिलने शुरू हो गये हैं। इसलिए ज़रूरत ज़रूरत से अधिक प्राप्त करने की ख़तरनाक प्रवृत्ति पर लगाम लगे और भावी पीढ़ियों की भी चिन्ता की जाये।

मौसम में बदलाव, ग्लेशियर्स का पिघलना, भूकम्प, बाढ़, सुनामी आदि विभीषिकाएँ प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक शोषण का ही परिणाम हैं। जब तब हम लोगों को यह समझाने में क़ामयाब नहीं होंगे कि जितनी ज़रूरत है उससे भी कम संसाधनों का इस्तेमाल करो, तब तक प्रकृति के अंधाधुंध शोषण पर रोक नहीं लगेगी। अमेरिका के एक शोध-समूह द्वारा किये गए अध्ययन में पता चला है कि यूरोपीय देशों की तुलना में भारत और पाकिस्तान के लोग अधिक प्रसन्न हैं जो इस बात का प्रमाण है कि खुशी अथवा समृद्धि का पैमाना अधिक आर्थिक विकास नहीं है। प्रसन्नता का संबंध भौतिक सुख-सुविधाओं से मिलनेवाली संतुष्टि भी नहीं है। प्रसन्नता की अनुभूति अंदर से होती है। पृथिवी के 74 प्रतिशत संसाधनों का उपभोग करनेवाले अमेरिकी भी प्रसन्न नहीं हैं। चिन्तकों, दार्शनिकों, तकनीकी विशेषज्ञों, राजनीतिज्ञों, नीति-निर्माताओं आदि सभी को पता है कि हमें धरती के संसाधनों का किस हद तक उपभोग करना चाहिए, लेकिन हममें से कितने लोग व्यवहार में इसका चिन्तन एवं पालन करते हैं।

खुशी अथवा समृद्धि का पैमाना अधिक आर्थिक विकास नहीं है। प्रसन्नता का संबंध भौतिक सुख-सुविधाओं से मिलनेवाली संतुष्टि भी नहीं है। प्रसन्नता की अनुभूति अंदर से होती है।

मानव-मस्तिष्क को लालच से हटाकर जितनी आवश्यकता हो, उतना ही लेने की प्रवृत्ति की ओर मोड़ने के लिए सतत प्रयास एवं मज़बूत इच्छाशक्ति चाहिए। इसलिए जितनी आवश्यकता हो, उतना ही लेने की सोच को हमें संस्थागत रूप देना होगा। इसे संस्थागत रूप देने के लिए भी सुनियोजित तरीक़ा अपनाना पड़ेगा। इसलिए प्रश्न उठता है कि तरीका अथवा प्रविधि क्या हो ताकि लोग लालच को त्यागकर संयमपूर्ण उपभोग की ओर प्रवृत्त हों। नयी सोच कुछ ही लोगों के दिमाग में उपजती है, इसलिए उसे संस्थागत रूप प्रदान करने की ज़िम्मदारी विभिन्न संस्थानों पर है।

इसलिए लालच को संयमपूर्ण उपभोग की प्रवृत्ति में मोड़ने के लिए भी संस्थानों और उनके प्रखर मस्तिष्कवाले लोगों का सहयोग चाहिये। अतः इस संबंध में रणनीति तैयार करने का काम संस्थानों पर ही छोड़ देना चाहिये। यदि हम शिक्षाविदों के माध्यम से यह काम करते हैं तो इसकी स्वीकार्यता अधिक होगी। शिक्षाविदों का समूह इस संबंध में एक ढाँचा विकसित कर सकता है। वैसे भी विश्वविद्यालय किसी तंत्र को व्यावहारिक रूप प्रदान करने के लिए उपयुक्त स्थान हैं। इसलिए इस संबंध में विश्वविद्यालय-व्यवस्था का सहयोग बहुत उपयोगी सिद्ध होगा।

वैसे अभी हमारे यहाँ यूरोपीय देशों की तुलना में विश्वविद्यालयों की संख्या काफ़ी कम है। नॉलेज़ कमीशन की रिपोर्ट के अनुसार भारत में करीब 600 विश्वविद्यालय हैं जबकि यूरोप में इनकी संख्या 2,500 से अधिक है। यदि हमें यूरोप की भाँति तीव्र गति से आगे बढ़ना है तो हमें अभी 1,900 और विश्वविद्यालय चाहिये।

हमारे दिलो-दिमाग में गहराई तक समा गई लालच की प्रवृत्ति को समाप्त कर संयम-आधारित उपभोग की प्रवृत्ति को स्थापित करने के लिए हमें ग़ैर-परम्परागत विश्वविद्यालय स्थापित करने की ज़रूरत है। लालची प्रवृत्ति को त्यागकर आपसी संबंध कायम करने के प्रयास तभी फलीभूत होंगे जब इस दिशा में प्रयास अंदर की आवाज यानि प्राणऊर्जा को जाग्रत् करेंगे। इसलिए लोगों के अंतर्मन को झकझोरना ज़रूरी है। प्राण ऊर्जा को जाग्रत् करने के लिए हमें संस्थानों की मदद चाहिये। ऐसे संस्थानों को हम 'सूक्ष्म ऊर्जा विश्वविद्यालय' नाम दे सकते हैं।

चूंकि प्राण ऊर्जा पर विस्तार से शोध प्राचीन काल में हुआ है, इसलिए सूक्ष्म ऊर्जा के इन प्रस्तावित विश्वविद्यालयों को उस सोच एवं व्यवस्था के साथ वर्तमान संदर्भ में मूर्त रूप प्रदान करने के लिए एक समग्र दृष्टिकोण अपनाना होगा। इन विश्वविद्यालयों को ऐसे रिसर्च डिज़ाइन पर काम कर उन्हें व्यवहार में लागू करना होगा ताकि उस प्राण ऊर्जा पर शोध हो सके और अतीत में पीछे धकेल दी गई वह सोच फिर से सामने आ सके। ये विश्वविद्यालय मानव चेतना को जगाने का काम करेंगे। एक बार यदि मानव चेतना जाग गयी, तो लोग स्वयं ही लालच को त्यागकर संयमपूर्ण जीवन जीने की ओर प्रवृत्त होंगे। ऐसा समाज सहअस्तित्व की सोच और समरस भाव के साथ जीवन जिएगा, जिससे प्रकृति अपने आप संतुलन कायम कर लेगी। चूंकि यह प्रस्तावित विश्वविद्यालय अनेक एकेडमिक गतिविधियों का मंच होगा, इसलिए इसका ढाँचा पराम्परागत विश्वविद्यालय-तंत्र से अलग रखना होगा। यदि थोड़ा-बहुत बदलाव करने की ज़रूरत हो तो वह किया जाए। यह प्रस्तावित संगठन फैकल्टी कॉन्सेप्ट पर आधारित हो सकता है। सूक्ष्म ऊर्जा विश्वविद्यालय में मुख्य रूप से नौ विभाग हो सकते हैं जिनमें शोध, पढ़ाई तथा विस्तार गतिविधियाँ होंगी। ये नौ विभाग इस प्रकार हो सकते हैं :

1. फैकल्टी ऑफ़ स्क्रीप्चरल स्टडीज़
2. फैकल्टी ऑफ़ लिंग्विस्टिक्स
3. फैकल्टी ऑफ़ थॉट्रोनिक्स एण्ड मेटा साइंसेज़
4. फैकल्टी ऑफ़ साइंस एण्ड स्प्रीच्यूलिटी
5. फैकल्टी ऑफ़ लाइफ सांइसेंज़ एण्ड टैक्नोलॉज़ी
6. फैकल्टी ऑफ़ पेटेंट्स एण्ड लीगल
7. फैकल्टी ऑफ़ कंपरेटिव रिलिजन्स
8. फैकल्टी ऑफ़ अप्लाइड एण्ड इनवायर्रमेंटल साइंसेज़
9. फैकल्टी ऑफ इंफ्रास्ट्रक्चर मैनेज़मैंट एण्ड एडमिनिस्ट्रेशन

इन विभागों का नेतृत्व अपने-अपने क्षेत्र के विशेषज्ञों द्वारा किया जाएगा और वे शोध, डॉक्यूमेंटेशन तथा परिणाम को हक़ीकत में लागू करने के ख़ास लक्ष्यों को ध्यान में रखकर काम करेंगे। इस विश्वविद्यालय में प्रवेश सिर्फ़ डॉक्टरेट तथा पोस्ट-डॉक्टरेट छात्रों को ही मिलेगा। सभी विभागों के शोध-परिणामों का सही से डॉक्यूमेंटशन करके भविष्य में उनके उपयोग हेतु गाइडलाइन्स तय की जायेगी।

संक्षेप में, फैकल्टी ऑफ़ स्क्रीप्चरल स्टडीज़ में विद्यार्थी दुनियाभर के शास्त्रों का अध्ययन करके उन बिन्दुओं को निकालेंगे जो समान हैं और लोगों को एकजुट करने में प्रयोग हो सकते हैं। उनकी अनुशंसाओं को एक स्थान पर एकत्र कर उनका विभिन्न भाषाओं में अनुवाद भाषायी विभाग द्वारा किया जायेगा। पोस्ट डॉक्टरेट विद्यार्थी विभिन्न भाषाओं में अनुदित उन अनुशंसाओं को व्यावहारिक

RELIGION

SCIENCE

जीवन में प्रयोग करने हेतु कार्ययोजना तैयार करेंगे।

इसी प्रकार फैकल्टी ऑफ़ लाइफ साइंसेज़ एंड टैक्नोलॉज़ी का काम मस्तिष्क और शरीर के संबंधों पर शोध होगा। अपने शोध-परिणाम को विश्व-स्तर पर लागू करने के लिए वे रणनीति का निर्माण भी करेंगे। फैकल्टी ऑफ़ पेटेंट्स एण्ड लीगल विभिन्न विभागों के शोध परिणामों का मूल्यांकन कर उनके पेटेंट पंजीकरण हेतु काम करेगी। यह शोध में अनावश्यक घालमेल तथा शोध की चोरी रोकने के लिए ज़रूरी है। फैकल्टी ऑफ़ कंपरेटिव रिलिजन्स का काम दुनिया के विभिन्न धर्मों का अध्ययन कर एक ऐसे विश्व धर्म का निर्माण होगा जो पूरी दुनिया को समरस कर सके। तार्किक शोध-परिणामों के आधार पर वह विश्वधर्म ऐसा वैज्ञानिक एवं आसान विकल्प प्रस्तुत करे जो दुनिया के विभिन्न समाजों को आपस में जोड़ सके।

फैकल्टी ऑफ़ थोट्रोनिक्स एण्ड मेटा साइंसेज़ टाइम-स्पेस तथा चेतना पर अध्ययन करके शरीर-मस्तिष्क के बीच संबंधों को सिद्ध करेगी और उसे व्यवहार में लागू करने के लिए रणनीति भी तैयार करेगी।

फैकल्टी ऑफ़ साइंस एंड स्प्रीच्यूलिटी के माध्यम से योग-अध्ययन यानि राजयोग, कर्मयोग, भक्तियोग, ज्ञानयोग का विधिवत् अध्ययन कर विज्ञान तथा अध्यात्म के मिश्रण में योग की प्रासंगिकता को सिद्ध किया जायेगा। इसी प्रकार फैकल्टी ऑफ़ अप्लाइड एण्ड एनवार्यनमेंट साइंसेज़ का काम धरती पर मौजूद संसाधनों के दोहन की सीमा का अध्ययन कर मानव के लालच तथा ज़रूरतों के बीच एक संतुलन स्थापित किया जायेगा। फैकल्टी ऑफ़ इंफ्रास्ट्रक्चर मैनेज़मैंट एण्ड एडमिनिस्ट्रेशन के माध्यम से विभिन्न संस्थानों, विश्वविद्यालयों के क्रियाकलापों का नियमन, निगरानी की जायेगी। इसका उद्देश्य नीति-निर्माण भी होगा ताकि सभी संस्थानों के बीच सामंजस्य बना रहे।

ज़रूरत इस बात की है कि विनाश के मार्ग पर ख़तरनाक गति से अग्रसर समाज को सही दिशा प्रदान की जाये। यदि अभी इस पर अंकुश नहीं लगाया गया तो मानव सभ्यता, पृथिवी पर मौजूद सभी जीव-जंतु और यहाँ तक कि धरती भी नहीं बचेगी। पता नहीं मनुष्य इस बात को क्यों समझता कि उसका लालच उसे विनाश की ओर ले जा रहा है। मनुष्य को धरती के शोषण का कोई अधिकार नहीं है। धरती हमसे बहुत पुरानी है और हमारे मूल्य, संस्कृति हमें सिखाती है कि हमें बड़ों का सम्मान करना चाहिये। धरती करीब 454 बिलियन साल पुरानी है जबकि मानव सभ्यता मुश्क़िल से 20 लाख साल पुरानी है। होमो सेपियंशस तो सिर्फ 50 हज़ार साल पुराने ही हैं। हम अपने मानवाधिकार की रक्षा की अक्सर मांग करते हैं, फिर धरती के अधिकार की चिन्ता क्यों नहीं करते। इसलिए आइए, मिलकर धरतीमाता का शोषण न करने का संकल्प लें और उस संकल्प को व्यवहार में लायें।

हम सभी जानते हैं कि हमें जो चाहिए, उसे प्राप्त करने की एक मर्यादा है लेकिन अधिक-से-अधिक संग्रह और प्राकृतिक

संसाधानों के दुरूपयोग की हमारी बुरी आदत के कारण पृथिवी एक ख़तरनाक क्षेत्र में तब्दील हो रही है जिसके कारण तापमान में वृद्धि, बर्फ पिघलना, समुद्र का बढ़ता जलस्तर, ख़तरनाक तूफ़ान, सूखती नदियाँ, गिरता जलस्तर, अपने प्रकार की प्रजातियों का अंत आदि अनेक समस्याएँ सामने आ रही हैं। इसके बावजूद मनुष्यों की भूख यानि लालच बढ़ता ही जा रहा है। दुनिया की 20 प्रतिशत आबादी 80 प्रतिशत जनता के संसाधनों का उपभोग कर रही है जबकि 80 प्रतिशत जनता 20 प्रतिशत संसाधनों के उपभोग पर ज़िंदा रहने के लिए मज़बूर है। इसके कारण धरती की बहुत बड़ी आबादी में गुस्सा बढ़ता जा रहा है जिसके कारण घृणा, निरादर, बेईमानी, डर, ईर्ष्या, निराशा, घबराहट, क्रोध, बेचैनी-जैसी नकारात्मक चीज़ें सामने आ रही हैं। ये ऐसी चीजें हैं जिनके कारण व्यक्ति कभी खुश नहीं रह सकता। इस धरती पर सभी को जीने का हक़ है। हमें इसका ज़रूरत से ज़्यादा शोषण करके इसे जीवनरहित करने का कोई अधिकार नहीं है। ऐसी स्थिति में धरती को बचाने का एकमात्र रास्ता है प्राचीन भारतीय मूल्यों की पुनर्स्थापना। हमारी प्राचीन संस्कृति एवं मूल्यों में सोचने एवं कर्म की शुद्धता थी और वह शुद्धता उस समय की शिक्षा-व्यवस्था से आती थी। नालन्दा और तक्षशिला-जैसे विश्वविद्यालयों और उनसे जुड़े गुरुकुलों से जो लोग तैयार होते थे उनमें हर प्रकार की शुद्धता थी। उस समय की हमारी शिक्षा-व्यवस्था सूक्ष्म ऊर्जा के संयमित उपयोग की समझ पैदा करती थी और उससे जो लोग तैयार होते थे समाज के बेहतरीन लोग होते थे। वे स्वयं में भी संतुष्ट, शांत एवं किसी प्रकार के लोभ-लालच से रहित होते थे। वैसा ही मॉडल हमें आज फिर से वर्तमान सन्दर्भ में खड़ा करना होगा।

सूक्ष्म ऊर्जा विश्वविद्यालय फिर से सूक्ष्म ऊर्जा को खोजने का एक मंच व अवसर प्रदान करेंगे। सूक्ष्म ऊर्जा वास्तव में उष्मा, विद्युत, चुम्बक, मशीन एवं परमाणु ऊर्जा से अलग ऊर्जा है। जब हम सूक्ष्म ऊर्जा की खोज करेंगे, तो उसके माध्यम से अनुसंधान एवं उससे जुड़ी दूसरी अनेक गतिविधियों के लिए नये द्वार खुलेंगे। संतुलित मानव की जो मूलभूत संयमित आवश्यकताएँ सामने आएँगी, उनसे नयी सोच विकसित होगी और मनुष्य प्रकृति के नज़दीक आयेगा। फिर मनुष्य स्वयं ही प्रकृति के नियमों का पालन करता हुआ दैवीय योजनानुसार आगे बढ़ेगा। मनुष्य के विचारों में इस प्रकार का बदलाव एक ऐसी नयी दुनिया का मार्ग प्रशस्त करेगा जहाँ लालच के स्थान पर लोग ज़रूरत को महत्त्व देना शुरू कर देंगे। उस समझवाले लोग जान-बूझकर अपनी भावी पीढ़ियों के सुरक्षित एवं संतुलित भविष्य को नष्ट नहीं करेंगे।

इस प्रकार की समझ एवं ज्ञान के विस्तार हेतु भारत को करीब 1,800 से नये विश्वविद्यालयों की ज़रूरत है। भारत को चाहिए कि वह 900 सूक्ष्म ऊर्जा विश्वविद्यालय खोले और शेष 900 परम्परागत विश्वविद्यालय खोले। जो भी सूक्ष्म ऊर्जा विश्वविद्यालय खोला जाए, वह प्रकृति के निकट हो जैसे कि समुद्र तट, पहाड़, जंगल, नदी तट आदि। प्राकृतिक माहौल में शोधकर्ताओं को शान्तिपूर्वक काम करने का मौक़ा मिलेगा और शहरी व भौतिक जीवन का शोर-शराबा उनके काम में बाधा नहीं पैदा कर सकेगा। इससे प्रशासनिक परेशानियों, जैसे– भूमि-अधिग्रहण तथा दूसरी प्रक्रिया पूरी करने

धरती को बचाने का एकमात्र रास्ता है प्राचीन भारतीय मूल्यों की पुनर्स्थापना। हमारी प्राचीन संस्कृति एवं मूल्यों में सोचने एवं कर्म की शुद्धता थी और वह शुद्धता उस समय की शिक्षा–व्यवस्था से आती थी। नालन्दा और तक्षशिला–जैसे विश्वविद्यालयों और उनसे जुड़े गुरुकुलों से जो लोग तैयार होते थे उनमें हर प्रकार की शुद्धता थी। उस समय की हमारी शिक्षा–व्यवस्था सूक्ष्म ऊर्जा के संयमित उपयोग की समझ पैदा करती थी और उससे जो लोग तैयार होते थे समाज के बेहतरीन लोग होते थे। वे स्वयं में भी संतुष्ट, शांत एवं किसी प्रकार के लोभ–लालच से रहित होते थे।

के झंझट से भी मुक्ति मिल जायेगी। इस काम के लिए गुजरात की पावा हिल सबसे उत्तम स्थान हो सकता है।

इस काम के लिए जिन वन, तटीय अथवा पहाड़ी क्षेत्रों का चयन किया जाए, उन्हें सुरक्षित क्षेत्र अथवा विशेष आर्थिक क्षेत्र की तर्ज़ पर विशेष आध्यात्मिक क्षेत्र घोषित किया जाए। विशेष आध्यात्मिक क्षेत्र से औद्योगिक घरानों का निर्माण नहीं होगा बल्कि वे पूरी तरह ज्ञान के क्षेत्र होंगे। विशेष आध्यात्मिक क्षेत्र से शिक्षा को सहारा मिलेगा और उससे ज्ञान के भण्डार निर्मित होंगे।

ऐसा कम-से-कम एक विश्वविद्यालय प्रारम्भ करने के लिए सबसे पहले प्रत्येक राज्य अपने यहाँ विशेष आध्यात्मिक क्षेत्र विकसित करने के लिए स्थान की पहचान कर सकता है। जिस प्रकार किसी नये बसनेवाले शहर के आसपास विभिन्न प्रकार की वाणिज्यिक गतिविधियाँ शुरू हो जाती हैं, वैसी गतिविधियाँ ज्ञान के इन नये स्रोतों के आसपास न शुरू होने दी जायें। बाद में ये स्थान स्वयमेव संस्कृति-केन्द्रों के रूप में विकसित होंगे। सभी राज्यों में एक से अधिक सूक्ष्म ज्ञान विश्वविद्यालय खोले जा सकते हैं।

असीम लक्ष्य की प्राप्ति के लिए क्रिया और प्रयास इतने असीम होने चाहिए कि लक्ष्य और प्रयास एकात्म हो जायें। एक राष्ट्र के रूप में हम यदि ऐसे संतुलित जीवन की कल्पना करते हैं, जिसमें सब प्रकार की खुशियाँ, नियम, तर्क और ज्ञान हो तो हमें संतुलित शरीर, मस्तिष्क और आत्मा के विकास पर ध्यान देना होगा। हमें अध्यात्म और भौतिकता– दोनों के संतुलित विकास पर ध्यान देना होगा। यदि भविष्य की कल्पना न हो तो विकास को विकास माना ही नहीं जा सकता। जो विकास वर्तमान को ध्यान में रखकर किया जाता है वह स्थिर होता है और जो विकास भविष्य को ध्यान में रखकर किया जाता है, वही वास्तविक विकास होता है। वर्तमान को ध्यान में रखकर किया गया विकास विनाश, शोषण और संकीर्णता की ओर ले जाता है। हम आज वैसी ही अवस्था में खड़े हुए हैं। पर्यावरणविदों ने भविष्यवाणी की है कि 452 बिलियन साल पुरानी धरती आनेवाले 50,000 सालों में नष्ट हो जायेगी।

यदि हम धरती को विनाश से बचाने में सहभागी बनना चाहते हैं तो हमें लालच को त्यागकर आवश्यकताभर ग्रहण करने की प्रवृत्ति की ओर बढ़ना होगा। हमें शोषण की अपनी वासना-प्रवृत्ति पर लगाम लगानी पड़ेगी और मनुष्यों, प्राणियों, वनस्पतियों और धरती के शोषण की प्रवृत्ति को त्यागना होगा। यदि हम स्वयं का मूल्यांकन करें, तो पता चलेगा कि हम आगे बढ़ने के बजाय पीछे हट रहे हैं। हमने स्वार्थ की पशु-प्रवृत्ति और स्वकेन्द्रितता अपना ली है। हमें मानवीय और भौतिक संसाधनों के दुरूपयोग की आदत छोड़नी होगी। यदि हम ईमानदारी से ऐसा करते हैं, तभी हम इस धरती और अपनी भावी पीढ़ियों को बचाने में सहभागी बन पायेंगे। आज जो छद्म चिन्तक मानवाधिकारों की बात करते हैं, उन्होंने कभी पृथिवी के अधिकारों की चिन्ता नहीं की है। आप जब चाहें और जहाँ चाहे पृथिवी को कष्ट पहुँचाते रहते हैं, आप इसकी खुदाई कर सकते हैं, आसमान छूती इमारतें बना सकते हैं पानी के लिए गहरे छेद कर सकते हैं। क्या कभी किसी को उस पृथिवी की करुण पुकार, उसका दर्द, उसकी असहाय स्थिति महसूस होती है जो हमें जीवन देती है। किन्तु भगवान् के इस अनुपम उपहार की मनुष्य ने कभी चिन्ता नहीं की, क्योंकि उसके अन्दर जो बुराइयाँ हैं, वे उसे ऐसा नहीं करने देतीं। उन्हीं बुराइयों के कारण ईसा मसीह को सूली पर लटका दिया गया था और वीर भगत सिंह और दूसरे सही सोचवाले लोगों को फाँसी पर टांग दिया गया था।

मनुष्य की इस ग़लत सोच को बदलने में सूक्ष्म ऊर्जा विश्वविद्यालय बहुत मददगार सिद्ध हो सकते हैं। ये विश्वविद्यालय सकारात्मक ऊर्जा और सकारात्मक सोचवाले लोग उत्पन्न करेंगे। ऐसे लोग, जो संतुलित विकास, समरसता और प्रकृति के साथ मिलकर जीवन जिएँगे तथा दूसरों को भी प्रेरित करेंगे। इसी से धरती शान्ति एवं प्रसन्नतापूर्वक जीवन जीने का स्थान बनेगी।

इसलिए सूक्ष्म ऊर्जा विश्वविद्यालय और विशेष आध्यात्मिक क्षेत्र स्थापित करने की शुरूआत कर देनी चाहिए। यहीं से शान्ति और प्रसन्नता की अमृतवर्षा होगी। इन्हीं केन्द्रों के माध्यम से पूरी दुनिया को शान्ति और प्रसन्नता के अमृतपान का मौका मिलेगा और उनकी शोषणयुक्त उपभोग की वासना शांत होगी।

इसलिए सूक्ष्म ऊर्जा विश्वविद्यालयों के माध्यम से विशेष आध्यात्मिक क्षेत्र स्थापित करने की शुरूआत करने का यह सही समय है। ■

असीम लक्ष्य की प्राप्ति के लिए क्रिया और प्रयास इतने असीम होने चाहिए कि लक्ष्य और प्रयास एकात्म हो जायें। एक राष्ट्र के रूप में हम यदि ऐसे संतुलित जीवन की कल्पना करते हैं, जिसमें सब प्रकार की खुशियाँ, नियम, तर्क और ज्ञान हो तो हमें संतुलित शरीर, मस्तिष्क और आत्मा के विकास पर ध्यान देना होगा। हमें अध्यात्म और भौतिकता— दोनों के संतुलित विकास पर ध्यान देना होगा। यदि भविष्य की कल्पना न हो तो विकास को विकास माना ही नहीं जा सकता। जो विकास वर्तमान को ध्यान में रखकर किया जाता है वह स्थिर होता है और जो विकास भविष्य को ध्यान में रखकर किया जाता है, वही वास्तविक विकास होता है। वर्तमान को ध्यान में रखकर किया गया विकास विनाश, शोषण और संकीर्णता की ओर ले जाता है।

वनस्पति-जगत्

तुलसी एक दिव्य पौधा

डॉ. बबिता कुमारी
(शोध-छात्रा, डी.लिट्.,
मिथिला शोध संस्थान, दरभंगा)

भारतीय संस्कृति में तुलसी के पौधे का बहुत महत्त्व है और इस पौधे को बहुत पवित्र माना जाता है। ऐसा माना जाता है कि जिस घर में तुलसी का पौधा नहीं होता, उस घर में भगवान् भी रहना पसंद नहीं करते। माना जाता है कि घर के आँगन में तुलसी का पौधा कलह और दरिद्रता दूर करता है। इसे घर के आँगन में स्थापित कर सारा परिवार सुबह-सवेरे इसकी पूजा-अर्चना करता है। तुलसी मन और तन– दोनों को स्वच्छ करती है। इसके गुणों के कारण इसे पूजनीय मानकर उसे देवी का दर्ज़ा दिया जाता है। तुलसी केवल हमारी आस्था का प्रतीकभर नहीं है। इस पौधे में पाए जाने वाले ओषधीय गुणों के कारण आयुर्वेद में भी तुलसी को महत्त्वपूर्ण माना गया है। भारत में सदियों से तुलसी का इस्तेमाल होता चला आ रहा है।

तुलसी का पौराणिक महत्त्व– तुलसी के ऊपर एक पृथक् पुराण लिखा जा सकता है, संक्षेप में तुलसी का धार्मिक व ओषधिजनित महत्त्व अपने आलेख इस पर बताने की कोशिश कर रह हूँ। तुलसी का जितना हमारे ओषधिशास्त्र से सम्बन्ध है, उतना अन्य किसी भी ओषधि से मनुष्य का सम्बन्ध नहीं है। लगभग सभी रोगों में अनुपात-भेद और मिश्रण के साथ इसका प्रयोग किया जाता है। आयुर्वेद-जगत् में प्रत्येक रोग में काम आनेवाली ओषधियों में तुलसी या मकरध्वज प्रमुख हैं, जिसकी प्रयोग-विधि जान लेने से वैद्य संसार के लगभग सभी रोगों से लड़ सकता है, तुलसी में 27 तरह के खनिज पाए जाते हैं ।

विष्णुपुराण, ब्रह्मपुराण, स्कन्दपुराण, देवीभागवतपुराण के अनुसार तुलसी की उत्पति की अनेक कथाएँ हैं, पर एक कथा के अनुसार समुद्र-मंथन करते समय जब अमृत निकला, तो कलश को देखकर श्रम की सार्थकता से वशीभूत होकर देवताओं के नेत्रों से अश्रुस्राव हो उठा और उन बूँदों से तुलसी उत्पन्न हुई ।

तुलसी को विश्व में ओसियम सेंटम के नाम से जाना जाता है जिसके 22 भेद हैं, लेकिन मुख्यतया कृष्ण तुलसी, श्वेत तुलसी, गंध तुलसी, राम तुलसी, बन तुलसी, बिल्वगंध तुलसी, बर्बरी तुलसी के नाम से जानी जाती है।

तुलसी के सर्वरोगसंहारक प्रवृत्ति के कारण ही घर में घरेलू वस्तु की श्रेणी में रखा गया है। तुलसी की गंध से मलेरिया के मच्छर दूर रहते हैं, क्योंकि इसके पौधे में प्रबल वैद्युतिक शक्ति होती है, जोकि पौधे के चारों और दो सौ गज तक रहती है। तुलसी की लकड़ी धारण करने से शरीर की वैद्युतिक शक्ति नष्ट नहीं होती, इसीलिए इसकी माला पहनने का प्रचलन है।

तुलसी का धार्मिक और सांस्कृतिक महत्त्व

अपने घर में तुलसी बोने से तथा दर्शन करने से ब्रह्महत्या-जैसे पाप भी नष्ट हो जाते है। हज़ारों आम और पीपल बोने का जो फल है, वह एक तुलसी वृक्ष को रोपने का है। तुलसी की जड़ में कार्तिक मास में, जो शाम को दीपक जलाते हैं , उनके घर में श्री और संतान की वृद्धि होती है तथा तुलसी की मञ्जरी से श्रावण-भाद्रपद में भगवान् विष्णु को चंदन अर्पण करते हैं, वे लोग मृत्यु के पश्चात् विष्णुलोक को जाते हैं क्योंकि तुलसी को विष्णुप्रिया भी कहते हैं। तुलसी को बोने से, उसको दूध से सींचने पर स्थिर लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। तुलसी की मृत्तिका को माथे पर लगाने से तेजस्विता बढ़ती है। तुलसीयुक्त जल से स्नान करते समय '**ॐ नमो भगवते वासुदेवाय**' का जप करने से प्रेतबाधा से मुक्ति मिलती है। तुलसी के पत्ते एक मास तक बासी नहीं माने जाते हैं। देवीभागवतपुराण में उल्लेख हैं कि तुलसी के स्तोत्र, मन्त्र, कवच आदि के पठन और पूजन से मोक्ष प्राप्त होती है और समस्त इच्छाएँ पूर्ण होती हैं। कार्तिक शुक्ल एकादशी को तुलसी पूजन का उत्सव मनाया जाता है, किंतु उत्तर भारत में इसका विशेष महत्त्व है। वैसे तो तुलसी विवाह के लिए कार्तिक शुक्ल नवमी की तिथि ठीक है, परन्तु कुछ लोग एकादशी से पूर्णिमा तक तुलसी पूजन कर पाँचवें दिन तुलसी का विवाह करते हैं। तुलसी विवाह की यही पद्धति अधिक प्रचलित है। 'वृंदा , वृन्दावनी, विश्वपावनी , विश्वपूजिता, पुष्पसारा , नंदिनी , तुलसी कृष्णाजीवनी' – इन आठ नामों के जप से अश्वमेध-यज्ञ का फल प्राप्त होता है।

ओषधीय महत्त्व

- तुलसी की 10-12 पत्तियों को गर्म पानी से धोकर रोज सुबह खायें। लिवर की समस्याओं में यह बहुत फायदेमंद है।
- एक चम्मच तुलसी की पिसी हुई पत्तियों को पानी के साथ मिलाकर गाढ़ा पेस्ट बना लें। पेटदर्द होने पर इस लेप को नाभि और पेट के आस-पास लगाने से आराम मिलता है।
- पाचन-संबंधी समस्याओं, जैसे– दस्त लगना, पेट में गैस बनना आदि होने पर एक ग्लास पानी में 10-15 तुलसी की पत्तियाँ डालकर उबालें और काढ़ा बना लें। इसमें चुटकीभर सेंधा नमक डालकर पीएं।
- बुखार आने पर दो कप पानी में एक चम्मच तुलसी की पत्तियों का पाउडर और एक चम्मच इलायची पाउडर मिलाकर उबालें और काढ़ा बना लें। दिन में दो से तीन बार यह काढा पीएँ। स्वाद के लिए चाहें तो इसमें दूध और चीनी भी मिला सकते हैं।
- खाँसी-जुकाम करीब सभी कफ सीरप को बनाने में तुलसी का इस्तेमाल किया जाता है। तुलसी की पत्तियाँ कफ साफ करने में मदद करती हैं। तुलसी की कोमल पत्तियों को थोड़ी- थोड़ी देर पर अदरक के साथ चबाने से खाँसी-जुकाम से राहत मिलती है। चाय की पत्तियों को उबालकर पीने से गले की खराश दूर हो जाती है। इस पानी को आप गरारा करने के लिए भी इस्तेमाल कर सकते हैं।
- बारिश या ठण्ढ के मौसम में सर्दी से बचाव के लिए तुलसी की लगभग 10-12 पत्तियों को एक कप दूध में उबालकर पीएँ। सर्दी की दवा के साथ-साथ यह एक न्यूट्रिटिव ड्रिंक के रूप में भी काम करता है। सर्दी-जुकाम होने पर तुलसी की पत्तियों को चाय में उबालकर पीने से राहत मिलती है। तुलसी का अर्क तेज बुखार को कम करने में भी कारगर साबित होता है।
- श्वास-संबंधी समस्याओं का उपचार करने में तुलसी बहुत उपयोगी साबित होती है। शहद अदरक और तुलसी को मिलाकर बनाया गया काढ़ा पीने से ब्रोंकाइटिस, दमा, कफ और सर्दी में राहत मिलती है। नमक, लौंग और तुलसी के पत्तों से बनाया गया काढ़ा इंफ्लुएंजा में फ़ौरन राहत देता है।
- तुलसी गुर्दे को मज़बूत बनाती है। यदि किसी के गुर्दे में पथरी हो गई हो तो उसे शहद में मिलाकर तुलसी के अर्क का नियमित सेवन करना चाहिए। छह महीने में फर्क दिखेगा।
- हृदय रोग तुलसी खून में कोलेस्ट्राल के स्तर को घटाती है। ऐसे में हृदयरोगियों के लिए यह खासी कारगर साबित होती है।
- तुलसी की पत्तियों में तनावरोधी गुण भी पाए जाते हैं। तनाव को खुद से दूर रखने के लिए कोई भी व्यक्ति तुलसी के 12 पत्तों का रोज दो बार सेवन कर सकता है।
- दाद, खुजली और त्वचा की अन्य समस्याओं में तुलसी के अर्क को प्रभावित जगह पर लगाने से कुछ ही दिनों में रोग दूर हो जाता है।
- नैचुरोपैथों द्वारा ल्यूकोडर्मा का इलाज करने में तुलसी के पत्तों को सफलतापूर्वक इस्तेमाल किया गया है। तुलसी की ताजा पत्तियों को संक्रमित त्वचा पर रगडे। इससे इंफेक्शन ज्यादा नहीं फैल पाता।
- तुलसी की सूखी पत्तियों को सरसों के तेल में मिलाकर दाँत साफ़ करने से साँसों की दुर्गंध चली जाती है। पायरिया-जैसी समस्या में भी यह ख़ासी कारगर साबित होती है।
- सिर के दर्द में तुलसी एक बढ़िया दवा के तौर पर काम करती है। तुलसी का काढ़ा पीने से सिर के दर्द में आराम मिलता है।
- आँखों की जलन में तुलसी का अर्क बहुत कारगर साबित होता है। रात में रोजाना श्यामा तुलसी के अर्क को दो बूँद आँखों में डालना चाहिये।
- तुलसी के पत्तों को सरसों के तेल में भून लें और लहसुन का रस मिलाकर कान में डाल लें। कान दर्द में आराम मिलेगा।
- ब्लड-प्रेशर को सामान्य रखने के लिए तुलसी के पत्तों का सेवन करना चाहिए।
- तुलसी के पाँच पत्ते और दो काली मिर्च मिलाकर खाने से वात रोग दूर हो जाता है।
- तुलसी तथा पान के पत्तों का रस बराबर मात्रा में मिलाकर देने से बच्चों के पेट फूलने का रोग समाप्त हो जाता है।
- तुलसी का तेल विटामिन सी, कैल्शियम और फॉस्फोरस से भरपूर होता है।
- बदलते मौसम में चाय बनाते हुए हमेशा तुलसी की कुछ पत्तियाँ डाल दें। वायरल से बचाव रहेगा।
- शहद में तुलसी की पत्तियों के रस को मिलाकर चाटने से चक्कर आना बंद हो जाता है।
- तुलसी के बीज का चूर्ण दही के साथ लेने से खूनी बवासीर में खून आना बंद हो जाता है।
- तुलसी के बीजों का चूर्ण दूध के साथ लेने से नपुंसकता दूर होती है और यौन-शक्ति में वृद्धि होती है।
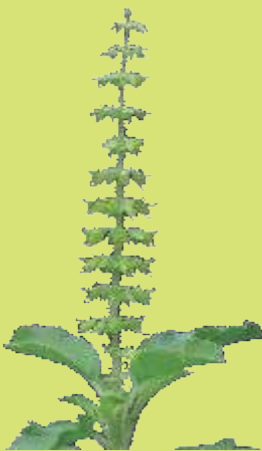
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय के औषधविज्ञान विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. मुनीष गर्ग ने अश्वगंधा तथा तुलसी पौधों से जैविक अर्क निकालकर जोड़ों के दर्द के निवारण हेतु दवा-संबंधी पेटेंट दर्ज़ कराया है। यह पेटेंट जोड़ों के दर्द घुटनों के दर्द गठिया आदि रोगों के प्रभावी इलाज़ के लिए हर्बल दवाइयाँ तैयार करने में प्रभावी होगा।

तुलसी का पौधा मलेरिया के कीटाणु नष्ट करता है। नयी खोज से पता चला है इसमें कीनोल एस्कार्बिक एसिड केरोटिन और एल्केलाइड होते हैं। तुलसी-पत्र मिला हुआ पानी पीने से कई रोग दूर हो जाते हैं। इसीलिए चरणामृत में तुलसी का पत्ता डाला जाता है। ■

मोदी और मीडिया

सही अर्थ की तलाश में सेक्युलरिज़्म और राष्ट्रवाद

n अभिषेक दूबे

जेल में फांसी का इंतज़ार कर रहे सुकरात और उसके सहयोगी क्रीटो के बीच जो बातचीत हुई, उसे क्रीटो ने लिपिबद्ध किया। मूल रूप से एथेंस-निवासी क्रीटो सुकरात का अत्यंत समर्पित एक बुजुर्ग दोस्त था जो सालों से उसके साथ था और उसकी शिक्षा एवं सिद्धांतों में दृढ़ विश्वास रखता था। वह बातचीत भोर होने से भी काफ़ी पहले हुई और उस बातचीत के बाद सुकरात कुछ घंटे ही ज़िंदा रहा। बातचीत में क्रीटो सुकरात को सलाह देता है कि उसे जेल से फरार हो जाना चाहिए क्योंकि उसे ग़लत तरीके से अन्यायपूर्वक बंदी बनाया गया है। सुकरात इस पर अपनी असहमति जताते हुए कहता है कि व्यक्ति को अपने ऊपर लगे आरोपों का सामना करना चाहिए भले ही वे आरोप ग़लत तरीक़े से लगाये गये हों। बातचीत काफ़ी लंबी है और उसका निचोड़ यह है कि सुकरात जेल से फ़रार न होने का तर्क देते हुए कहता है कि वह देश का नागरिक है, वहीं पैदा हुआ, पला, बढ़ा और शिक्षा प्राप्त की। सही मायने में वह देश का बालक है और उसकी भी उसी प्रकार देश के प्रति एक ज़िम्मेदारी है जिस प्रकार एक बालक की अपने माँ-बाप के प्रति होती है। इतने साल देश में रहते हुए और इसके द्वारा प्रदान की गई सुविधाओं का उपभोग करते हुए उसने देश के क़ानूनों का पालन करना स्वीकार किया। उसके न्यायालय के निर्णयों को भी मानना स्वीकार किया है भले ही वे निर्णय उसके अनुकूल हों अथवा नहीं।

अब हम सीधे अफज़ल गुरु की फाँसी के आलोक में पैदा हुए जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जे.एन.यू) विवाद पर आते हैं। मोहम्मद अफ़ज़ल गुरु एक काश्मीरी अलगाववादी था, जिसकी लोकतंत्र के मंदिर यानि संसद पर 2001 में हुए आतंकी हमले में भूमिका स्पष्ट थी। उसी के कारण न्यायालय ने उसे सजा दी और उस सजा को उच्चतम न्यायालय ने भी बरकरार रखा। राष्ट्र प्रमुख यानि देश के राष्ट्रपति द्वारा उसकी दया याचिका ख़ारिज़ कर दिये जाने के बाद 9 फरवरी, 2013 को उसे फाँसी दे दी गयी। इसे आधार बनाकर जे.एन.यू के कुछ दिग्भ्रमित छात्रों ने अत्यंत निन्दनीय विरोध-मार्च आयोजित किया, जिसमें अफज़ल और मक़बूल भट्ट की फाँसी को 'न्यायिक हत्या' करार दिया

गया। यहाँ समझने की बात यह है कि इन दिग्भ्रमित युवाओं की देश के संविधान, राष्ट्रपति, उच्चतम न्यायालय और देश के क़ानून में आस्था नहीं है। संसद पर हुए हमले में मारे गये दिल्ली पुलिस के छह जवानों, दो संसद सुरक्षा-गार्डों और एक माली की शहादत को सलाम करने अथवा उन शहीदों के परिवारों के साथ खड़े होने के बजाय वे उन आतंकवादियों के पक्ष में खड़े हुए, जिन्हें संसद पर हमले का दोषी करार दिया गया।

घोर आश्चर्य की बात है कि 'कश्मीर की आज़ादी तक, ज़ंग रहेगी, ज़ंग रहेगी..इंडिया की बर्बादी तक जंग रहेगी, जंग रहेगी'-जैसे नारे पाकिस्तान अधिकृत काश्मीर स्थित किसी आतंकी प्रशिक्षण-शिविर में नहीं, बल्कि देश की राजधानी में स्थित जे.एन.यू.-जैसे विख्यात विश्वविद्यालय में खुलेआम लगे। इससे भी शर्मनाक बात यह है कि इन दिग्भ्रमित युवाओं को फटकार लगाने के बजाय देश की दो बड़ी विरोधी पार्टियों के नेता– राहुल गाँधी और अरविन्द केजरीवाल ने वहाँ जाकर उनका समर्थन किया। शायद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के प्रति उनकी नफ़रत ने उन्हें देश के प्रति उनके दायित्व से भी विमुख कर दिया। यह भी हो सकता है कि किसी भी प्रकार की स्थिति का राजनीतिक फ़ायदा उठाने की अपनी पुरानी आदत के कारण उन्होंने ऐसा किया। दिल्ली के लुटियंस जोन तक सिमटा वह बुद्धिजीवी वर्ग भी इस अभियान में शामिल हो गया जिसे सूखे तालाब से भी मछली पकड़ने की आदत है। पिछले दिनों 'असहिष्णुता' की आड़ में बहुत चालाकी से चलाया गया देशव्यापी अभियान ऐसी ही शरारत का हिस्सा था। मीडिया के एक बहुत बडे वर्ग, ख़ासतौर से इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की इसमें सहभागिता भी साफ़ तौर पर देखी जा सकती है। आज शोर मचानेवाला मीडिया का वही वर्ग है जो मई 2014 तक जमकर सत्तासुख भोग रहा था। मीडिया का जो वर्ग इनका पर्दाफ़ाश करता है, उसे ये वर्तमान सत्ता के क़रीबी होने का आरोप लगाकर अपमानित करने का प्रयास करते हैं। यानि अभी तक ये सत्ता का उपभोग करते रहे तो ये सही थे और आज यदि कोई दूसरा सही को सही कहने का साहस जुटा पा रहा है तो वह सत्ता के इशारे पर काम करनेवाला हो गया। असली मुद्दा भी यही है कि 'असहिष्णुता' के नाम पर देशभर में असहिष्णुता का प्रदर्शन करनेवाले ये बुद्धिजीवी आख़िर दूसरों के प्रति इतने असहिष्णु क्यों दिखाई दे रहे हैं?

इ७स पूरे संदर्भ में मीडिया– प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक और डिजि़टल– की क्या भूमिका है– यह समझने के लिए एक बार फिर सुकरात और क्रीटो संवाद की तरफ़ मुड़ते हैं। इससे जे.एन.यू. विवाद को समझना और भी आसान हो जाएगा। ऐसा लगता है कि या तो सुकरात द्वारा ज़हर का प्याला पीकर मृत्युदण्ड स्वीकार करने का निर्णय ग़लत था या फिर एक देश के रूप में हमारी सोच उस जंगल राज के तर्क पर टिकी है जहाँ न तो संविधान में किसी को भरोसा है और न ही राज्य, लोकतंत्र, विधायिका, न्यायपालिका, कार्यपालिका और क़ानून में। वास्तव में जे.एन.यू. की घटना कोई छिटपुट घटना नहीं, बल्कि एक गंभीर बीमारी का लक्षण है। यह वाकई बहुत चिन्ता की बात है कि इस जंगलराज सोच के प्रवर्तक जे.एन.यू. के छात्र हैं, लेकिन इससे भी अधिक चिन्ता की बात यह है कि देश के प्रबुद्ध विश्वविद्यालय के इन छात्रों को प्रबुद्ध वर्ग के ही एक ख़ास वर्ग द्वारा अपने निहित स्वार्थों के लिए दिग्भ्रमित किया गया है। यह कोई छिटपुट घटना नहीं है, बल्कि एक बहुत बड़े अभियान का हिस्सा है जो नरेन्द्र मोदी की सुनामी से भयभीत है। यह अभियान वास्तव में है क्या? यह 26 मई, 2014 को ही क्यों शुरू हुआ?

इसका पहला कारण यह है कि दिल्ली में सत्ता लॉबी अभी तक एक ख़ास परिवार द्वारा शासित होने की आदी थी। उसी के आदेशों का पालन करना और उसी से लाभ उठाने की इन्हें आदत पड़ी हुई थी। भले ही कुछ समय मोरारजी देसाई, चौधरी चरण सिंह अथवा विश्वनाथ प्रताप सिंह और चन्द्रशेखर प्रधानमंत्री बने हों, लेकिन वे सभी कभी-न-कभी काँग्रेस से ही जुड़े हुए थे और लुटियंस दिल्ली में सिमटे बुद्धिजीवियों और दलालों की ज़रूरतों और उनका मुँह बंद करने के तरीक़ों से वे वाक़िफ थे। सही मायने में आज़ादी के बाद पहली बार ग़ैर-काँग्रेस सरकार का नेतृत्व अटल बिहारी वाजपेयी ने किया। उस समय भी लुटियंस दिल्ली की इस लॉबी की बेचैनी स्पष्ट तौर पर समझी जा सकती थी। चूंकि वाजपेयी सरकार करीब दो दर्जन सहयोगी दलों की बैसाखी पर टिकी थी, इसलिए उस सरकार ने पूरी क़ोशिश की कि इस लॉबी में बेचैनी पैदा न हो। इसलिए उस समय वे इतने बेचैन नहीं हुए, जितने आज नरेन्द्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद दिखाई दे रहे हैं। इनके लिए तो मोदी मानो किसी दूसरे ग्रह से आया हुआ प्राणी हो। मोदी की कोई काँग्रेसी पृष्ठभूमि नहीं है। उनके राजनीतिक जीवन का अधितकर समय दिल्ली से बाहर बीता– करीब 12 साल तक गुजरात के मुख्यमंत्री तथा देश के कई राज्यों में पार्टी-प्रभारी रहे। इसके अलावा वे 282 सीटों के प्रचण्ड बहुमत के साथ सत्ता में आए हैं। पिछले तीन दशक में पहली बार किसी प्रधानमंत्री को पूर्ण बहुमत के साथ सरकार बनाने का मौका मिला। इसलिए लुटियंस दिल्ली में सिमटी सत्ता की लॉबी का बेचैन होना स्वाभाविक था।

दूसरे, अभी तक जितने भी प्रधानमंत्री हुए हैं, वे किसी-न-किसी राजनीतिक परिवार से जुड़े थे या फिर समाज के उच्च आर्थिक वर्ग से थे और उनकी शिक्षा-दीक्षा भी विदेश में हुई थी। इसके विपरीत नरेन्द्र मोदी सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से समाज के निम्न वर्ग से आते हैं। वे सत्ता के शिखर पर अपनी मेहनत और अपने गुणों के सहारे पहुँचे हैं। यह महज़ एक

संयोग नहीं था कि सूट और जैकेट पहननेवाले परिवार से आनेवाले राहुल गाँधी ने एक 'चायवाले' मोदी पर 'सूट-बूट की सरकार' का तंज कसा। यह सच है कि एच. डी.. देवेगौड़ा ऐसे पहले प्रधानमंत्री थे जो समाज के पिछडे वर्ग से थे, लेकिन उनका प्रधानमंत्री बनना महज एक अकस्मात् घटना थी। मोदी देश की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी का प्रतिनिधित्व करते हैं और वे 12 साल तक गुजरात में दिखाए गए सुशासन और सकारात्मक सोच के आधार पर सत्ता में आए।

तीसरे, नरेन्द्र मोदी पिछले 12 साल से ही इस सत्ता लॉबी के हमलों को झेल रहे थे। लुटियंस दिल्ली में जमे हुए सत्ता के इन दलालों ने उन्हें सत्ता से हटाने के लिए पूरी ताक़त लगायी। यही नहीं, तत्कालीन केन्द्र सरकार ने भी सरकारी एजेंसियों, सरकारी अधिकारियों और ग़ैर-सरकारी संगठनों के कार्यकर्ताओं को उन्हें फँसाने के काम में लगाया। आधारहीन आरोपों के बूते उन्हें न्यायालय में घसीटने के अनगिनत प्रयास हुए। मीडिया के एक ख़ास वर्ग ने गुजरात दंगों को इस प्रकार दिखाया मानो देश में उससे पहले कभी कोई दंगा हुआ ही नहीं। टेलीविजन मीडिया के कुछ चेहरे, जैसे राजदीप सरदेसाई और बरखा दत्त चर्चित ही मोदी विरोध के कारण हुए। इस तथ्य का ज़िक्र नरेन्द्र मोदी ने प्रधानमंत्री बनने से पहले मधु किश्वर को दिए एक साक्षात्कार में किया भी।

मोदी विरोध कितना गहरा था उसकी एक और बानगी देखिये। जब 2002 में गुजरात विधानसभा चुनाव का परिणाम घोषित हो रहा और मोदी की जीत साफ़ दिख रही थी, तो उस समय एक बड़े न्यूज़ चैनल के मालिक ने अपने कार्यक्रम को समाप्त करते हुए टिप्पणी की, 'नरेन्द्र मोदी प्रचण्ड बहुमत के साथ सरकार बनानेवाले हैं। भाजपा के लिए भले ही यह एक खुशनुमा दिन हो और यह दिन मोदी के लिए भी खुशनुमा हो सकता है लेकिन भारतीय लोकतंत्र के लिए यह एक बहुत लंबी और सबसे अंधेरी रात साबित होनेवाली है। गुड नाइट।' यह टिप्पणी उस समय आई जब मोदी को गुजरात में सरकार बनाने का जनादेश मिले कुछ ही घंटे बीते थे। गुजरात की जनता ने इसके बाद 2007 और 2012 में भी मोदी को जनादेश दिया। घृणा का भाव उस समय अपनी सारी हदें पार कर गया जब गुजरात के सभी लोगों को साम्प्रदायिक करार दे दिया गया क्योंकि उन्होंने मोदी और भाजपा को जनादेश दिया था। उस समय यह शीर्षक बहुत देखा गया 'साम्प्रदायिक गुजरात ने साम्प्रदायिक मोदी को दिया जनादेश'। ये केवल शर्मनाक और बेचैन कर देनेवाली टिप्पणियाँ न थीं, लेकिन उस समय सेक्युलरिज़्म के नाम पर इन्हें नज़रअंदाज़ कर दिया गया।

चौथी बात यह है कि संयोगवश जब गुजरात दंगे हुए और मोदी देश की राजनीति में एक विकल्प के रूप में उभर रहे थे, उसी समय निजी चैनलों की भी बाढ़-सी आ रही थी। दंगा देश में कहीं भी हो, शर्मनाक होता ही है, लेकिन गुजरात दंगे को आधार बनाकर देश के निजी न्यूज़ चैनलों ने पूरी दुनिया में तूफ़ान खड़ा कर दिया। सामान्यतः राष्ट्रीय समाचार चैनल दिल्ली से बाहर किसी राज्य में अधिक रुचि नहीं लेते। उनके लिए अरविन्द केजरीवाल को हीरो बनाना आसान दिखता है लेकिन शिवराज सिंह चौहान, नीतीश कुमार अथवा नवीन पटनायक, जो बहुत अधिक चुनौतियों के बीच काम कर रहे हैं, वे दिखायी नहीं देते। दिल्ली तक सिमटे इन चैनलों ने पूरे देश को लेकर जो सोच बना ली है, वे उससे बाहर नहीं निकलते। जब वे गुजरात जाते हैं तो वहाँ दंगों और साम्प्रदायिक ख़बरों को ही सूँघते हैं। इसी प्रकार जब वे बिहार जाते हैं तो उन्हें अपराध के अलावा कुछ नहीं दिखाई देता। जब वे मुम्बई जाते हैं तो उन्हें ग्लैमर, डांस बार और अंडरवर्ल्ड के अलावा कुछ नहीं दिखता। ऐसे माहौल में मोदी और गुजरात की जो ख़बरें मीडिया में आती थीं, वे सभी इसी सोच पर केन्द्रित होती थीं।

जब इन चारों बिन्दुओं को एकसाथ मिलाकर देखते हैं तो लुटियंस दिल्ली को हिला देनेवाली मोदी सुनामी को साफ़ तौर पर समझा और महसूस किया जा सकता है। खिसकते आधार और अपने अस्तित्व को बचाने के लिए ही इन्होंने सम्मान-वापसी और जेएनयू-जैसे विवादों को जन्म दिया। इसी षड्यंत्र के तहत इन्होंने हार्दिक पटेल और कन्हैया कुमार-जैसे मनगढ़ंत हीरो खड़े किये। यदि मीडिया का यह ख़ास वर्ग दूसरे वर्ग पर सत्ताभक्त होने का आरोप लगाता है तो वे किस तर्क से कन्हैया और केजरीवाल के साक्षात्कार लेने पर हर्ष का अनुभव करते हैं। क्या यह किसी से छुपा है कि किस प्रकार एक चैनल को पूरी तरह एक ख़ास पार्टी को समर्पित कर दिया गया और बाद में उस चैनल का संपादक उस नेता द्वारा स्थापित पार्टी में ही शामिल हो गया?

इस पूरे माहौल में एक टेलीविजन चैनल के प्रस्तोता ने 'सेक्युलरिज़्म' व 'राष्ट्रवाद' आज सबसे अधिक दुरुपयोग होनेवाले शब्द कहे। यह अच्छी बात है कि आख़िर हम यह स्वीकार करने लगे हैं कि सेक्युलरिज़्म की आड़ में हमने पिछले कुछ दशकों में बहुत-सी ग़लत बातों का समर्थन किया अथवा उन्हें बढ़ावा दिया। आज देश में सेक्युलरिज़्म की असलियत सामने आ रही है। कोई भी देश कट्टरपंथी मुद्दों को दबा देने से महान् नहीं बनता बल्कि उन्हें सही संदर्भ में चर्चा करके सुलझा लेने से महान् बनता है। इसी प्रकार राष्ट्रवाद को भी सही सन्दर्भ में समझा जाएगा। राष्ट्रवाद उसी आधार पर तर्क पर खडा होगा, जिसकी चर्चा महान् ग्रीक दार्शनिक ने अपनी मृत्यु से कुछ घंटे पहले की थी। ■

नयी पुस्तकें

समाधि का सच

n अश्वी पाठवा

श्री आशुतोष महाराज जी भारतीय आध्यात्मिक ज्ञान-परम्परा की उस धारा का प्रतिनिधित्व करते हैं जिसके महत्त्व और सार्थकता को पूरे विश्व ने हज़ारों वर्ष से स्वीकार किया है। वह न केवल खुद ब्रह्मज्ञानी एवं ब्रह्मनिष्ठ हैं वरन् आध्यात्मिक ज्ञान एवं तपोबल के फलस्वरूप अपने शिष्यों को भी उसमें दीक्षित किया है। आशुतोष महाराज एक उच्च कोटि के योगी हैं। योग की आठवीं एवं अन्तिम सीढ़ी वह है जिसमें योगी साधना में काफ़ी लम्बे समय तक रह सकता है। उस समय आत्मा उसके शरीर को छोड़कर भ्रमण कर सकती है। प्रस्तुत पुस्तक श्री आशुतोष जी महाराज के बारे में है जिनके शिष्यों का दावा है कि वह पिछले कुछ महीनों से लगातार समाधि की उत्कृष्टतम अवस्था में हैं। चिकित्सा जगत् उन्हें क्लीनकली डेड मानता है, लेकिन उनके शिष्यों का मानना है कि महाराज जी निश्चित समय पर अपनी देह में वापस आयेंगे। आशुतोषजी महाराज पर लिखी गई यह पहली पुस्तक है। इससे संसार को यह ज्ञात होगा कि आख़िर वह कौन हैं जिन्होंने पतंजलियोगसूत्र के विभूतिपाद खण्ड को फिर से चर्चा में ला दिया है। यह पुस्तक आशुतोषजी महाराज के साथ-साथ भारत की उस विलुप्त हो रही अलौकिक प्राचीन विद्या को भी सरल भाषा में समझाने का प्रयास करती है।

संदीप देव

पुस्तक-नाम	: आशुतोष महाराज : महायोगी का महारहस्य (जीवनी)
लेखक	: संदीप देव
प्रकाशक	: ब्लूम्सबुरी पब्लिशिंग इण्डिया प्रा. लि. डी.डी.ए. कॉम्प्लेक्स, एल.एस.सी, बिल्डिंग नं. 4, द्वितीय तल, पॉकेट सी-6 एवं 7, वसन्त कुञ्ज, नयी दिल्ली-110070
प्रकाशन-तिथि	: 10 मार्च, 2016
कुल पृष्ठ	: 180
I.S.B.N.-10	: 9385936409
I.S.B.N.-13	: 978-9385936401
मूल्य	: ₹199 (पेपरबैक)

हमारी सुप्त शक्तियों को जगानेवाली कृति

n रतीनाथ योगेश्वर

आज का यथार्थ प्रतिपल बदल रहा है। सामाजिक जीवन के विरोधाभाष गहराते जा रहे हैं। जीवन-मूल्य, जीवन-दृष्टि बदल रही है। ऐसे समय में शाश्वत जीवन-मूल्यों, जीवन-दृष्टियों से हमारा ध्यान हट-सा गया है। इसी विषमताओं-विसंगतियों से भरे समय में हे कौन्तय सुनो के जरिए अमित कुमार दुबे एक ऐसे विमर्श का आह्वान करते हैं जो हमें प्रबुद्ध होने देगा। यहाँ लेखक हमारा ध्यान होने देने की ओर आकर्षित करता है। 'होने देना' और 'बनाना' दो अलग-अलग बातें हैं। 'होने देना' एक ऐसी प्रक्रिया की ओर इंगित है जो हमारे बोध को सहज बनाने में सहायक होती है, न कि मात्र सूचनाओं के सहारे जिये जाने में। जीवन-मूल्यों के ह्रास के इस विकट समय में हे कौन्तय सुनो ज्ञान और विज्ञान का समन्वय कर हमारी सुप्त शक्तियों को जगाने का उपक्रम करती है।

अमित कु.दुबे

पुस्तक	हे कौन्तेय सुनो
लेखक	अमित कुमार दुबे
प्रकाशक	विभा प्रकाशन, 50, चाहचन्द (ज़ीरो रोड), इलाहाबाद-211003
ISBN	978-93-82915-61-4
प्रथम संस्करण	2016
मूल्य	₹ 250 (हार्डकवर)
कुल पृष्ठ	120

एड. (डॉ.) बलराम सिंह
(एम.ए., एलएल.एम.,पीएच.डी. (लॉ),
अधिवक्ता, उच्चतम न्यायालय)

सूचना का अधिकार पहला क़दम

भारतीय संविधान में लोकतांत्रिक गणराज्य की व्यवस्था है। लोकतंत्र के सही संचालन, भ्रष्टाचार पर अंकुश और सरकारों व सरकारी एजेंसियों को जनता के प्रति ज़वाबदेह बनाए रखने के लिए ज़रूरी है कि नागरिकों को पारदर्शी तरीके से सूचनाएँ मिलती रहें। हालांकि व्यवहार में सूचना के साथ बहुत-सी पेचीदग़ियाँ भी जुड़ी होती हैं। एक सूचना कई बार दूसरे सार्वजनिक हितों एवं सरकार के प्रभावी संचालन को प्रभावित कर सकती है। इसलिए लोकतांत्रिक मूल्यों को संरक्षित रखने के लिए इन सबका ध्यान रखना भी अनिवार्य होता है। सरकार लारा सूचना अधिकार क़ानून 2005 के माध्यम से ऐसा तंत्र विकसित किया गया है जिसकी मदद से विभिन्न अधिकारियों द्वारा लोगों को सही सूचना मिलती रहे। इस क़ानून के माध्यम से सरकारी अफ़सरों के कामकाज़ में पारदर्शिता एवं उत्तरदायित्व की भावना को मज़बूत किया गया है। इस संबंध में केन्द्रीय सूचना आयोग एवं राज्य सूचना आयोगों का भी गठन किया गया है।

सूचना अधिकार का अभिप्राय उस सूचना को प्राप्त करने-संबंधी अधिकार से है जो किसी-न-किसी सरकारी अधिकारी के नियंत्रण में है जिसमें किसी कार्य का इस्पेक्शन, दस्तावेज, रिकार्ड, किसी दस्तावेज अथवा रिकार्ड की सत्यापित प्रति प्राप्त करना, किसी सामान का सत्यापित सैम्पल प्राप्त करना, अथवा वीडियो, डिस्क, फ्लॉपी, टेप, कैसेट या किसी अन्य इलेक्ट्रॉनिक या प्रिंट आकार में जानकारी हासिल करना शामिल है। क़ानून के नियमों के अनुसार प्रत्येक नागरिक को सूचना प्राप्त करने का अधिकार है। इसके अलावा क़ानून के तहत सभी सरकारी अधिकारियों एवं विभागों को यह निर्देश दिया गया है कि वे सभी प्रकार के रिकॉर्ड को डिज़िटल आकार में किसी नेटवर्क से जोड़कर लोगों को उपलब्ध कराने की व्यवस्था करें। इसमें वेबसाइट की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। इसके अलावा सरकारी अधिकारियों के लिए यह भी ज़रूरी है कि आम जनता से संबंधित किसी भी महत्त्वपूर्ण नीति का निर्माण करते समय अथवा किसी महत्त्वपूर्ण निर्णय की घोषणा करते समय वे उस संबंध में विस्तृत जानकारी प्रकाशित करें जिसमें यह बताना ज़रूरी है कि वह निर्णय किसलिए लिया गया है। साथ ही सरकारी अधिकारियों के लिए यह भी ज़रूरी है कि वे समय-समय पर स्वयं ही अलग-अलग प्रकार के संचार-माध्यमों के द्वारा, जिसमें इंटरनेट भी शामिल है, जनता से जुड़ी महत्त्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध कराते रहें। इसलिए प्रत्येक सरकारी संस्थान को निर्देश दिया गया है कि वे अपने यहाँ एक सूचना-अधिकारी नियुक्त करें ताकि सूचना माँगनेवाले लोगों को समय पर सूचना प्रदान की जा सके। ऐसी ही नियुक्तियाँ राज्य, ज़िला तथा तहसील स्तर पर भी करने के निर्देश दिये गए हैं।

सूचना अधिकार क़ानून की धारा 6 के अंतर्गत प्रावधान है कि सूचना प्राप्त करने की इच्छा रखनेवाले प्रत्येक व्यक्ति को हिंदी अथवा अंग्रेज़ी या फिर उस क्षेत्र की राजकीय कामकाज़ की भाषा में निर्धारित शुल्क सहित लिखित में प्रार्थना-पत्र संबधित अधिकारी को देना होगा। साथ ही जो सूचना प्राप्त करनी है, उसका पूर्ण ब्यौरा प्रार्थना-पत्र में स्पष्ट तौर पर दिया जाना चाहिये। यदि कोई व्यक्ति मौखिक तौर पर जानकारी प्राप्त करना चाहता है तो संबंधित अधिकारी को साफ निर्देश दिया गया है कि वह उसके निवेदन का लिखित में प्राप्त करने के लिए उसकी आवश्यक मदद करे। किसी भी आवेदक को जानकारी प्राप्त करने के लिए किसी प्रकार का कोई कारण बताने की ज़रूरत नहीं है। संबंधित अधिकारी को यह भी निर्देश है कि वह मांगी गई जानकारी 30 दिन के अंदर उपलब्ध कराये या फिर उस जानकारी न देने का कारण बताये। यदि संबंधित अधिकारी निर्धारित अवधि में जानकारी देने में असमर्थ रहता है, तो उसका अभिप्राय यह होगा कि उसने जानकारी देने से इनकार कर दिया है।

क़ानून की धारा 8 के अंतर्गत यह भी प्रावधान है कि कुछ जानकारी प्रदान करने से सूचना अधिकारी इनकार कर सकता है। ऐसी जानकारी में शामिल है देश की सम्प्रभुता अथवा अखण्डता से संबंधित जानकारी, न्यायालय द्वारा जानकारी देने पर रोक जिसके सार्वजनिक करने से न्यायालय की अवमानना होती हो, संसद अथवा विधानसभा के विशेषाधिकारों का हनन होता हो, दूसरे देश की सरकार से मिली गुप्त जानकारी, किसी व्यक्ति की सुरक्षा से संबंधित जानकारी, आदि।

क़ानून की धारा 9 के तहत संबंधित अधिकारी वह जानकारी देने से भी इनकार कर सकता है जिससे कॉपीराइट क़ानून का उल्लंघन होता हो। हालांकि धारा 10 के अनुसार जानकारी का वह हिस्सा उपलब्ध कराया जा सकता है जिसे उपलब्ध कराने पर क़ानून के तहत रोक न हो। ■

आचार्य सलिल
ज्योतिषाचार्य

डॉ. हेडगेवार की जन्म-कुण्डली : एक विश्लेषण

आजकल लगभग सभी समाचार-पत्रों और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर चर्चा का दौर जारी है। नवयुवकों में संघ को लेकर बहस चलती रहती है और हर समय वर्तमान सरसंघचालक डॉ. मोहनराव भागवत चर्चा के केन्द्रबिन्दु में रहते हैं। संघ माने भागवतजी। जबकि इन बातों के सूत्रधार संघ-संस्थापक **डॉ. केशवराव बळिराम हेडगेवार** थे।

कौन थे डॉ.हेडगेवार ? यह जानने के लिए हमें इतिहास के पन्नों में जाकर उन्हें खोजना पडेगा या संघ के किसी कार्यालय में जाकर उनके बारे में पढ़ना पडेगा। क्योंकि इतिहास की किताबों में उनके बारे में बहुत कुछ नहीं मिलेगा। हाँ, संघ के संग्रहालयों में बहुत कुछ जानकारी मिल जायेगी। भारत के इतिहासकारों ने डॉ. हेडगेवार को महत्त्व नहीं दिया। यह उस दौर की घटना है जब देश अंग्रेज़ों से आज़ादी के लिए लड़ रहा था और काँग्रेस पार्टी उसका नेतृत्व कर रही थी। बड़े-बड़े नेताओं के बीच एक राष्ट्रभक्त डॉ. हेडगेवार भी उस संघर्ष में शामिल थे। वह काँग्रेस के एक ऐसे कार्यकर्ता थे जो उस दौर के लगभग सभी वरिष्ठ नेताओं के सम्पर्क में थे। राष्ट्र के प्रति उनके अपने कुछ सामाजिक सपने थे जो उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के माध्यम से पूरा करने का बीड़ा उठाया।

इस देश में महात्मा गाँधी, जवाहरलाल नेहरू, इन्दिरा गाँधी की जन्म-पत्रिकाओं पर बहुत चर्चा हुई, किन्तु उस दौर के स्वाधीनता सेनानियों को देश ने याद तो किया, पर उनकी जन्म-पत्रिकाओं की चर्चा नहीं की गई और न ही कोई शोध हुए। फिर डॉ. हेडगेवार को कौन याद करता, क्योंकि वह आज़ादी से पहले ही शरीर छोड़ चुके थे।

काँग्रेस के कट्टर कार्यकर्ता डॉ. हेडगेवार लोकमान्य टिळक के भक्त थे। टिळक की मृत्यु के बाद हुई घटनाओं के बाद उनका काँग्रेस पार्टी से मोहभंग हो गया और वह काँग्रेस पार्टी को छोड़कर कुछ नया करने की सोचने लगे।

दिनांक 27 सितम्बर, 1925 (विजयदशमी) के दिन डॉ. हेडगेवार ने संघ की नींव रखी। डॉ. हेडगेवार को स्पष्ट दिख रहा था कि आज़ादी के बाद देश में क्या होगा और वही हुआ। आज़ादी के बाद देश जाति-पाँति के बन्धन में बँध गया जो जो तरक्की होनी चाहिए थी, वह नहीं हुई और समस्याओं की गठरी बड़ी होती गयी।

भगवा ध्वज डॉ. हेडगेवार की पसन्द थी और वह हिंदुत्व को लेकर चिन्ताग्रस्त थे। संघ की स्थापना का मतलब यही था कि संघ के कार्यकर्ता भगवा ध्वज और हिंदुत्व की रक्षा करेंगे और सामाजिक जीवन में समरसता को बढ़ाएँगे। और इसलिए वर्तमान समय में डॉ. हेडगेवार की जन्म-कुण्डली का विश्लेषण करना आवश्यक है। उनको महात्मा गाँधी और जवाहरलाल नेहरू की तरह समझना आवश्यक है क्योंकि डॉ. हेडगेवार उन नेताओं में थे जो देश के भविष्य के बारे में सोचते थे।
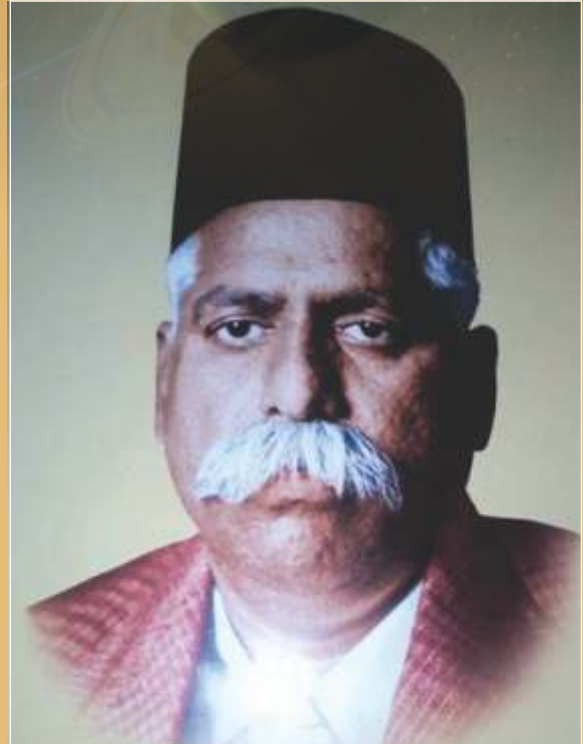
डॉ. हेडगेवार का जन्म हिंदू नववर्ष के प्रथम दिन यानि चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, विक्रम संवत् 1946, तदनुसार दिनांक 01 अप्रैल, 1889 को प्रातः 01:13 बजे नागपुर शहर में हुआ था।

हेडगेवार का जन्म रेवती नक्षत्र के द्वितीय चरण में हुआ था। रेवती का अर्थ है धनाढ्य और प्रतिष्ठित। सभी अभावों का नाश, प्रचुर धन-सम्पत्ति। ईश्वर ने उनके पूर्वजन्म के कर्मों के अनुसार अमृत सरीखा धन दिया। महात्मा गाँधी के बाद डॉ. हेडगेवार का नाम इस देश में शुभ परिवर्तन करनेवाला मानना ग़लत नहीं होगा। बृहस्पति का राशिपति होना और नक्षत्र के स्वामी बुध को विष्णु कहा गया है। रेवती नक्षत्र में पैदा व्यक्ति अपने अधूरे कार्य को अवश्य पूरा करता है चाहे उसके लिए उसे कई जन्म क्यों न लेना पड़े। यह रहस्य की बात है। डॉ. हेडगेवार में परिस्थिति के तथ्यपरक आकलन की क्षमता और उसके

अनुकूल कार्य करने की योग्यता थी। वे एक संवेदनशील व्यक्ति थे। लोगों को स्नेही मार्गदर्शन करना उनकी विशेषता थी। वे समाज का कल्याण चाहते थे। उनमें सम्मोहन की क्षमता थी। डॉ. हेडगेवार जी का जन्म बुध की महादशा, चन्द्र की अंतर्दशा और केतु की प्रत्यंतर दशा में हुआ था। उनके जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाएँ एक दृष्टि में :

बुध की महादशा में बाल्यकाल बीता : डॉ. हेडगेवार का बचपन वेदपाठी ब्राह्मण परिवार में बीता। परिवार का भरण-पोषण पौरोहित्य कर्म से होता था। डॉ. हेडगेवार के पिता को ज्योतिष का ज्ञान था, जिसका पूरा असर डॉ. हेडगेवार पर था। सन् 1889 से 1905 तक इनपर केतु का असर था। 1905 में शुक्र की महदशा शुरू हुई जो 14 फरवरी, 1925 तक चली और इसी महादशा में उनके जीवन में काफ़ी उतार-चढ़ाव आया।

शुक्र की महादशा (1905-1925):

1910 : शुक्र की महादशा और चन्द्र की अंतर्दशा। मेडिकल की पढ़ाई के लिए उन्होंने कलकत्ता के नेशनल मेडिकल कॉलेज़ में प्रवेश लिया। पढ़ाई के दौरान बंगाल के क्रान्तिकारियों के सम्पर्क में आये। पढ़ाई के साथ-साथ वह पुलिन बिहारी दास के करीबी बने, क्रान्तिकारियों की टोली में अहम स्थान बनाया। संघ में टोली की भूमिका यहीं से आयी।

1915 : शुक्र की महादशा में राहु की अंतर्दशा। मेडिकल की शिक्षा पूर्ण की। उस समय मेडिकल की शिक्षा 5 वर्षों की होती थी।

1915-1922 : शुक्र की महादशा में क्रमशः गुरु, शुक्र और शनि की अंतर्दशा। मेडिकल की शिक्षा पूर्ण करने के पश्चात् डॉ. हेडगेवार नागपुर लौटे और नौकरी या प्रैक्टिस न करने का निर्णय लिया। इस दौरान देश पर प्रथम विश्वयुद्ध के बादल मंडरा रहे थे। डॉ. हेडगेवार अंग्रेज़ों के विरुद्ध क्रान्तिकारी योजनाएँ बनाने में जुट गये। उनके भाषण उत्तेजक और देशप्रेम से भरे हुए होते थे। इस समय डॉ. हेडगेवार काँग्रेस पार्टी के सदस्य थे। लोकमान्य टिळक उनके आदर्श थे।

सन् 1919 में शुक्र की महादशा में शनि की अंतर्दशा चल रही थी, जब जालियाँवाला बाग काण्ड हो गया और कुछ समय बाद ख़िलाफत आन्दोलन भी शुरू हो गया।

डॉ. हेडगेवार 1915-'20 के काल में नागपुर में रहते हुए राष्ट्रीय आन्दोलनों में सक्रिय रहे। काँग्रेस के नागपुर-अधिवेशन में वह काफ़ी सक्रिय थे। 01 अगस्त, 1920 को लोकमान्य टिळक का देहान्त हो गया। इसी दशा में डॉ. हेडगेवार को राजद्रोह मामले में 1 वर्ष के सश्रम कारावास की सजा हुई। इन घटनाओं से डॉ. हेडगेवार में बहुत परिवर्तन आया। इस दौरान उनका झुकाव हिंदू महासभा की ओर हुआ, लेकिन उनकी इच्छा कुछ नया करने की थी, क्योंकि काँग्रेस पार्टी में उनकी आवाज़ नहीं सुनी जा रही थी। सूर्य की महादशा की शुरूआत हो चुकी थी। सूर्य भाग्येश है और अष्टमेश चन्द्र के साथ चौथे घर में बैठा है। नवांश में सूर्य गुरु की राशि में बैठा है। गुरु नवांश कुण्डली में द्वितीयेश और पंचमेश है।

डॉ. हेडगेवार ने विजयदशमी के दिन 27 सितम्बर, 1925 को कुछ युवा लोगों की बैठक में उन्होंने कहा कि 'आज हमलोग संघ प्रारम्भ कर रहे हैं।' उस समय सूर्य की महादशा में चन्द्र की ही अंतर्दशा

1 मंगल शुक्र; 2; 3 राहु; 4 शनि (वक्री); 5; 6; 7; 8; 9 गुरु केतु; 10; 11 बुध; 12 चन्द्र, सूर्य

डॉ. हेडगेवार जी की लग्न-कुण्डली

1; 2 राहु; 3 बुध, मंगल; 4 मंगल; 5 गुरु; 6 गुरु; 7; 8 शुक्र, केतु; 9 सूर्य; 10 शनि (वक्री) चन्द्र; 11; 12

डॉ. हेडगेवार जी की नवांश-कुण्डली

जन्म : 01 अप्रैल, 1889 (चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, 1946 वि.)

समय : प्रातः 01:13 बजे, स्थान : नागपुर

महादशाएँ :

बुध	01 अप्रैल, 1889 से 13 फरवरी, 1898 तक
केतु	13 फरवरी, 1898 से 14 फरवरी, 1905 तक
शुक्र	14 फरवरी, 1905 से 14 फरवरी, 1925 तक
सूर्य	14 फरवरी, 1925 से 14 फरवरी, 1931 तक
चन्द्र	14 फरवरी, 1931 से 14 फरवरी, 1941 तक

चल रही थी।

संघ की कार्यप्रणाली : प्रतिदिन की शाखा, जिसके माध्यम से स्वयंसेवकों को एकत्रित किया जा सके, संघ की पहली विशेषता थी। व्यायाम से इसकी शुरूआत की गई जो आज भी जारी है। किसी भी सामाजिक कार्य के लिए कड़ी मेहनत के साथ धन की भी आवश्यकता होती है। धन एकत्रित करने के लिए डॉ. हेडगेवार ने भगवा ध्वज को अपना गुरु कहा और और प्रतिवर्ष गुरु पूर्णिमा के दिन इसका पूजन कर दक्षिणा-समर्पण को धनार्जन का स्त्रोत बनाया। संघ में 6 उत्सवों को प्रमुखता दी गयी। प्रतिज्ञा-पद्धति की शुरूआत। परिवार-भाव पर ज़ोर दिया गया। यह सब सूर्य की महादशा का परिणाम था। दिनांक 10 नवम्बर, 1929 को डॉ. हेडगेवार की संघ के आद्य सरसंघचालक के रूप में घोषणा हुई। यह दौर सत्याग्रह का था। 01 जुलाई, 1930 को डॉ. हेडगेवार को नौ मास के कारावास की सजा हुई। उस समय सूर्य की महादशा में शुक्र की अंतर्दशा चल रही थी जो बन्धन-योग दर्शाती है।

चन्द्रमा की महादशा : सन् 1931 से 1941 तक का समय चन्द्रमा की महादशा का दौर था। डॉ. हेडगेवार में संगठन-क्षमता अद्‌भुत थी। वह संघ के स्वयंसिद्ध नेता थे। गुरु के सिंह नवांश में होने के कारण डॉ. हेडगेवार के उस दौर के सभी वरिष्ठ नेताओं से घनिष्ठ संबंध थे। पर वैचारिक मतभेद थे। 1934 में महात्मा गाँधी संघ का शीत शिविर देखने आये। उस समय चन्द्र की महादशा में गुरु की अंतर्दशा चल रही थी।

डॉ. हेडगेवार के अनुसार संघ न ही राजनैतिक, न ही साम्प्रदायिक संस्था है, बल्कि वह तो राष्ट्रीय संगठन है। डॉ. हेडगेवार ने 15 वर्षों के संघ-जीवन में कभी विश्राम नहीं किया। दिनांक 21 जून, 1940 को केवल 51 वर्ष, 2 मास और 20 दिन में शरीर ने साथ छोड़ दिया। उस समय चन्द्र की महादशा में सूर्य की अंतर्दशा चल रही थी। सूर्य स्वास्थ्य के लिए बाधक था। चन्द्रमा फेफड़ों में संक्रमण का कारक था। डॉ. हेडगेवार चले गए, लेकिन आत्मा अमर है। कुछ आत्माएँ होती ही इसलिए हैं कि वो अपने मानव-जन्म में रहते हुए समाज में कुछ ऐसा कर जायें कि उनको भूलना असम्भव हो जाये। उनमें से एक थे डॉ. हेडगेवार जिनकी कुण्डली से साफ नज़र आता है कि उनके द्वारा बोया गया बीज अब वृक्ष का रूप ले चुका है। संघ की कुण्डली की चर्चा किसी अन्य लेख में करूँगा।

■

चैत्र नवरात्रि में करें माँ भगवती की आराधना

वैसे तो साल में चैत्र, आषाढ़, आश्विन और माघ महीनों में चार बार नवरात्र आते हैं, लेकिन चैत्र और आश्विन माह की शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक चलनेवाले नवरात्र ही ज्यादा लोकप्रिय हैं जिन्हें पूरे देश में व्यापक स्तर पर माँ भगवती की आराधना के लिए श्रेष्ठ माना जाता है। शाक्त पुराणों में चैत्र नवरात्रों का समय बहुत ही भाग्यशाली बताया गया है। इसका एक कारण यह भी है कि प्रकृति में इस समय एक नये जीवन का, एक नयी उम्मीद का बीज अंकुरित होने लगता है। जनमानस में भी एक नयी ऊर्जा का संचार हो रहा होता है। लहलहाती फसलों से उम्मीदें जुड़ी होती हैं। ऐसे समय में माँ भगवती की पूजा कर उनसे सुख-समृद्धि की कामना करना बहुत शुभ माना गया है। इस समय वसन्त ऋतु अपने चरम पर होती है, इसलिये इसे वासन्ती नवरात्र भी कहा जाता है। शारदीय नवरात्र के दौरान जहाँ मां के नौ रूपों की पूजा की जाती है, वहीं चैत्र नवरात्रों के दौरान माँ की पूजा के साथ-साथ अपने कुलदेवी-देवताओं की पूजा का भी विधान है जिससे ये नवरात्र विशेष हो जाते हैं।

9 दिन में करें मां के नौ रूपों की पूजा

अपने कुलदेवी-देवता की पूजा के साथ-साथ नवरात्र के पहले दिन कलश-स्थापना अर्थात् घट-स्थापना के साथ ही नवरात्र की शुरूआत होती है। पहले दिन माँ शैलपुत्री तो दूसरे दिन माँ ब्रह्मचारिणी की पूजा की जाती है। तीसरे दिन माँ चंद्रघंटा, चौथे दिन माँ कृष्माण्डा तो पाँचवें दिन स्कन्दमाता की पूजा होती है। छठे दिन माँ कात्यायनी एवं सातवें दिन माँ कालरात्रि की पूजा की जाती है। आठवें दिन महागौरी तो नवें दिन माँ सिद्धिदात्री की पूजा की जाती है।

कैसे करें कलश-स्थापना

कलश-स्थापना के लिए प्रतिपदा के दिन स्नानादि कर पूजा-स्थल को शुद्ध कर लें। इसके बाद लकड़ी के एक फट्टे पर लाल रंग का वस्त्र बिछायें। वस्त्र पर गणेश जी का स्मरण करते हुए थोड़े चावल रखें। अब मिट्टी की वेदी बनाकर उस पर जौ बोयें, फिर इस पर जल से भरा मिट्टी, सोने या तांबे का कलश विधिवत् स्थापित करें। कलश पर रोली से स्वास्तिक या ॐ बनायें। कलश के मुख पर रक्षासूत्र भी बाँधना चाहिये, साथ ही कलश में सुपारी, सिक्का डालकर आम या अशोक के पत्ते रखने चाहिये। अब कलश के मुख को ढक्कन से ढककर इसे चावल से भर देना चाहिये। एक नारियल लेकर उस पर चुनरी लपेटें व रक्षासूत्र से बाँध दें। इसे कलश के ढक्कन पर रखते हुए सभी देवी-देवताओं का आह्वान करें और अंत में दीप जलाकर कलश की पूजा करें व फूल व मिठाइयाँ भी चढ़ा सकते हैं। इस घट पर कुलदेवी की प्रतिमा भी स्थापित की जा सकती है। कलश की पूजा के बाद मार्कण्डेयपुराणोक्त श्रीदुर्गासप्तशती का पाठ भी करना चाहिये।

काला धन : नियंत्रण नहीं है आसान

पनामा-पेपर्स और भ्रष्टाचार : भयावह समस्या की छोटी-सी झलक

■ जी.डी. महेश्वरी

खोजी पत्रकारों ने 'पनामा-पेपर्स' का खुलासा कर दुनियाभर में भ्रष्टाचार-तंत्र की व्यापक और भयावह चुनौतियों को सामने ला खड़ा किया है। कालाधन, मनी-लन्डरिंग (काले धन को वैध बनाना) और भ्रष्टाचार– ग़ैरक़ानूनी तरीक़े से धन अर्जित और संचयित करने के अलग-अलग तरीक़े हैं। ज़ुरिसडिक्शन यानी अधिकार क्षेत्र के दायरे, क़ानून और नियंत्रण के संगठित तौर-तरीक़े, दरअसल इस भयावह तंत्र को काबू में करने के बज़ाय, इनपर काबू पाये जाने के बाधक रहे हैं। यही नहीं, इन दायरों ने किसी भी ज़ाँच एज़ेंसी को वैश्विक भ्रष्टाचार के मामलो में तेज़ी से, गहराई से और व्यापक तौर पर जाँच की दिशा में बड़ी रुकावट बनने और आरोपियों को पूरी सहायता देने का काम किया है।

काला धन, मनी-लन्डरिंग और भ्रष्टाचार को आम तौर पर आर्थिक अपराध माना जाता रहा है, लेकिन हक़ीक़त में ये मानवता के ख़िलाफ़ गम्भीर अपराध हैं। सत्ता की ताक़त से लबरेज़ राजनेता और नौकरशाह, बेहिसाब पैसे के लालच में अपराध का साथ देते हैं और अपराधियों के साथी बन जाते हैं। राजनेता, नौकरशाह और अपराधियों की यह त्रिमूर्ति न्यायप्रिय, सामान और बराबरी के क़ानून के बनने और उसके क्रियान्वन में हर अड़चन खड़ा करती है। दरअसल ऐसा करके मुट्ठीभर लोगों की यह संगठित त्रिमूर्ति अधिकतर आबादी को संसाधन और अवसर का समान अवसर मिलने से वंचित करती है। यह ग़रीबी, बेरोज़गारी, आतंक, नारकोटिक्स-जैसी तमाम समस्याओं की जड़ बनती है।

मार्च, 1993 में मुंबई बम धमाके के बाद जुलाई 1993 में वोहरा समिति का गठन किया गया। सरकारी जाँच एज़ेंसियों के पास सूचनाओं के आधार पर इस समिति ने क्राइम सिंडिकेट, नौकरशाह और राजनेताओं की मिलीभगत और हिस्सेदारी से काम कर रहे तंत्र की पुष्टि की और राष्ट्रविरोधी गतिविधियों में

इनके शामिल होने की बात कही। ये इस ख़तरनाक और देशद्रोही तंत्र और उसके हिस्सेदारों की तरफ़ आधिकारिक पुष्टि थी। यद्यपि इसके बाद की सरकारों ने टुकड़ों में वोहरा समिति की सुझाव पर अमल किया है, तथापि इस सिंडिकेट को रोकने और उसे जड़ से मिटाने की दिशा में यह अपर्याप्त है। राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी, शक्ति और पैसे का अथाह लालच और इसे पाने के लिए साम-दाम-दण्ड-भेद के तमाम रास्ते अपनाए जाने,ऊँचे ओहदे और पदों पर बैठे हुए इनके पैरोकार और हिस्सेदारों और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सामंजस्य की कमी के कारण इस सिंडिकेट पर न तो अबतक चौतरफ़ा हमला किया जा सका है और न ही इसे जड़ से मिटाने के लिए कारगर क़ानून बनाया जा सका है।

हालाँकि दुनिया के अधिकतर देश भ्रष्टाचार, अपराध और देशद्रोह की इस भयानक बीमारी से परेशान हैं, लेकिन कुछ देशों ने टैक्स हेवन बनकर न सिर्फ़ इन अपराधियों का नाम छुपाने का काम किया है, बल्कि इस रोग को अपने स्वार्थ के लिए बढ़ावा भी दिया है। दरअसल भ्रष्टाचार के ये प्रमोटर देश कल तक धन, मनी लन्डरिंग और भ्रष्टाचार के संगीन अपराधों के ब्राण्ड एम्बेसडर रहे हैं। अंतरराष्ट्रीय पटल पर ये देश शेष दुनिया के लिए चिन्ता का कारण रहे हैं। 9/11 के हमलों के बाद अमेरिका का इस ख़तरनाक सच के साथ सामना हुआ। आम तौर पर पूरी दुनिया में सबसे सुरक्षित माने जानेवाले अमेरिकी नागरिक न सिर्फ़ अपने घर पर बल्कि दुनिया के अलग-अलग कोने में इस भयावह ख़तरे से रूबरू हुए। इसके बाद से इस अपराध-माफिया के आतंक को फैलाने के लिए धन देने के क्षमता और इससे विश्व-शान्ति पर ख़तरे की तरफ़ विकसित देशों का ध्यान गया। इससे नयी सोच का सृजन हुआ, आतंक और आतंकी फंडिंग और इसके खिलाफ़ साझी लड़ाई की तरफ़ दुनिया की नज़र गयी।

दुनिया के वो देश, जो इस मुद्दे पर गम्भीर हैं, संयुक्त राष्ट्र समेत हर प्लेटफॉर्म पर अब इसके ख़िलाफ साझी रणनीति की बात कर रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र महासभा ने इस संबंध में राजनीतिक प्रस्ताव को अपनाया और ग्लोबल प्रोग्राम ऑफ़एक्शन को मंजूरी दी। इसमें मनी लन्डरिंग के ख़िलाफ़ विधेयक बनाए जाने और योजना पर अमल किये जाने की बात कही गयी। फाइनेंसियल एक्शन टास्क फोर्स

भारत काला धन, मनी-लन्डरिंग और भ्रष्टाचार से पीड़ित रहा है। लगभग आठ शती की गुलामी और लूटपाट के बाद जब देश आज़ाद हुआ, तब कम से कम अगले साल तक केंद्र, राज्य, जिला परिषद् और पंचायत-स्तर पर ईमानदार, प्रतिबद्ध और राष्ट्रभक्त प्रशासन की ज़रूरत थी, जिससे लूटपाट, भूख, ग़रीबी, अशिक्षा, अज्ञानता और सामन्ती तौर-तरीकों को ख़त्म किया जा सके। देश को रामराज्य की ज़रूरत थी, लेकिन दुर्भाग्य से आज़ादी के 70 साल में अधिकतर समय देश राजनेताओं और नौकरशाह तथा क्राइम सिंडिकेट और माफिया संगठन के बीच मिलीभगत का शिकार रहा है।

और आर्गनाइज़ेशन ऑफ़ इकोनोमिक को-ऑपरेशन एण्ड डेवलपमेंट ने कार्यक्षेत्रों और कार्याधिकारों के बीच सामंजस्य के लिए विधेयकों, क़ानूनों, एज़ेंसियों और ऑपरेशन के तौर-तरीक़ों के बदलाव लाए जाने की बात कही है। इससे मनी-लन्डरिंग और काले धन को ज़रिया बनानेवाले सिंडिकेट अलग-अलग कार्यक्षेत्र का फ़ायदा नहीं उठा सकेंगे और समन्वय बनाकर उनके ख़िलाफ़ कार्रवाई की जा सकेगी। भारत हर बड़े अंतरराष्ट्रीय मुहीम का हिस्स्सेदार रहा है और इस वज़ह से इस दिशा में कई क़दम उठाए गए हैं।

भारत काला धन, मनी-लन्डरिंग और भ्रष्टाचार से पीड़ित रहा है। लगभग आठ शती की गुलामी और लूटपाट के बाद जब देश आज़ाद हुआ, तब कम से कम अगले साल तक केंद्र, राज्य, जिला परिषद् और पंचायत-स्तर पर ईमानदार, प्रतिबद्ध और राष्ट्रभक्त प्रशासन की ज़रूरत थी, जिससे लूटपाट, भूख, ग़रीबी, अशिक्षा, अज्ञानता और सामन्ती तौर-तरीकों को ख़त्म किया जा सके। देश को रामराज्य की ज़रूरत थी, लेकिन दुर्भाग्य से आज़ादी के 70 साल में अधिकतर समय देश राजनेताओं और नौकरशाह तथा क्राइम सिंडिकेट और माफिया संगठन के बीच मिलीभगत का शिकार रहा है। लोकतंत्र को स्वार्थी लोगों ने बूथ लूटकर, वोटर को घूस देकर, झूठे वायदे करकर, जाति-धर्म के नाम पर बाँटकर और पैसे और ताक़त का इस्तेमाल करके अपना बंधुआ मज़दूर बना लिया। काले धन और भ्रष्टाचार ने इन बीमारियों को भारतीय के सिस्टम में प्रवेश करने और पनपने में मदद दी है। यदि भारत को और गर्त में जाने से रोकना है और रामराज्य को बहाल करना है, तो न सिर्फ़ भ्रष्टाचार के डीएनए को बेनक़ाब करने की ज़रूरत है, बल्कि बहुआयामी क़ानून बनाए जाने और उसे क्रियान्वित करने की ज़रूरत है। भारतीय अर्थव्यवस्था में भ्रष्टाचार का होना, काले धन का जमा होना और इसका निवेश होना हमेशा से नीति-निर्धारकों, सरकार, न्यायालय और क़ानून के लिए चुनौती का विषय रहा है। यह भी सच है कि अबतक की सरकारों की घोषणाओं, टैक्स-एजेंसियों के तमाम क़दमों, अदालतों में सुनवाई और फ़ैसलों के बावजूद न तो इसे ख़त्म किया जा सका है और न ही इसपर काबू किया जा सका है।

ऐसे में सवाल यह उठता है कि आख़िर कहाँ कमी रह गई है और आगे क्या किए जाने की ज़रूरत है। इस दिशा में अबतक जो भी क़दम उठाए गए हैं, वो कर-केंद्रित रहे हैं और पोस्ट जनरेशन यानी काले धन के सृजन के बाद के क़दम रहे हैं और अबतक पूरा ध्यान मांग की तरफ़ और अधिकारियों तक सीमित रहा है। सप्लाई या आपूर्ति की ओर, सृजन से पहले रोक की ओर, इनके जमा किए जाने और इसके प्रसार की ओर और अधिकारियों से आगे बढ़कर तह की दिशा में जाने की या तो क़ोशिश नहीं हुई है या फिर न के बराबर क़ोशिश हुई है। इस दिशा में क्या क्या क़दम उठाए जा सकते हैं, इस बारे में हम आगे की कड़ी में विस्तार से चर्चा करेंगे। हम आगे उन सभी उपायों पर ग़ौर करेंगे जिससे न सिर्फ़ व्यवस्था दुरुस्त की जा सके, बल्कि काले धन और भ्रष्टाचार को जड़ से मिटाया जा सके। इसके लिए बिना रुके, बिना झुके लगातार एक प्रभावी और असरदार सोच और इसके क्रियान्वयन की ज़रूरत है– असामान्य स्थितियों में असामान्य फ़ैसले की ज़रूरत होती है और ऐसे ही नेता को इतिहास स्टेट्समैन के तौर पर याद करता है। ■

गुंजन अग्रवाल

क्या श्रीराम पौने दो करोड़ वर्ष पूर्व हुए थे ?

भारतीय इतिहासकारों का एक बड़ा वर्ग (दामपंथी इतिहासकारों का) राम को सन्देह और घृणा की दृष्टि से देखते हुए उनकी ऐतिहासिकता पर प्रश्न-चिह्न लगाता है। रामभक्त राष्ट्रवादी इतिहासकारोंका वर्ग भी राम के वास्तविक कालखण्ड से युगों दूर, पाँच-सात हजार वर्ष ईसा पूर्व के आस-पास नाचता रहा है। यद्यपि कुछेक ने पौराणिक परम्परा के आधार पर राम के वास्तविक कालखण्ड तक पहुँचने का साहस अवश्य जुटाया है, तथापि ऐसे इतिहासकार सदैव उपेक्षित ही रहे हैं और उनकी आवाज नक्कारखाने में तूती सिद्ध हुई है।

श्रीराम त्रेतायुग में अवतरित हुए थे, यह सर्वमान्य तथ्य है। त्रेतायुग में स्वयं नारायण ने दशरथ के यहाँ 'राम' नाम से अवतार लिया था। किन्तु श्रीराम त्रेतायुग में ही नहीं, बल्कि 24वें त्रेतायुग में जन्मे थे–

'चतुर्विंशे युगे रामोवसिष्ठेन पुराधसा।
सप्तमो रावणस्यार्थे जज्ञे दशरथात्मजः॥'

–वायुपुराण, 98.72; मत्स्यमहापुराण, 47.245

'चतुर्विंशयुगे चापि विश्वामित्रपुरः सरः।
रामो दशरथस्याथ पुत्रः पद्मायतेक्षणः॥'

–हरिवंशपुराण, 1.41.121; ब्रह्माण्डमहापुराण, 104.11

'अस्मिन्मन्वन्तरेऽतीतेचतुर्विंशतिकेयुगे ।
भवतीर्यरघुकुलगृहे दशरथस्यच ॥'

–पद्ममहापुराण, 8.66-67

एकमात्र महर्षि वेदव्यासकृत **अध्यात्मरामायण** (सुन्दरकाण्ड, 1.48) में उल्लेख है कि श्रीराम का जन्म 28वें चतुर्युग के त्रेता में हुआ था–

'पुराहं ब्रह्मणा प्रोक्ता ह्यषविंशतिपर्यये।
त्रेतायुगे दाशरथि रामो नारायणोऽव्ययः॥'

किन्तु, विष्णुमहापुराण (3.3.18) में श्रीराम को स्पष्टतः 24वें त्रेतायुग में ही बताया गया है। विष्णुमहापुराण में 7वें वैवस्वत मन्वन्तर के गत 27 चतुर्युगों के एवं वर्तमान 28वें चतुर्युग के क्रमानुसार 28

वेदव्यासों के नाम गिनाए गए हैं। इसमें स्पष्ट रूप से अंकित है कि 24वें त्रेतायुग में हुए (24वें) वेदव्यास भृगुवंशीय ऋक्ष थे जो बाद में वाल्मीकि कहलाये–

'ऋक्षोऽभुद्भार्गवस्तस्माद्वाल्मीर्किऽभिधीयते ।
तस्मादस्मत्पिता शक्तिर्व्यासस्मादहं मुने॥'

चूँकि रामकथा के अनुसार महर्षि वाल्मीकि और श्रीराम समकालीन थे और देवी सीता ने महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में ही लव और कुश को जन्म दिया था, अतः विष्णुमहापुराण में संकलित वेदव्यासों की सूची से भी यह सिद्ध हो जाता है कि श्रीराम 24वें त्रेतायुग में अवतीर्ण हुए थे, 28वें में नहीं। महाभारत (शान्तिपर्व, 339.85) के अनुसार त्रेता और द्वापर की सन्धि में श्रीरामावतार सिद्ध होता है–

'संध्यंशे समनुप्राप्ते त्रेतायां द्वापरस्य च ।
अहं दाशरथी रामोभविष्यामि जगत्पतिः ॥'

इस दृष्टि से विक्रम संवत् 2073 और ईसवी सन् 2016 तक श्रीरामजन्म के 1 करोड़ 81 लाख 49 हज़ार और 118 वर्ष होते हैं–

श्रीरामजन्मपर्यंत 24वाँ त्रेता, द्वापर, कलियुग	12,96,000 वर्ष
25, 26, 27वाँ चतुर्युग (3×43,20,000 वर्ष=)	1,29,60,000 वर्ष
28वाँ सत्ययुग, त्रेता, द्वापर	38,88,000 वर्ष
ईसवी सन् 2016 तक 28वाँ कलियुग (3102+2016)	5,118 वर्ष
	कुल 1,81,49,118 वर्ष

सन् 2002 में अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी 'नासा' के एक खोजी उपग्रह ने रामेश्वम् से लंका तक विस्तृत 48 किमी.(30 मील) लंबे श्रीरामसेतु के चित्र लेकर सेतु निर्माण-काल 17,50,000 वर्ष पूर्व निर्धारित किया है। इस गणना से श्रीराम का समय अध्यात्मरामायण के मतानुसार 28वें त्रेतायुग के तृतीय चरण में सिद्ध हो जाता है। किन्तु केवल इसी एकमात्र साक्ष्य के आधार पर श्रीराम को 28वें त्रेतायुग में नहीं घुसेड़ा जा सकता, क्योंकि एक तो पुरातात्त्विक सामग्रियों का तिथि-निर्धारण, और वही भी लाखों-करोड़ों वर्ष प्राचीन वस्तु का, अत्यन्त टेढ़ा कार्य है, इसमें भूल की पूरी-पूरी सम्भावना रहती है, यह बात प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. देवसहाय त्रिवेद ने अपने एक आलेख 'कार्बन से तिथि-निर्धारण' में स्वयं स्वीकार किया है। दूसरा, श्रीराम को 28वें त्रेतायुग में रखने पर सम्पूर्ण पुराण-साहित्य पर एक बड़ा प्रश्न-चिह्न लग सकता है, क्योंकि सारे पुराणों में प्रतिपाद्य विषय प्राचीन भारतीय इतिहास का एक संयत लेखा प्रस्तुत करते हैं और इनके आधार पर भगवान् श्रीकृष्ण, महाभारत-युद्ध और भगवान् बुद्ध के काल सहित अनेकानेक ऐतिहासिक गुत्थियों को सुलझाया जा चुका है। अतः हमें श्रीराम के कालखण्ड के लिए 'नासा' द्वारा निर्धारित तिथि 17,50,000 वर्ष पूर्व को न अपनाकर राम का समय 1,81,49,118 वर्ष पूर्व को अपनाना चाहिये। इतना तो अवश्य ही कहा जायेगा कि उपग्रह द्वारा खींचे गए चित्र, और उसके द्वारा निर्धारित राम के काल-निर्धारण ने राष्ट्रवादी इतिहासकारों को प्राचीन भारतीय इतिहास के काल-निर्धारण में अधिकाधिक अनुसन्धान के प्रति प्रेरित तो किया ही है, साथ ही उन दामपंथी इतिहासकारों को करारा तमाचा भी लगाया है जो भारतीय इतिहास को चार-पाँच हज़ार वर्ष के भीतर ठूँसते रहे हैं और श्रीराम को काल्पनिक पुरुष मानते हैं।

श्रीराम को 24वें त्रेतायुग में रखने का पुरातात्त्विक आधार भी प्राप्त है। वाल्मीकीयरामायण (सुन्दरकाण्ड) में लंका में पाये जानेवाले 4 दाँतोंवाले हाथियों का उल्लेख है–

'वाजिहेषितसंघुष्टं नादितं भूषणैस्तथा।
रथैर्यानैर्विमानैश्च तथा हयगजैः शुभैः॥
वारणैश्च चतुर्दन्तैः श्वेताभ्रनिचयोपमः।
भूषितै रुचिरलारं मत्तैश्च मृगपक्षिभिः ॥'

'Encarta Encyclopædia' के अनुसार 4 दाँतोंवाले 'Mastodontoidea' (Die Mastodonten) कहलाते थे जो इस पृथिवी पर 38 करोड़ वर्ष पूर्व से लेकर 15 करोड़ वर्ष पूर्व के मध्य तक विद्यमान थे । इनके लुप्त हो जाने पर 'Mastodons' नामक दो दाँतोंवाले हाथी आये । इस प्रमाण से भी सिद्ध होता है कि 4 दाँतोंवाले हाथी, जो 15 करोड़ वर्ष पूर्व ही लुप्त हो गये, वे श्रीराम के समय (1,81,49,118 वर्ष पूर्व) अवश्य ही विद्यमान थे।

भगवान् श्रीरामचन्द्र की 1,81,49,118वें जन्मोत्सव पर, **प्रेम से बोलिए आनन्दकन्द भगवान् श्रीरामचन्द्र जी की जय!!!** ■

'Mastodontoidea' (Die Mastodonten) (3.8 करोड़ वर्ष पूर्व से 1.5 करोड़ वर्ष पूर्व तक) श्रीराम के समकालीन

'Mastodons' (1.5 करोड़ वर्ष पूर्व से अबतक)

वाल्मीकीयरामायण के सुन्दरकाण्ड में लंका में पाये जानेवाले 4 दाँतोंवाले हाथियों का उल्लेख है। **'Encarta Encyclopædia'** के अनुसार 4 दाँतोंवाले **'Mastodontoidea' (Die Mastodonten)** कहलाते थे जो इस पृथिवी पर 3.8 करोड़ वर्ष पूर्व से लेकर 1.5 करोड़ वर्ष पूर्व के मध्य तक विद्यमान थे। इनके लुप्त हो जाने पर **'Mastodons'** नामक दो दाँतोंवाले हाथी आये। इस प्रमाण से भी सिद्ध होता है कि 4 दाँतोंवाले हाथी, जो 1.5 करोड़ वर्ष पूर्व ही लुप्त हो गये, वे श्रीराम के समय (1,81,49,118 वर्ष पूर्व) अवश्य ही विद्यमान थे।

शतरंज और चतुरंग

डॉ. ममता सिंह
स्वतन्त्रशोधकर्त्री, पूर्व शोधछात्रा,
वैदिक दर्शन विभाग, संस्कृतविद्या
एवं धर्मविज्ञानसंकाय
काशी हिंदू विश्वविद्यालय

प्राचीन भारत में क्रीड़ा के विविध प्रकार के साधन थे। एक और जहाँ शारीरिक व्यायाम एवं मनोरंजन के लिए, कुश्ती और मल्लयुद्ध, नियुद्ध-जैसे खेल विकसित किए गए, वहीं पर मानसिक व्यायाम एवं मनोरंजन के लिए भी खेलों का विकास किया गया। चौसर, शतरंज, और साँप-सीढ़ी-जैसे कई खेल ऐसे रहे जो एक जगह न केवल बैठकर खेले जा सकते हैं अपितु इनमें अल्प या अधिक मात्रा में मानसिक व्यायाम भी होता है। ये खेल कई तरह की प्रकृति के बना लिए जाते थे, इनसे मनोरंजन तो होता ही था, साथ में इनका दुरुपयोग भी होता था। ऋग्वेद में उल्लिखित कितव सूक्त द्यूतक्रीड़ा के लिए आया है जिसमें जुआ खेलने की निन्दा की गई है और कृषि की प्रशंसा। इसलिए इन खेलों की नैतिकता एवं अनैतिकता के विचार से परे जाकर समाज के मनोरंजन पर विचार करना अधिक प्रासंगिक होगा। मनोरंजन समाज की बहुत बड़ी आवश्यकता है और यह वर्तमान समय में तो बहुत बड़ा उद्योग भी बन चुका है जिसमें लाखों लोगों को रोज़गार भी मिला हुआ है। जिस समाज में मनोरंजन के साधन कम होते हैं, वह तनावग्रस्त होकर विध्वंसात्मक गतिविधियों में संलग्न हो जाता है यद्यपि इसकी अति भी समाज को कमज़ोर बनाती है जिसका संकेत आचार्य कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में किया है। प्रस्तुत लेख में भारत में विकसित शतरंज के जैसे ही एक खेल चतुरंग के ऊपर विवेचन किया जा रहा है। शतरंज और चतुरंग में बहुत साम्य है, लेकिन जो सबसे बड़ा अन्तर है, वह यह है कि शतरंज में पासे का प्रयोग नहीं किया जाता, किन्तु चतुरंग में ऐसा होता था। शेष दोनों खेल थोड़े-बहुत अन्तरों के साथ एक जैसे हैं।

वर्तमान में लोकप्रिय शतरंज का खेल चतुरंग का ही एक विकसित रूप है अथवा चतुरंग का एक प्रकार शतरंज रहा है यह कह पाना तो कठिन है तथापि इस विषय में जो सामग्री हमें प्राप्त होती है वह बहुत रोचक है। यद्यपि चतुरंग एवं शतरंज में बहुत सारे साम्य हैं तथापि वैषम्य भी पाया जाता है जिसे निम्नवत् स्पष्ट किया जा सकता है।

साम्य–

चतुरंग एवं शतरंज– दोनों में हाथी (¸Elephant), घोड़ा (Horse), नौका (Boat) एवं सैनिक (Pawn) की संख्या 4-4 होती है। चतुरंग में जिसे नौका कहते हैं, वही शतरंज में ऊँट (Camel) के नाम से जाना जाता है एवं सैनिक को चतुरंग में वटिक तथा शतरंज में प्यादा कहा जाता है। दोनों के क्रीड़ा पटल (Game Board)में 64 वर्ग होते हैं।

वैषम्य–

चतुरंग में चार पक्ष होते थे– पक्ष, मित्रपक्ष, विपक्ष एवं विपक्ष का मित्रपक्ष। चारों पक्ष के अपने अपने Color होने के कारण चतुरंग के Game Board में चार Color (Red, Green, Yellow & Black) होते थे और गोटियाँ भी इन्हीं चार Color में होती थीं जबकि शतरंज में केवल दो पक्ष होते हैं– पक्ष एवं विपक्ष। अतः उसके Game Board में दो ही Color (Black & White) होते हैं और गोटियाँ भी इन्हीं दो ही Color में होती हैं। चतुरंग में चारों पक्ष गेम बोर्ड की चारों भुजाओं पर स्थित होते हैं जबकि शतरंज में दोनों पक्षों की स्थिति आमने-सामने होती है।
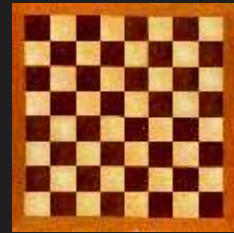
चतुरंग में चार राजा होते हैं जबकि शतरंज में केवल दो ही

> मनोरंजन समाज की बहुत बड़ी आवश्यकता है और यह वर्तमान समय में तो बहुत बड़ा उद्योग भी बन चुका है जिसमें लाखों लोगों को रोज़गार भी मिला हुआ है। जिस समाज में मनोरंजन के साधन कम होते हैं, वह तनावग्रस्त होकर विध्वंसात्मक गतिविधियों में संलग्न हो जाता है यद्यपि इसकी अति भी समाज को कमज़ोर बनाती है जिसका संकेत आचार्य कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में किया है।

राजा होते हैं। चतुरंग में दो अतिरिक्त राजाओं के स्थान पर शतरंज में दो मन्त्री/वज़ीर (Queen) होते हैं। चतुरंग में वज़ीर नहीं होता है। चतुरंग में गोटियों की चाल पासे के अंक के ऊपर निर्भर करती है। पासा फेंकने पर 5 अंक आने पर राजा एवं सैनिक, 4 अंक आने पर हाथी, 3 अंक आने पर घोड़ा एवं 2 अंक आने पर नौका की चाल होती है–

वटिकापञ्चकेराजन्राजाऽप्येवंहिगच्छति।
तुर्येगजस्तृतीयेचचलत्यश्वोद्वयेतरिः ॥

–चतुरंगदीपिका, 12

जबकि शतरंज में गोटियों को चलने के लिए पासे की आवश्यकता नहीं होती है, स्वतन्त्र रूप से गोटियों को चलते हैं।

चतुरंग के अनुसार गोटियों की स्थिति एवं चाल-विषयक निर्देश–

गेम बोर्ड में दाहिने क्रम से पूर्व, दक्षिण, पश्चिम एवं उत्तर में क्रमशः रक्त (Red), हरित (Green), पीत (Yellow) एवं कृष्ण (Black) वर्ण की गोटियों को रखते हैं। राजा की बायीं ओर क्रमशः हाथी, घोड़ा एवं नौका स्थित होते हैं तथा सैनिकों की स्थिति इन चारों के आगे होती है–

अष्टौकोष्ठान्समालिख्यप्रदक्षिणक्रमेणतु।
अरुणं पूर्वतः कृत्वादक्षिणेहरितंबलम् ॥
पार्थ पश्चिमतःपीतमुत्तरेश्यामलंबलम्
राज्ञोवामेगजंकुर्यात्तस्मादश्वंततस्तरिम्।
कुर्यात्कौन्तेयपुरतोयुद्धेपत्तिचतुष्टयम् ॥

–वही, 8-9

राजा एक वर्ग सभी दिशाओं में चलता है। सैनिक एक वर्ग आगे चलते हैं, किन्तु वार करने की स्थिति में ये एक वर्ग आगे की ओर दाहिने अथवा बायीं तरफ वार करते हैं। हाथी चार दिशाओं में जितना रिक्त स्थान मिले, उतना चलता है। घोड़ा चार दिशाओं में तीन वर्ग तिरछा होकर चलता है अर्थात् दो वर्ग चलकर दायीं या बायीं ओर मुड़ जाता है। चारों दिशाओं के कोने में दो वर्ग नौका चलती है–

कोष्ठमेकंविलङ्घ्याथसर्वतोयातिभूपतिः।
अग्रएववटीयातिबलंहन्त्यग्रकोणगम्॥
यथेष्टंकुञ्जरोयातिचतुर्दिक्षुमहीपते।
तिरयक्तुरङ्गमोयातिलङ्घयित्वात्रिकोष्ठकम्।
कोणकोष्ठलयंलङ्घ्यव्रजेन्नौकायुधिष्ठिर॥

–वही, 13-14

चतुरंग के कुछ पारिभाषिक शब्द

सिंहासन– जब किसी पक्ष का राजा अपने मित्र, विपक्ष अथवा विपक्ष के मित्र के राजा के स्थान पर पहुँचने में समर्थ हो जाता है तब इस उपलब्धि को सिंहासन कहते हैं–

अन्यद्राजपदं राजा यदा यातो युधिष्ठिर।
तदा सिंहासनंतस्यभण्यतेनृपसत्तम् ॥

–वही, 42

चतूराजी– जिस पक्ष का राजा अन्य तीनों राजाओं को अपने अधिकार में करने में समर्थ होता है, उसकी चतूराजी संज्ञा होती है–

विद्यमानेनृपेयस्यस्वकीये च नृपत्रयम्।
प्राप्नोति च यदा तस्यचतूराजी तदा भवेत् ॥

–वही, 46

बृहन्नौका– जब अपनी नौका के द्वारा अन्य तीनों पक्ष की नौकाओं को अपने अधिकार में कर लिया जाता है, तब उसे बृहन्नौका कहते हैं–

नौकाचतुष्टयंयत्रक्रियतेयस्यनौकया।
नौकाचतुष्टयंतस्यबृहन्नौकेतिभण्यते ॥

–वही, 71

नौकाकृष्ट– जब किसी पक्ष ने अन्य तीन पक्ष की नौकाओं को अपने अधिकार में कर लिया हो किन्तु उसकी नौका किसी अन्य के अधिकार में हो तब उसे नौकाष्ट कहते हैं–

नौकात्रयं यदा हस्तेअन्यन्नीतञ्चशत्रुणा।
नौकाकृष्टमिदंप्रोक्तंहठान्नौकान्ततोनयेत् ॥

–वही, 71 (2)

काककाष्ठ– जिस पक्ष के पास कोई गोटी शेष न बचे अर्थात् उसकी सभी गोटियाँ अन्य पक्षों के द्वारा उनके अधिकार में कर ली गयी हों, उसकी काककाष्ठ संज्ञा होती है–

हस्तेरङ्गेबलंनास्तिकाककाष्ठं तदा भवेत्।
वदन्तिराक्षसाःसर्वेतस्य न स्तोजयाजयौ॥

–वही, 68

इसी प्रकार कुछ अन्य पारिभाषिक शब्द, जैसे– नृपाकृष्ट, षट्पद आदि भी चतुरंगदीपिका में प्राप्त होते हैं।

यद्यपि इस संक्षिप्त विवेचन से शतरंज के इस विशेष प्रकार– चतुरंग के बारे में विस्तार से नहीं जाना जा सकता, तथापि यह अनुमान लगाया जा सकता है कि भारतीय मनीषा कितनी मनोरंजनप्रिय और विनोदी स्वभाव की रही है। यह आश्चर्य का विषय है कि बहुत सारी बौद्धिक सम्पत्ति, जिसे पश्चिम से भारत आने का भान होता है, प्रायः उसका उद्गम भारतभूमि ही सिद्ध हो जाती है। आज आवश्यकता इसे पहचानकर संरक्षित करने की है। ■

चतुरंग खेलते हुए श्रीकृष्ण एवं राधा का दुर्लभ चित्र

प्रफुल्ल चन्द्र ठाकुर
स्वतंत्र पत्रकार

bāhubali

एक नयी शुरूआत

भारतीय फ़िल्म-इतिहास में एकसाथ ही कई कीर्तिमान स्थापित करनेवाली फ़िल्मों में '**बाहुबली : द बिगिनिंग**' अत्यधिक महत्त्वपूर्ण मानी जा रही है। यह फ़िल्म मूल रूप से तेलुगू-भाषा में निर्मित हुई है। इसके अतिरिक्त फ़िल्म का निर्माण तमिल, हिंदी, मलयालम, फ्रेंच आदि भाषाओं में भी किया गया है। इस फ़िल्म के निर्देशक एस.एस. राजामौली हैं। इन्होंने '**मक्खी**' फ़िल्म का भी निर्देशन किया था। राजामौली अपनी रचनात्मकता का परचम लहराने में सफल हुए हैं। फ़िल्म बाहुबली को सुपरहिट बनाने में इनको अभूतपूर्व सफलता मिली। यह फ़िल्म लोकप्रिय कलाकारों के बिना भी सुपरहिट हो गयी। उल्लेखनीय है कि वर्तमान में फ़िल्म-उद्योग परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। फ़िल्म की सफलता (सुपरहिट) के लिए तीन दिनों की कमाई का आकलन किया जाने लगा। फिर प्रथम दिन के कलेक्शन को फ़िल्म की सफलता का आधार बनाया जाने लगा है। अब फ़िल्मों की सफलता के लिए करोड़-क्लब में शामिल होने की महत्त्वाकांक्षा सामने आई है। सौ करोड़, दो सौ करोड़, तीन सौ करोड़ से अधिक के क्लब में सम्मिलित होने का प्रयास जारी है। पूर्व में फ़िल्मों की सफलता का आधार सिल्वर, गोल्डन और डायमण्ड जुबली मनाना होता था। अब यह सपने जैसा है।

बाहुबली का निर्माण ऐसे वक़्त में हुआ जब लोग चर्चा कर रहे थे कि अब समूचे परिवार के साथ बैठकर फ़िल्म देखना मुश्क़िल है। इस धारणा को खण्डित और ध्वस्त करने में फ़िल्म बाहुबली पूरी तरह सक्षम है। फ़िल्म की कहानी प्राचीन और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य पर आधारित है। फ़िल्म की कहानी में एक अलग भाषा का प्रयोग करना भी अद्भुत है। भारतीय फ़िल्म-इतिहास में किसी फ़िल्म के लिए एक नयी भाषा का निर्माण भी अविस्मरणीय है। यह एक ख़ास रेकार्ड माना जायेगा। फ़िल्म में कालकेय कबीले द्वारा बोली जानेवाली भाषा का नाम 'किलकिली' दिया गया। पटकथाकार में से एक मदन कर्की ने 'किलकिली' भाषा का निर्माण 750 शब्दों और व्याकरण के 40 नियमों के द्वारा किया। इस भाषा को सुनकर दर्शकों को एक अलग प्रकार की अनुभूति होती है।

बाहुबली के हिंदी-संस्करण का निर्माण भी दो भागों में किया गया है। प्रथम भाग की कहानी पौराणिक और ऐतिहासिक घटना पर आधारित है जिसमें बल, पराक्रम, युद्ध और रामांच की भरमार है। इस भाग में शिवा (प्रभास) को महानायक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। शिवा एक वीर और पराक्रमी युवा है जिसमें सैकड़ों हाथियों का बल निहित है। यह महानायक महाभारत के वीर पुरुषों का स्मरण करा देता है। शिवा की वीरता का प्रदर्शन उस समय होता है जब वह युद्ध करता है, सोने की विशालकाय प्रतिमा को अपने हाथों से उठा लेता है और शिवलिंग को उखाड़कर झरने के नीचे स्थापित कर देता है। ये दृश्य मनमोहक एवं प्रभावी हैं। इन दृश्यों में उच्च और आधुनिकतम तकनीक का प्रयोग किया गया है।

फ़िल्म की कथा के अनुसार नायक शिवा बचपन में अपनी माँ से कहानियाँ सुनकर पला-बढ़ा है। उसके गाँव में पहाड़ों के पास एक विशाल झरना है। लोकधारणा के अनुसार वहाँ बुरी ताकतों का वास है। कहानी में फ्लेश बैक का भी सहारा लिया गया है।

फ़िल्म की कहानी का प्रारम्भ प्राचीन नगर महिष्मति से होता है। महारानी के दो पुत्र हैं– राजकुमार अमरेन्द्र बाहुबली और भल्लालदेव। महारानी राज्य का उत्तराधिकारी किसी एक राजकुमार को बनाना चाहती हैं। भल्लालदेव के अत्याचारों से प्रताड़ित होकर अमरेन्द्र बाहुबली की पत्नी अपनी बेटे को नदी में छोड़ देती है। गाँव के एक दम्पति (संगा और उसका पति) बच्चे को बचाकर अपने पुत्र की तरह रखते हैं। यही शिवा झरने पर चढ़ने का अथक प्रयास करता है लेकिन सफल नहीं हो पाता। उसकी माँ पुत्र को खोना नहीं चाहती, लेकिन शिवा की सफलता के लिए स्वामीजी से मिलती है। स्वामीजी बताते हैं कि भगवान् शिव को प्रसन्न करने के लिए विशालकाय शिवलिंग पर 116 बार जलाभिषेक करना होगा। वे ही इस समस्या का निदान कर सकते हैं। यह जानकर शिवा शिवलिंग को अपने कन्धे पर उठाकर झरने के नीचे रख देता है। यह दृश्य बाहुबली के बल-पराक्रम का उत्कृष्ट उदाहरण है। इस घटना के बाद शिवा की गोद में एक मुखौटा गिरता है। मुखौटे को धूल में दबाने पर शिवा वहाँ पर एक सुन्दर लड़की की आकृति बनाता है। उसी छवि की स्मृति के बल पर वह झरने पर चढ़ने में सफल हो जाता है। झरने के ऊपर शिवा की भेंट अवन्तिका नामक सुन्दरी से होती है। अवन्तिका का समूह राजा भल्लालदेव से गुरिल्ला-युद्ध करता रहता है। यह समूह पूर्व रानी देवसेना को कैद से छुड़ाकर सुरक्षित बचाने के लिए सक्रिय है। अवन्तिका का शिवा पर पहले अविश्वास, फिर प्रेम करना भी कथानक का एक सुन्दर टुकड़ा है। शिवा अवन्तिका की मदद करता है। इसी क्रम में वह देवसेना को बचाने महिष्मति नगर में चुपचाप प्रवेश करता है। राजा भल्लालदेव का रक्षक कट्टप्पा शिवा से युद्ध करता है। वह युद्ध रोक देता है; क्योंकि शिवा बाहुबली स्वर्गीय अमरेन्द्र बाहुबली का ही पुत्र है। इस तरह अमरेन्द्र और शिवा के पात्र में अभिनेता प्रभास का डबल रोल है। फ्लेश बैक में अमरेन्द्र बाहुबली एवं भल्लालदेव की शत्रुता का पता चलता है। अमरेन्द्र बाहुबली जनता का प्रिय

'बाहुबली : द बिगिनिंग' फ़िल्म का आधिकारिक पोस्टर

और रक्षक है। वह उदार है तथा सैद्धान्तिक ढंग से युद्ध करता है। इसके विपरीत भल्लालदेव अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए किसी हद तक जा सकता है। जब महिष्मति नगर पर दूसरे राज्य का आक्रमण होता है, तब एक निष्पक्ष महिला शिवगामी ने कहा कि अमरेन्द्र और भल्लालदेव में जो शत्रु राजा का कटा सिर लाएगा, वही नया राजा घोषित होगा। अमरेन्द्र शत्रु राजा को मारता ही, तभी भल्लालदेव दूर से मारनेवाले हथियार से शत्रु राजा को मार देता है तथा युद्ध जीतने का श्रेय स्वयं ले लेता है। घटना स्थिति के अनुसार निष्पक्ष शिवगामी अमरेन्द्र बाहुबली को नया राजा घोषित करती, लेकिन यह कहानी सुनते वक्त शिवा बीच में रोककर कट्टप्पा से अपने पिता अमरेन्द्र के हत्यारे का पता जानना चाहता है। कहानी का क्लाइमैक्स पहुँचने ही वाला है जब कट्टप्पा बताता है कि वह अमरेन्द्र का हत्यारा है। यहाँ पर ही कहानी समाप्त हो जाती है। शिवा बाहुबली का महिष्मति नगर पहुँचना और वहाँ उसे 'बाहुबली' कहकर पुकारा जाना तथा उसके सम्मान में लोगों का झुकना-जैसा दृश्य फ़िल्म को रोचक बना देता है। बाहुबली के प्रथम भाग में ऐतिहासिक घटनाक्रम में शिवा को महानायक के रूप में पेश करना फ़िल्मकार की सफलता है। युद्ध-दृश्य में कंप्यूटर द्वारा पैदा किया गया और नये अन्दाज़ में प्रस्तुत स्पेशल इफेक्ट्स फ़िल्म के तकनीकी पहलू को ऊँचाइयाँ प्रदान करते हैं। एक-एक पात्र पर परिश्रम करना और झरने, प्राकृतिक दृश्य, युद्ध का दृश्य-जैसे कार्यों से फ़िल्मकार दर्शकों को प्रभावित करने में सफल सिद्ध हुए हैं।

फ़िल्म में अभिनेता प्रभास अपनी भूमिका के लिए लम्बे समय तक याद किए जायेंगे। राणा डग्गुवती ने भल्लालदेव की भूमिका में प्रभाव छोड़ा है, भले ही भूमिका निगेटिव थी। अनुष्का शेट्टी (देवसेना), तमन्ना भाटिया (अवन्तिका), रम्या कृष्णन (शिवगामी), सत्यराज (कट्टप्पा)-जैसे (अभिनेता-अभिनेत्रियों) कलाकारों ने अपनी कला प्रदर्शित करने में सफलता पायी। शिवा का देवसेना को सुरक्षित बचा लेना, कट्टप्पा का शिवा को अतीत की जानकारी देना, खून-खराबेवाले हिंसक दृश्य से अलग युद्ध-दृश्य प्रस्तुत करना फ़िल्म को ख़ास बनाता है।

सिनेमा समाज में गहरा प्रभाव छोड़नेवाला एक सशक्त माध्यम है। फ़िल्म के अनुसार इसका सकारात्मक और नकारात्मक– दोनों प्रभाव पड़ सकता है। यहीं पर फ़िल्मकार का दायित्व सिद्ध होता है कि वह समाज में कैसा सन्देश देना चाहता है। **बाहुबली** में प्राचीन शासक का शासन, शासन पर आसीन होना, घटनाक्रम में अनुसार युद्ध, प्रेम-रोमांस, गीत-संगीत आदि की प्रस्तुति की गई है। फ़िल्म को शिवा की वीरता, भल्लालदेव का अन्त, शिवा-अवन्तिका के प्रेम-प्रसंग-जैसे टुकड़ों और कथानक को दूसरे भाग में दिखाने के लिए रखा गया है– ऐसा अनुमान लगाया जा सकता है। फ़िल्म की शूटिंग देश-विदेश में की गई है। फ़िल्म का छायांकन लाज़वाब है। छायाकार के.के. सेंथिल कुमार ने अपनी प्रतिभा का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करके फ़िल्म की सफलता में ज़बर्दस्त योगदान दिया है।

बाहुबली का दूसरा भाग '**बाहुबली-2**' के नाम से निर्मित हुआ है। इस भाग में पुराने और नये कथानक का सामञ्जस्य किया गया है। कहानी का समय मध्यकाल का है। राजस्थान के उदयगढ़ के सियासत की कहानी है। इस भाग में भी फ्लेश बैक का प्रयोग किया गया है। भारतीय सनातन परम्परा में जन्म, मृत्यु, पुनर्जन्म, मोक्ष आदि निहित हैं। इस परिप्रेक्ष्य में '**बाहुबली-2**' में पुनर्जन्म का चित्रण किया गया है। यह घटना के चार सौ साल बाद की कहानी है। शहरी जीवन में युवा शिवा और इंदु का प्रेम-प्रसंग है। इंदु का मंगेतर रणदीप है। रणदीप इंदु और शिवा के प्रेम के कारण हत्याएँ करता है। यहाँ तक कि इंदु के पिता वक़ील प्रियरंजन की भी हत्या कर देता है और इंदु की नज़र में शिवा को अपराधी बना देता है, लेकिन

बाहुबली की शूटिंग के दौरान छायाकार के.के. सेंथिल कुमार (हैट में) एवं निर्देशक राजामौली

राजामौली अपनी रचनात्मकता का परचम लहराने में सफल हुए हैं। ...एक-एक पात्र पर परिश्रम करना और झरने, प्राकृतिक दृश्य, युद्ध का दृश्य-जैसे कार्यों से फ़िल्मकार दर्शकों को प्रभावित करने में सफल सिद्ध हुए हैं।... फ़िल्म का छायांकन लाज़वाब है। छायाकार के.के. सेंथिल कुमार ने अपनी प्रतिभा का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करके फ़िल्म की सफलता में ज़बर्दस्त योगदान दिया है।

शिवा इंदु को पाने में सफल होता है।

शिवा चार सौ साल पहले उदयगढ़ के कबीले में पैदा होनेवाला कालभैरव था। राजकुमारी मैत्रेया उसकी वीरता से प्रभावित होकर उससे प्रेम करती है। राजबन्धन के कारण वह प्रणय-निवेदन स्वीकार नहीं कर पाता। उदयगढ़ का सेनापति कामवासना से राजकुमारी को पाना चाहता है। कई राज्यों पर कब्ज़ा करनेवाला शेर ख़ाँ उदयगढ़ पर हमला करता है। सेनापति विश्वासघात कर किले का दरवाजा खोल देता है। राजकुमारी द्वारा पूजा की तैयारी की जाती है। भैरव पर्वत पर सप्तरंगों से अभिषेक कर भगवान् को खुश करने के लिए नगाड़ा-वादन शुरू होता है। राजगुरु ने निर्देश दिया कि आठ ग्रहों के मिलन से पूर्व पूजा होने पर सफलता मिलेगी। शेर ख़ाँ के सहयोगी मानसिंह ने उसे बताया कि कबीले के वीर सौ लोगों को मारकर पैदा लेते हैं। शेर ख़ाँ अविश्वास के बाद कालभैरव द्वारा अपने सौ सैनिकों के मारने के बाद उसकी वीरता का प्रशंसक हो जाता है। वह उसे मित्र बनाता है, लेकिन सेनापति को दिए गए वादों के कारण विवश हो जाता है। सेनापति राजकुमारी की हत्या कर देता है, लेकिन कालभैरव उसे मार देता है। राजकुमारी और कालभैरव खाई में गिर जाते हैं, लेकिन दोनों के हाथ का स्पर्श का असर कालभैरव पर अगले जन्म तक रहता है। शेर ख़ाँ कालभैरव के पुनर्जन्म की कामना करता है। इस फ्लैश बैक में युद्ध, कालभैरव की वीरता, कालभैरव के द्वारा सेनापति को पराजित करना, रेगिस्तानी दलदल से बचना, उसके घोड़े चेतक का कारनामा, राजपुरोहित द्वारा देवता की पूजा करवाना, राजपुरोहित की हत्या, सेनापति द्वारा अघोरी से तंत्रविद्या द्वारा जानकारी प्राप्त करना, पुनर्जन्म की घटना बताना आदि को दिखाया गया है। अघोरी बताता है कि सेनापति और शिव को प्रकृति पहचान लेगी– दोनों के टकराने पर। प्रेम पाने के लिए दूसरे प्रेमी को मारना होगा। इस जन्म के बाद शिवा और इंदु का प्रेम फल पाता है। अलग-अलग पात्र पुनर्जन्म के बाद अलग-अलग रूपों में आते हैं।

कुल मिलाकर '**बाहुबली : द बिगिनिंग**' और '**बाहुबली-2**' टुकड़ों-टुकड़ों से जुड़ी एक ऐसी फ़िल्म है जिसे फ़िल्मकार ने प्राचीन, मध्य और आधुनिक काल में जन्म-पुनर्जन्म के द्वारा प्रस्तुत किया है। इस माध्यम से फ़िल्मकार ने भारतीय चिन्तन और प्राचीन ज्योतिष तथा अघोर तंत्रविद्या को भी परोसा है। सुप्रसिद्ध फ़िल्मकार सत्यजित रे के अनुसार फ़िल्म छवि है, फ़िल्म शब्द है, फ़िल्म गति है, फ़िल्म नाटक है, फ़िल्म कहानी है, फ़िल्म संगीत है, फ़िल्म में मुश्किल से एक मिनट का टुकड़ा भी इन बातों का एक साक्ष्य दिखा सकता है।

फ़िल्म '**बाहुबली : द बिगिनिंग**' से पूर्व '**थ्री इडियट्स**', '**एंथीरन**', '**बजरंगी भाईजान**' आदि ने व्यावसायिक दृष्टि से कमाई कर लोगों को चौंकाया था। 250 करोड़ की लागत से निर्मित फ़िल्म '**बाहुबली**' की सफलता से पता चलता है कि बिगड़ते माहौल में एक अलग तरह की फ़िल्म परोसना भी लोगों की सुरुचि-वृद्धि में सहायक सिद्ध हो सकता है। सिनेमा को उद्योग का दर्ज़ा मिलने पर बड़े बज़ट की फ़िल्मों की संख्या बढ़ने लगी है। फ़िल्मों के प्रासंगिक होने पर ही उसके बेहतर और कालजयी होने की उम्मीद रहती है। मानवीय जीवन-मूल्यों, आचरण, देश के आदर्श, यथार्थ और कल्पना के सामञ्जस्य की प्रस्तुति तथा तकनीक के साथ लोकहित और मनोरंजन के लिए करना आज फ़िल्मकार के लिए चुनौतीपूर्ण कार्य है। उसके सामने यह भी बड़ी चुनौती है कि बड़े बज़ट के विपरीत लघु बज़ट में भी अच्छी फ़िल्मों का निर्माण करना चाहिये। '**बाहुबली : द बिगिनिंग**' की सफलता का आधार दर्शकों द्वारा उसे साफ़-सुथरी फ़िल्म मानने में भी है। वर्तमान में सिनेमा पूँजी का खेल बन गया है। दर्शक अपने सामने परोसी गई फ़िल्म देखने के लिए मज़बूर हैं। बड़ी लागत के बावजूद फ़िल्म '**बाहुबली : द बिगिनिंग**' फ़िल्म-उद्योग के परिवर्तन के दौर में सिनेमा को, उसकी अच्छाई को एवं उसकी गरिमा को एक नयी सोच, नये चिन्तन और सामूहिक प्रयास के लिए प्रेरित करती है। यह फ़िल्म सिनेमा की ताक़त को पहचानकर उसको समृद्ध बनाने का भी सन्देश देती है। यह फ़िल्म की सफलता और सार्थकता– दोनों है। ■